

गुजरात विद्यापीठ प्रकाशनी-पु० ५६

प्राचीन हिन्दी कविता

संपादक
गिरिराजकिशोर
अम्बाशकर नागर



गुजरात विद्यापीठ
अहमदाबाद-१४

मुद्रक

जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद - १४

प्रकाशक

मगनभाई प्रभुदास देसाई
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद - १४

सर्वाधिकार गुजरात विद्यापीठके अधीन

पहली बार, प्रति १२००

दुमरी बार प्रति १०००

प्रकाशकका निवेदन

१९ वीं सदीके प्रारंभ तक हिन्दी करीब करीब सारे देशकी राष्ट्रभाषा ही समझी जाती थी। इसका प्रचार सारे देशमें था। इसका श्रेय साधुसंतोंके है। ये लोग सार देशमें घूमते थे और अपने पदा द्वारा जनतामें ज्ञान फैलाते थे। उस समय साधुसंतोंकी भाषा हिन्दी ही समझी जाती थी, और आज भी असा ही है। इससे बहुतसे अहिन्दीभाषी साधुसंतोंने भी अपनी रचनायें हिन्दीमें की हैं। मगर अंग्रेजी राज्यकालमें अंग्रेजीके प्रचारसे हिन्दीकी राष्ट्रभाषाकी हैसियतको धक्का लगा, और दूसरी लिपिमें भी उसकी लिखावट गुरु हानेके कारण उसकी उदू शली भी शुरू हुई। इससे राष्ट्रभाषा हिन्दीकी पुरानी विशालता जाती रही और हिन्दी उर्दू दोनोंमें सकुचितता और अलगपन-सा आ गया। जो देशके लागाकी एक सामान्य भाषा थी वह इस तरह छोटी एक प्रदेशभाषा बन गई। आजादीके जगने जमानेमें गांधीजीकी काशिशसे इस गलतीकी तरफ हमारा ध्यान गया और हिन्दी उर्दूको उनके इस सकुचित दायरेसे निकालकर देशके एक राष्ट्रभाषा बनानेका सांचा। हजारों भाईबहन इस भाषाको सीखने लगे। इसके फलस्वरूप हमारे विधानने तय किया कि हमारे देशके सब भाषाभाषी लाग मिलकर एक विशाल भाषा बनाकर अब अपने लिए राष्ट्रभाषा पावेंगे। इसके लिए हिन्दी उर्दूके साथ हमारी दूसरी प्रदेश-भाषायें भी इस व्यापक प्रयत्नकी मदद करेगी।

यह मग्नह ऐसी राष्ट्रभाषा हिन्दीके अभ्यासके खयालसे तयार किया गया है।

प्राचीन कवितासे यह मतलब ममज्ञा गया है कि अंग्रेजी राज्य स्थापित होनेके पहले समय तककी कविता। जस ऊपर कहा है तब हिन्दी देशकी राष्ट्रभाषा थी। अनेक अहिन्दी साधुमत भी इस भाषामें अपने भजन लिखत थे। ये भी राष्ट्रभाषा हिन्दीका एक पढ़नेके काबिल खजाना है। इस दृष्टिस इसमें गुजराती और मराठी सतके लिखे हिन्दी पदोको भी स्थान दिया गया है। यह इसकी एक ध्यान-पात्र विशेषता है। आशा है यह सग्रह राष्ट्रभाषाके प्रचारमें मदद रूप होगा। शाला महाशालाआमें राष्ट्रभाषा हिन्दीका अम्मान अब शुद्ध हो रहा है उसमें भी यह सग्रह पाठपुस्तकके तीर पर काम दगा।

इस सग्रहके तैयार करनेमें कई हिन्दीप्रेमी प्रचारक भाई-बहनाने मदद की है उन सबका मैं आभार मानता हूँ।

१०-४-५४

सपादनके बारेमें.

११ वीं सदीके आसपास अपभ्रंश भाषाओसे प्रातीय भाषाआका आरम्भ हुआ। हिन्दीकी शुरुआत भी इसी समय हुई। तबसे लेकर १९ वीं सदीके मध्यके लगभग प्राचीन हिन्दी कविताका समय समझा जाता है कि जबसे खड़ी बोलीमें कविता लिखी जाने लगी। इस लम्बे अर्सेमें हिन्दी कविता भाषा और भावोकी दृष्टिसे बड़ी विविध रही।

इस सग्रहमें कवियाको हमने ऐतिहासिक क्रमसे लिया है। इससे भाषाके विकासका खयाल पाठकको जा जायेगा कि किस तरहस आदिकालकी अपभ्रंशके पुटकी हिन्दी धीरे धीरे मँजती गई और मुसलमानोंके हिन्दमें बस जानेसे अरबी फारसीका असर उस पर पड़ता गया, और त्रज काव्यकी भाषा बन गई। बस कबीर, नानक और दादू आदि सतोंने सधुक्खड़ी भाषामें और जायसी और तुल्सी आदि कवियाने अवधीमें भी रचनार्ये की। जायसी और कुछ फारसी पड़े लिखे कवियाने ता हिंदी भाषाको फारसी लिपिमें भी लिखना शुरू कर दिया।

यह बात तो भाषाके संबन्धकी रही। भाषाके खयालसे प्राचीन कवितामें खूब विविधता है। मगर मुख्यतः वीर, भक्ति और श्रृंगार रसकी रचनार्ये ही इसमें हुई, और जिस समय जिस रसकी रचनाआकी अधिकता रही वह समय उस रसके नामसे प्रसिद्ध हो गया।

यह सग्रह राष्ट्रभाषाके अभ्यासके खयालसे तैयार किया गया है। कवियों और उनकी रचनाओके चुनावमें यह बात ध्यानमें रखी गई है कि ऐसे कवियों और काव्योंको लिया जाय कि जा अपना असर समाज पर छाड़ गये ह। मगर सबका इस छोटेसे सग्रहमें

समावेश करना मुमकिन नहीं रहा, तो भी मग्नहके अतमें 'कविता-कुज' में कुछ मशहूर कवियोंकी एक एक दो दो रचनायें बानगीके तौर पर ली गई हैं जिससे उनका परिचय हा और पाठक उनको पढ़नेके लिए उत्सुक हा। हरएक कविकी बहुत सक्षेपमें जीवनी दी गई है और उमकी प्राप्त मशहूर रचनाआके नाम दिये गये हैं, जिससे पाठकाका अभ्यासमें मदद मिले।

बहुतसे अहिंदी भाषी सताने हिन्दीमें पद रचे हैं और राष्ट्रभाषा हिन्दीका समृद्ध किया है। ऐसे सनाकी रचनायें भी इस संग्रहमें ली गई हैं।

पुरानी हिंदी और आजकलकी हिन्दीमें काफी अंतर है और बहुतसे शब्दकोशोंमें पुरानी हिन्दीके शब्द नहीं मिलते। पाठकाकी इन शब्दकोशको खयालमें रखकर मग्नहके अतमें शब्दोंके अर्थ दिये गये हैं।

इस मग्नहको भाषाके अभ्यासकी दृष्टिसे ज्यादासे ज्यादा उपयोगी बनानेकी कागिश की गई है। अगर इसकी उपयोगिता बनानेके सप्रथम पाठक सुझाव पेश करगे तो हम उनके आभारी हागे।

गूजरान विद्यापीठ

अहमदाबाद

ता० १०-४- ५४

गिरिराजकिशोर

अम्बाशङ्कर नागर

अनुक्रमणिका

क्रम	विषय	पृष्ठ
	प्रकाशकका निवेदन	३
	संपादनक बारेमें	५
१	चदबरदाई	१
२	अमीर खुसरो	३
३	विद्यापति	६
४	कबीर	८
५	रैदास	१४
६	गुरु नानक	१६
७	दादू दयाल	१८
८	मलूकदास	२१
९	जायसी	२३
१०	गोस्वामी तुलसीदास	२७
११	सूरदास	३५
१२	मीराबाई	४०
१३	नन्ददास	४६
१४	रसखान	४८
१५	रहीम	५१
१६	केशवदास	५५
१७	बिहारी	६०
१८	भूपण	६४
१९	नामदेव	६७
२०	अखा	६९
२१	मनाहरदास	७१
२२	दयाराम	७३
२३	कविता-कुज	७६
	कठिन शब्दाथ	८२

चदवरदाई

चदवरदाई हिन्दीके आदि कवि माने जात है। कहा जाता है कि इनका और पृथ्वीराजका जन्म एक ही दिन हुआ और मृत्यु भी एक ही दिन हुई। ये पृथ्वीराजके राजकवि होनेके साथ ही साथ उनके मित्र और सामन्त भी थे। ये अनेको विद्याओं और भाषाओंके महान् पंडित थे। इनका रचना-काल ई० सन् १२०० के आसपास माना जाता है। इस महाकविने पृथ्वीराजके वणनमें अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 'पृथ्वीराज रासो' लिखा है।

'रासो' बहुत बड़ा महाकाव्य है। इसमें पृथ्वीराजके जन्मसे लेकर मृत्यु तककी सब घटनाओंका वणन विस्तारसे किया गया है। जैसे सस्कृतके कवि बाणभट्टकी 'कादम्बरी' का अंतिम भाग उसके पुत्रने पूरा किया उसी प्रकार रासोका अंतिम भाग चदके पुत्र जल्हण द्वारा पूरा किया गया है।

'रासो' की भाषा हमारे लिए कठिन है। यह उस समयकी भाषा है जब अपभ्रंशका अंत हो रहा था और हिन्दी तथा दूसरी प्राचीन भाषाएँ अपना रूप धारण कर रही थीं। 'रामा' में अरबी और फारसी शब्दोंका भी उपयोग हुआ है। इसमें मालूम होता है कि चदके समय तक हिन्दुओं और मुसलमानोंके काफी मेलजोल हुआ था कि जिसके कारण मुसलमानोंकी भाषाका असर हिन्दी पर पड़ा।

सजमरायका आत्मत्याग

[नीचेकी कवितामें आल्हा और पृथ्वीराजके युद्धमें पृथ्वीराजके मूर्च्छित हाने पर गिद्धनीका उसकी आख निकालनेका और युद्ध-भूमिमें घायल गिरे हुए सजमरायका उसे अपना मांस देकर राजाका बचानेका वणन है ।]

कवित्त

लोह लागि चहुँवान परे मूरछा ह्व घरतिय ।
उड गोघनि बठिक चूञ्च वाहति विरित्तिय ॥
देख्यो सजमराय नृपति दग दाढ़ति पछिन ।
अपने तनकौ मास काटि भखु दियो ततच्छिन ॥
अपन सुनयन देख्यो नृपति अत सम ध्रम पल्लियब ।
आये बिवान बकुठके देह सहत घरि चल्लियब ॥

दूहा

गोघनिको पल भखु दियो, नृपके नन बचाय ।
देह हँसत बँकुठ कौ, पहुँच्यो सजमराय ॥

(महावा-सङ्घसे)

पद्मावतीका सौंदर्य

[रासाके पद्मावती-समयमें पृथ्वीराज जीर पद्मावतीके विवाहका वणन है । पद्मावती समुद्रशिखरके राजा पद्मसेनकी कन्या थी ।]

कुट्टिल केस सुदेस, पौहप रच्चियत पिक्कसद ।
कमल गद्य दय सध, हस गति चलत मद मद ॥
सेत बस्त्र सोह सरीर, नख स्वाति बुद जस ।
भमर भँवहि भुत्लहि सुभाव, मकरद वास रस ॥
नन निरखि सुख पाय मुक, यह सदिन मूरति रच्चिय ।
उमा प्रसाद हर हेरियत, मिलहि राज प्रयिराज जिय ॥

(पद्मावती-समयसे)

अमीर खुसरो

'हिन्दी शब्दके जन्मदाता और सडीबोलीके प्रथम कवि खुसरोका जन्म १२५६ ई० में हुआ और मृत्यु १३२५ ई० में हुई। इन्होंने अपने जीवनकालमें ११ बादशाहोंका दिल्लीके तख्त पर बठत देखा, जिनमें से ये मातके दरवारमें रहे। कहा जाता है कि इन्होंने ९४ ग्रंथ लिखे, मगर मिलते हैं केवल २२।

खुसरो काव्य, गायन और वादनके माने हुए उस्ताद थे। ये बड़े मिलनसार, रसिक विनोदी और सभाचतुर व्यक्ति थे। अरबी, फारसी और देश भाषाओंके बड़े विद्वान थे पर इन्होंने लोगोंके हितके लिए बालचालकी साधारण भाषामें ही कविता की। खुसरोकी भाषाका ढाँचा त्रजवा है, पर उममें इन्होंने अरबी फारसीके प्रचलित शब्दोंका प्रयोग बड़ी सुन्दरता और सावधानीसे किया है। इसमें हिन्दीमें एक अजीब प्रकारका लुत्फ पैदा हो गया।

इनकी पहेलिया, मुकरियाँ, सुखना, दो सुखना, और गीत लोक-शिक्षाकी दृष्टिसे बड़े महत्त्वकी रचनायें ह। इस समयमें हिन्दू-मुसलमान दोनों एक दूसरेकी भाषा सीखने लगे थे। इस काममें लोगोंको मदद मिले, इस विचारसे इन्होंने 'खालिक बारी' नामका एक शब्दकोश लिखा। इसमें फारसी तुर्की और अरबी शब्दोंके हिन्दी पर्याय बड़ी कुशलतासे दिये गये हैं। यह काश लोगोंके लिए बड़ा मददगार साबित हुआ।

खालिक बारी

रसूल पैगम्बर जान बसोठ। धार दोस्त बोले जा ईठ ॥
मद मनस जन है इस्तरी। कहत अकाल बबा ह मरी ॥

बिआ बिरादर, आओ रे भाई । बिनशीं भादर, बठ री भाई ॥
 तुरा बगुपतम मैं तुझ कह्या । कुजा बिमादी, तू कित रह्या ॥
 राह तरीक सबील पहचान । अय तेहुका भारग जान ॥

पहेलियाँ

एक पुरुष बहुत गुन भरा, लेटा जागे सोवे खडा ।
 उलटा होकर डाले बेल, यह देखो करतारका खेल ॥

(चरखा)

श्याम धरन और दात अनेक, लचकत जैसे नारी ।
 दोनो हायसे खुसरो खोंचे, और कहे तू आरी ॥

(आरी)

बाला या जब सबको भाया, बढा हुआ कछु काम न आया ।
 खुसरो यह दिया उसका नाव, अय करो या छोडो गाँव ॥

(दिया)

एक नार तरबरसे उतरी मा सो जनम न पायो ।
 बापको नाँव जो वासो पूछयो आघो नाँव बतायो ॥
 आघो नाव बतायो खुसरो कौन देसकी बोली ।
 याको नाँव जो पूछयो मने अपने नाव न बोली ॥

(निबोली)

बोसोका सिर काट लिया । ना मारा ना खून किया ॥

(नाखून)

फारसी बोली आई ना । तुकीं दूड़ी पाई ना ॥
 हिंदी बोली आरसी आये । मुह देखे जो उसे बताये ॥

(आरसी)

दानाई से दाँत उस प लगाता नहीं कोई ।
 सब उसको भुनाते हैं प खाता नहीं कोई ॥

(रुपया)

श्याम वरन पीताम्बर काँधे, मुरलीधर नहीं होय ।
बिन मुरली वह नाद करत ह, बिरला बूध कोय ॥

(भौरा)

मुकरियाँ

वह आवे तब शाबी होय । उस बिन दूजा और न कोय ॥
मीठे लग वाक बोल । ऐ सखि साजन, ना सखी डोल ॥
जब भाँगू तब जल भर लावे । मेरे मनकी तपन बुझावे ॥
मनका भारा तनका छोटा । ऐ सखी साजन, ना सखी लोटा ॥
जब मोरे मंदिरमें आवे । सोते मुझको आन जगावे ।
पड़त फिरत वह बिरहके अच्छर । ऐ सखी साजन, ना सखी मच्छर ॥
सारि रन मोरे सग जागा । भोर भई तब बिछुडन लागा ।
धावे बिछुडत फाटे हिया । ऐ सखी साजन, ना सखी दिया ॥

सुखना

पान सडा क्यो? घोडा अडा क्यो? —फेरा न था ।
जूता क्यो न पहना? सबोसा क्यो न खाया? —तला न था ।
अनार क्यो न चखला? यज्ञीर क्यो न रक्खा? —दाना न था ।
सितार क्यो न बजा? औरत क्यो न नहाई? —परदा न था ।
पडित क्यो पियासा? गदहा क्यो उदासा? —लोटा न था ।

दो सुखना

सौदागर राचे मी बायद—बूचे को क्या चाहिये? दो कान ।
तिशना राचे मी बायद—मिलाप को क्या चाहिये? चाह ।
गिकार बचे मी बायद कद—कूबते मगजको क्या चाहिये? बादाम ।

गीत

अम्मा, मेरे बाबाको भेजो जी, कि सावन आया ।
घंटी, तेरा बाबा तो बुडडा रो, कि सावन आया ॥

अम्मा, मेरे भाई को भजो जी, कि सावन आया ।
 बेटो, तेरा भाई तो वाला री, कि सावन आया ॥
 अम्मा, मेरे मामूको भेजो जी, कि सावन आया ।
 बेटो, तेरा मामू तो वांका री, कि सावन आया ॥

दोहा

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस ।
 चल खुसरो घर आपने, रन भई चहुँ देस ॥

३

विद्यापति

मथिल-कोकिल विद्यापति ईसाकी पंद्रहवीं शताब्दीके शुरूमें हुए ।
 इन्होंने राधा और कृष्णके सम्बन्धमें पूर्वी हिन्दीमें बड़े ही अनठे श्रृंगारिक
 पद लिखे ह । विद्यापतिने पूर्वी अपभ्रंशमें भी कुछ रचनाएँ की ह ।
 तिरहुतके राजा कीर्तिसिंहकी प्रशंसामें लिखी गई 'कीर्तिलता' और 'कीर्ति
 पताका' ऐसी ही सस्कृत और प्राकृत मिश्रित मथिलीकी रचनाएँ ह ।
 कीर्तिलता में अपनी भाषाके प्रति कविने स्वयं कहा ह —

देसिल बअना सबजन मिट्टा ।

त तैसन जम्पआ अवहट्टा ॥

(देशी भाषा सब लागोको मीठी लगती है यही जानकर मने
 अवहट्ट भाषामें रचना की ह ।)

वगभाषा भाषी इन्हें अपना आदि कवि और वगभाषाका प्रवतक
 कहने है । हिन्दीवाले इन्हें पुरानी हिन्दीकी पूर्वी शाखाका कवि मानते
 है । और मथिल भाषा भाषी इन पर अपना ही अधिकार जमाने ह ।
 इसमें विद्यापतिकी भाषाकी विविधता और लोकप्रियताका पता
 चलना ह ।

६

(१)

सरसिज बिनु सर

सर बिनु सरसिज

की सरसिज बिनु सूरे ।

जीवन बिनु तन

तनु बिनु जीवन

की जीवन पिय दूरे ।

सखि हे मोर बड दब विरोधी ॥

(२)

माधव, हम परिनाम निरासा ।

तुहु जगत्तारन दीन दयामय अतए तोहर बिसवासा ॥

आप जनम हम नींद गमायनु जरा सिसु कत दिन गेला ।

निधुवन रमनि रभस रग मातनु तोहे भजब कओन बेला ॥

कत चतुरानन मरि मरि जाओत न तुअ आदि अवसाना ।

तोहे जनमि पुन तोहे समाओत सागरि लहर समाना ॥

भनइ विद्यापति सौंय समन भय तुअ बिनु गति नहीं आरा ।

आदि अनादि नाय कहाओसि अन्न तारन भार तोहारा ॥

(३)

ऐ हरि, बंदीं तुअ पद नाय ।

तुअ पद परिहरि पाप-ययोनिधि

पारक कओन उपाय ॥

जावत जनम नहि तुअ पद सेविनु

जुबतो मति मयें भेलि ।

अमत तजि हलाहल किए पीअल

सम्पद अपदहि भेलि ॥

भनइ विद्यापति नेह मने गनि
 कहल कि बाढब काजे ।
 साक्षफ बेरि सेवकाई मंगइत
 हेरइत तुअपद लाजे ॥

४

कबीर

इनके जन्मके सम्बन्धमें अनेका कथाएँ प्रचलित हैं। मगर पता यह चलता है कि इनका जन्म हिन्दू घरानेमें और लालन-पालन मुसलमान परिवारमें हुआ। दोनो ही जातियोंके धार्मिक सस्कारोकी छाप इनके काव्यमें साफ दिखाई देती है। इनका जन्म सन् १४०० में हुआ और मृत्यु १५१९ में हुई।

कबीरने एक ओर रामानन्दजीसे दीक्षा ली तो दूसरी ओर शेख तकी साहबका भी असर इन पर पड़ा। कबीर पढ़े लिखे नहीं थे पर सत्संग और सारे देश में घूमनेसे इनके चान और भाषाका भंडार काफी समृद्ध हो गया था। इन्होंने अपने समयकी माँगको अच्छी तरह समझा था और अनुभव किया था कि हिन्दू और मुसलमानोंके आपसी झगडोका मुख्य कारण धर्मभेद ही है। यह समझकर इन्होंने एक सामान्य धर्म और भक्तिका माग हिन्दुओं और मुसलमानोंके लिए खोला, जिसमें न ऊँच-नीचका भेद था न जात-पातका। इन्होंने उस समयके सभी धर्मों और उपासना पद्धतियोंका समन्वय अपने धर्ममें किया।

कबीर बड़े ही अक्लड, फक्कड और मनमौजी सत थे। इन्होंने हिन्दुओं और मुसलमानोंको उनकी कुरीतियोंके लिए खूब फटकारा है। हिन्दुओंके श्राद्ध, तीर्थ और मूर्तिपूजाकी जहाँ इन्होंने हँसी उड़ाई है वहाँ मुसलमानोंके राजा, नमाज, और हजकी भी इन्होंने कड़ी आलोचना की है।

कबीरकी भाषा सघुक्कडो भाषा है, जिसमें अरबी, फारसी, राजस्थानी, पंजाबी, अवधी, पूर्वी हिन्दी और ब्रजके शब्दाका अनूठा मिश्रण देखनेको मिलता है। व्याकरण, पिंगल और अलकार शास्त्रकी भलाके बावजूद कबीरकी वाणीमें उनकी प्रतिभाका अनोखा चमत्कार दिखलाई पडता ह।

साखी

(१)

सात समदकी मसि करौं, लेखनि सब बनराइ ।
धरती सब कागद करौं, हरि-गुण लिख्या न जाइ ॥

(२)

सो साईं तनमें बसे, ज्यू पुहपनमें बास ।
कस्तूरीके मिरग ज्यू, फिरि फिरि सूघ घास ॥

(३)

गुह गोबिंद दोनू खडे, काके लागू पाँय ।
बलिहारी गुह आपने, गोबिंद दिया बताय ॥

(४)

पायो पढ़ि पढ़ि जग मुजा, पडित हुआ न कोय ।
ढाई अच्छर प्रेमका, पढ़ सो पडित होय ॥

(५)

हँसि हँसि कत न पाइये, जिन पाया तिन रोय ।
जे हाँसे ही हरि मिल, नहीं दुहागिनि कोय ॥

(६)

सास पडी दिन आँयव्यो, चकई दोनी रोय ।
धल चकवा वा बेसमें, रैन कदे नाँह होय ॥

(१५)

पान शडता यू कह, सुनि तरवर बनराइ ।
अबके बिछुडे ना मिल, दूरि पडगे जाइ ॥

(१६)

काची काया मन अधिर, यिर पिर काम करत ।
ज्यू-ज्यू नर निघडक फिर, त्पूं-त्पू काल हँसत ॥

(१७)

चलती चक्की देखि करि, दिया कबीरा रोइ ।
वो पाटनके बीच में, बाकी बचा न कोइ ॥

(१८)

माया बीपक नर पतग, भ्रमि भ्रमि इय पडत ।
कह कबीर मुह ध्यान त, एक-आय उबरत ॥

(१९)

कबीर ऐसा बीज बो, धारह मास फलत ।
सीतल छाया, गहर फल, पक्षी केलि करत ॥

(२०)

निद्रक निपरे राखिये, आंगन कुटी छवाय ।
बिनु पानी साबुन बिना, निमल कर सुभाय ॥

(२१)

मूड मुडाये हरि मिल, सब कोइ लेइ मुडाय ।
बार धार के मडते, भेड न बकुठ जाय ॥

(२२)

दिन भर रोजा रहत ह, राति हनत ह गाय ।
मह तो खून यह बढगो, कसे खुसी खुदाय ॥

(२३)

इक दिन ऐसा होयगा, कोउ काहूका नाहि ।
घरकी नारी को कह, तनकी नारी जाहि ॥

(२४)

लाली मेरे लालकी, जित देखो तित लाल ।
लाली देखन म गई, हो गई म भी लाल ॥

(२५)

जलमें कुभ कुभमें जल ह, बाहर भीतर पानी ।
फूटा कुभ जल जलहि समाना, यह तत कयो गियानी ॥

सबद

(१)

पानी बिच मीन पिपासी ।
मोहि मुनि-मुनि आवत हाँसी ॥

आतम ग्यान बिना सब सूना, क्या मयूरा क्या कासी ।
घरमें वस्तु धरी नहि सूझे, बाहर खोजन जासी ॥
झिगकी नाभि माहि कस्तूरी, बन बन फिरत उदासी ।
कहत कबीर सुनी भाई साधो सहज मिल अबिनासी ॥

(२)

मन फूला फूला फिर जगतमें कैसा नाता रे ॥
माता कह यह पुत्र हमारा बहिन कह बिर मेरा ।
भाई कह यह भुजा हमारी नारि कह नर मेरा ॥
पेट पकरिके माता रोव बाह पकरि क भाई ।
लपटि झपटिके तिरिया रोव हस अवेला जाई ॥
जब लगि माता जीव रोव बहिन रोव दस मासा ।

तेरह दिन तक तिरिया रोव फेर कर घर घासा ॥
 चार गजी घरगजी भोगाया चढ़ा काठकी घोडी ॥
 चारो कोने आग लगाया फूक दियो जस होरी ॥
 हाड जरै जस लाकडी कोइ बेस जर जस घासा ॥
 सोना ऐसो बाया जरि गइ कोई न आयो पासा ॥
 घरकी तिरिया देखन लागी दूढ़ि फिरी चहुँ बेसा ॥
 कह कबीर सुनो भाई साधो छाडो जगकी आसा ॥

(३)

करम गति टार नाहिं टरी ।
 मुनि बसिष्ठसे पंडित ज्ञानी सोधिके लगन धरी ।
 सीता हरन भरन दसरथको बनमें बिपति परी ॥
 कहें वह फद कहीं वह पारिधि कहें वह मिरग चरी ।
 सीताको हरि लगे रावन सुबरन लक जरी ॥
 नीच हाथ हरिचंद बिकाने, बलि पाताल धरी ।
 कोटि गाय नित पुन करत नृग गिरगिट जोनि परी ॥
 पांडव जिनके आपु सारथी, तिन पर बिपति परी ।
 दुरजोधनको गरब पटायो जदुकुल नास करी ॥
 राहु केतु औ भानु चंद्रमा विधि सजोग परी ।
 कहत कबीर सुनो भाई साधो होनी होके रही ॥

(४)

हमन है इस्क मस्ताना हमनको होसियारी क्या ?
 रए आजाद या जगमें हमन दुनियासे यारी क्या ?
 जो बिछुडे ह पियारेसे भटकते दरबदर फिरते ।
 हमारा यार ह हममें हमनको इतिजारी क्या ?
 खलक सब नाम अपनेको बहुत कर सिर पटकता ह ।
 हमन गुरु नाम सांचा ह हमन दुनियासे यारी क्या ?

न पल बिछुड़े पिया हमसे न हम बिछुड़े पियारेसे ।
 उर्तीसे नेह लागी ह हमनको बेकरारी क्या ?
 कबीरा इस्कका माता दुईको दूर कर दिलसे ।
 जो चलना राह नाजूक ह हमन सिर योस भारी क्या ?

(५)

साधो यह तन ठाठ तँबूरेका ।
 ऐँधत तार मरोरत खूटी, निकसत राग हजूरका ।
 दूटे तार बिलर गई खूटी हो गया धूरम धूरेका ॥
 या बेहीका गरब न कीज उडि गया हस तँबूरेका ।
 कहत कबीर मुनो भाई साधो अगम पय कोइ सूरेका ॥

५

रैदास

ये कबीरके समकालीन और रामानन्दजीके चारह शिष्योम से एक थे । जातिसे चमार थे । आपके पद बड़े भावपूर्ण और सरस हैं । सगुण नामोसे निगुणकी भावना बड़े मुन्दर ढगसे इन्हाने व्यक्त की है । घग्ना और मीराबाईने इनका नाम बड़े आदरम लिया है । इनके लिखा कोई ग्रंथ नहीं मिलता । फुलकर पद बहुत हैं जो भाषा और भावकी दृष्टिसे बड़े ममस्पर्शी ह । यह १५ वीं सदीक सत ह । इनके जन्म और मृत्युकी बाबत कुछ पता नहीं चलता ।

(१)

राम म पूजा कहा चढाऊँ । फल अह मूल अनूप न पाऊँ ॥
 यनहर दूध जो बछरू जुठारी । पुहुप भँवर जल मीन बिगारी ॥
 मल्यागिरि बेधियो भुअगा । बिय अमृत दोउ एक सगा ॥

मन ही पूजा मन ही धूप । मन ही सेऊँ सहज सरूप ॥
पूजा अरचा न जानू तेरी । कह रदास बदन गति मेरी ॥

(२)

साँची प्रीत हम तुम संग जोडो, तुम संग जोडि अबर सग तोडी ॥
जो तुम बादर तो हम मोरा, जो तुम चद हम भये चकोरा ।
जो तुम दीया तो हम धाती, जो तुम तोरय तो हम जात्री ॥
जहाँ जाऊँ तहँ तुम्हरी सेवा, तुम सा ठाकुर और न देवा ।
तुम्हरे भजन कटे भय फाँसा, भक्ति हेतु गाव रदासा ॥

(३)

प्रभुजी सगति सरन तिहारी ।

जगजीवन राम भुरारी ॥

गली गली को जल बहि आयो, मुरसरि जाय समायो ।
सगतके परताप महातम नाम गगोदक पायो ॥
स्वाति बूद बरस फनि ऊपर सीस विष होइ जाई ।
वही बूद क मोती निपज सगतकी अधिकाई ॥
तुम चदन हम रड बापुरे निकट तुम्हारे आसा ।
सगतके परताप महातम आव बास सुबासा ॥
जाति भी ओछी, करम भी ओछा, ओछा कसब हमारा ।
नीचेसे प्रभु ऊँच कियो ह कह रदास चमारा ॥

गुरु नानक

इनका जन्म लाहौरके एक खत्री परिवारमें सन १४७० में हुआ और मृत्यु १५४० ई० में हुई। छोटी उमरमें ही इनका विवाह हो गया और दो पुत्र भी हुए।

बचपनसे ही नानककी रुचि भगवद भक्तिकी ओर थी। कहते हैं एक बार इनके पिताने ध्ववसायके लिए इन्हें धन दिया, मगर इन्होंने उसे मतामें ही बांट दिया। नानक अनेको देवी-देवताओंकी पूजामें विश्वास नहीं करते थे। ये एक ईश्वरकी ही आराधना करते थे। हिन्दुओं और मुसलमानोंके झगड़ोंका अंत करनेके विचारसे इन्होंने निर्गुण सतमतको धारण किया।

इनके भजन सत्कारकी अनित्यता भगवद भक्ति और सत्-स्वभावकी वातात्मे मबद्धित है। पद इतने मार्मिक और भावपूर्ण हैं कि वे आज भी मन्त्राकी भांति सम्मानित हैं। इन भावपूर्ण पदोंका संग्रह 'गुरुग्रन्थ माह्व' के नामसे किया गया है जो मिक्खोका पूज्य धर्मग्रन्थ है।

गुरु नानकके पदोंकी भाषा कहीं पंजाबी, कहीं ब्रज और कहीं हिन्दी है। भाषाकी विविधता निर्गुणी सत्ताकी सदासे एक विशेषता रही है। गुरु नानककी भाषा सरल और सरस है। पदोंके भाव बड़े असरकारक हैं।

(१)

इस बमदा मनु कीबे भरोसा,

आया आया, न आया न आया।

यह सत्तार रन दा सुपना,

कहीं देखा, कहीं नाहिं दिखाया ॥

सोच बिचार करे मत मनमें,
 जिसने ढूँढ़ा उसने पाया ।
 नानक भक्तनंदे पद परसे,
 निस दिन रामचरन चित लाया ॥

(२)

सुमरन कर ले मेरे मना ।
 तेरि बिति जाति उमर हरि नाम बिना ॥
 कूप नीर बिन धेनु छीर बिन मदिर दीप बिना ।
 जसे तख्खर फल बिन हीना तसे प्राणी हरनाम बिना ॥
 बेह नन बिन रन चद बिन धरती मेह बिना ।
 जसे पडित वेद विहीना तसे प्राणी हरनाम बिना ॥
 काम क्रोध मद लोभ निहारो छाड दे अब सत जना ।
 कहे 'नानक' सुन भगवता या जगमें नहिं कोइ अपना ॥

(३)

काहे रे बन खोजन जाई ।
 सब निवासी सदा अलेपा, तोही सग समाई ॥
 पुष्प मध्य ज्यो बास बसत ह, मुकर माहि जस छाई ।
 तसे ही हरि बस निरतर, घट ही खोजो भाई ॥
 बाहर भीतर एक जानो, यह गुरु ज्ञान बताई ।
 जन 'नानक' बिन आपा चीहे, मिट न भ्रमकी काई ॥

दादू दयाल

इनका जन्म अहमदाबादमें मन् १५४५ में और मृत्यु राजस्थानमें १६०४ ई० में हुई। इनकी जातिके बारेमें बड़ा मतभेद है। कुछ लोग इन्हें धुनिया या मोचा मानते हैं और कुछ गुजराती ब्राह्मण। दादू पयका प्रधान केंद्र राजस्थान रहा, क्योंकि इनके जीवनका अधिक जस राजस्थानमें ही बीता।

दादूजीकी वाणीमें लगभग ५००० पदाका संग्रह है जिनमें देवी गुरु मिलन वियोग, सत्य विश्वास और प्रायना आदि मुख्य विषय हैं। भाषा राजस्थानीसे प्रभावित पश्चिमी हिन्दी है। कुछ पद गुजरातीमें भी मिलने हैं। यह बड़े ऊंची काटिके सन्त हुए हैं।

दोहा

(१)

धीव दूधमें रमि रह्या, ध्यापक सबही ठौर।
'दादू' बकता बहुत है, मयि काढ़ ते और ॥

(२)

'दादू' दीया है भला, दिया करो सब कोय।
घर में घरा न पाइये, जो कर दिया न होय ॥

(३)

केते पारिल्ल पचि मुये, कौमति कही न जाइ।
'दादू' सब हरान है, गूगे का गुड खाइ ॥

(४)

यह मसीत यह देहरा, सतगुरु दिया दिखाइ।
भीतर सेवा बदगी, बाहिर काहे जाइ ॥

(५)

जहा राम तहें म नहीं, म तहें नाहीं राम ।
'दादू' महल धरीक ह, द्वै को नाहीं ठाम ॥

(६)

मिसरी माह भेल करि, माल विकाना बस ।
या 'दादू' मंहिगा भया, पारब्रह्म भिलि हस ॥

(७)

काया कठिन कमान ह, खोंच बिरला कोइ ।
भारै पाचों मिरगला, 'दादू' सूरा सोइ ॥

(८)

हस्ती छूटा मन फिरै, फाहु न बाध्या जाइ ।
बहुत महावत पचि गये, 'दादू' कछु न बसाइ ॥

(९)

क्या मुह ले हँसि बोलिये, 'दादू' दीज रोइ ।
जनम अमोलक आपणा, चले अकारय खोइ ॥

(१०)

कहि कहि मेरी जीभ रहि, सुणि सुणि तेरे कान ।
सतगुरु बपुरा क्या कर, चेला भूढ़ अजान ॥

(११)

जिहि घर नि'दा साधुकी, सो घर गए समूल ।
तिनकी नाँव न पाइये, नाँव न ठाँव न धूल ॥

(१२)

सुखका साथी जगत सब, दुखका नाहीं कोय ।
दुखका साथी साइयाँ, 'दादू' सतगुरु होय ॥

सबद

(१)

तुम बिन ऐस घौन कर ।
गरीबनेवाज गुसाईं मेरो माय मुकट धर ॥
नीच ऊँच ले करे गुसाईं, टारियो हूँ न टर ॥
हस्तकवलकी छाया राखै, पाहु य न डर ॥
जाकी छोति जगतको लाग, तापरि तू हि ढर ।
अमर आप ल कर गुसाइ, भारघो हूँ न मर ॥
नामदेव, कबीर जुलाहो, जन रदास तिर ।
'दादू' घेगि बार नहि लाग हरि सो सब सर ॥

(२)

मनरे राम रटत क्यू (न) रहिये ।
यहु तत बार बार क्यू न कहिये ॥
जब लग जिम्मा घाणी । तौ लौं जपिले सारगपाणि ॥
जब पवना चलि जाव । तब प्राणी पछताव ॥
जब लग श्रवण सुणीज । तौ लौं साधसबद सुनि लोज ॥
श्रवणों सुरति जब जाई । ए तज का सुनि ह भाई ॥
जब लग ननहु पेख । तौ लौं चरनकौयल क्यू न देख ॥
जब ननहु कछू न सूझ । ये तव मूरिख क्या बूझ ॥
जब लग तन मन नीका । तौ लौं जपिले जीवनि जीका ॥
जब 'दादू' जीव आव । तब हरिके मनि भाव ॥

(३)

अल्ला तेरा जिकर फिकर करते ह ।
आगिक मुन्ताक तेरे तस तस मरते ह ॥

खलक खेश दिगर नेस बठे दिन भरते ह ।
 दायम दरबार तेरे गर महल डरते ह ॥
 तन शहीद मन शहीद रात दिवस लडते ह ।
 ग्यान तेरा ध्यान तेरा इश्क आग जलते ह ॥
 जान तेरा जिंद तेरा पावो सिर धरते ह ।
 'दाहू' दीवान तेरा जर खरीद घरके ह ॥

८

मलूकदास

'अजगर करे न चाकरी, पछी करे न काम ।
 'दाम मल्का' कहि गये सबक दाता राम ॥"

आल्मियाक इस मूलमन्त्रके जेखक मलूकदासना जन्म इलाहाबादके एक खत्री परिवारमें सन् १५७५ मे हुआ और मृत्यु १६८३ ई० में। ये औरगजेबके समयके प्रसिद्ध निर्गुणी मत थे। इनकी गढ़िया सारे भारतमें थी। कहते ह इन्होंने अपनी सिद्धिके बल पर एक बार उबने जहाजको बचा लिया था और रुपयोना ताडा गगाजीम तैरा दिया था। इनकी भापामे अरबी फारसीके शब्दोकी बहुतायत है। कुछ पद तो ठेठ खड़ी बोलीके प्रतीत होते ह। इनके दो प्रसिद्ध ग्रन्थ ह—'रत्नखान' और 'रत्नबोध'।

(१)

दीनबधु दीनानाथ मेरी तन हेरिये ।
 भाई नाहि बधु नाहि कुटुम्ब परिवार नाहि,
 ऐसा कोई मित्र नाहि जाके डिग जाइये ।
 सोनेकी सलया नाहि रूपेका रुपया नाहि,
 कौडी पसा गाँठ नाहि जासे कछु लीजिये ॥

खेती नाहिं बारी नाहिं बनिज ध्योपार नाहिं,
 ऐसा कोई साहु नाहिं जाता फछु मांगिये ।
 कहत मल्लूकदास छाड दे पराई आस,
 राम धनी पाइक अब काकी सरन जाइये ॥

(२)

तेरा म दीदार दिवाना ।
 घडी घडी सुझे देखा चाहूँ सुन साहेब रहमाना ॥
 हुआ अलमस्त लबर नहीं तनकी पीया प्रेम पियाला ।
 ठाढ़ होऊँ तो गिरि गिरि परता तेरे रग मतबाला ॥
 खडा रहूँ दरबार तुम्हारे ज्यो घरका बदाजादा ।
 नेकीकी कुलाह सिर दीये गले परहन साजा ॥
 तौजी और निमाज न जानू ना जानू घरि रोजा ।
 बांग जिक्किर तबहीं से बिसरी जबसे यह दिल खोजा ॥
 कहूँ मल्लूक अब बजा न करिहोँ दिल ही सो दिल लाया ।
 मक्का हज्ज हिममें देखा पूरा मुरसिद पाया ॥

(३)

बीर रघुबीर पयगम्बर खुदाय मेरे,
 कादिर करीम काजी भाया मत खोई ह ।
 राम मेरे प्रान रहमान मरे दीनिमान,
 भूल गयो भया सब लोकलाज घोई ह ।
 कहत मल्लूक म तो दुबिधा न जानौं दूजी,
 जोई मेरे मनमें ह नननमें सोई ह ।
 हरि हजरत मोहिं माधव मुक्कदकी सौं
 छाँडि बेगवराय मेरो दूसरो न कोई ह ॥

भील कद करी थी भलाई जिया आप जान,
 फील कद हुआ या मुरीद कहु किसका ।
 गीध कद ज्ञानकी किताबका किनारा छुआ,
 ब्याध और बधिक निसाफ कहु तिसका ।
 नाग कद माला लेके बढगी करी थी बठ,
 मुझकी भी लगा या अजामिलका हिस्का ।
 ऐते बदराहोकी बदी करी थी माफजन,
 मलूक अजाती पर एती करी रिस का ॥

९

जायसी

इनके जन्म और मृत्युके समयका ठीक ठीक पता नहीं। शेरशाहके राज्यकालमें सन् १५२० में इन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'पञ्चावत' लिखी थी, ऐसा अनुमान है।

मलिक मुहम्मद जायसी जायसके रहनेवाले थे। इनके गुरु शेख मुहीउद्दीन एक प्रसिद्ध सूफी फकीर थे। जायसी काशे और अत्यन्त कुरूप थे। ये अपने समयके प्रसिद्ध फकीरामें गिने जाते थे।

जायसीकी कृतिका आधार इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ 'पञ्चावत' है। 'पञ्चावत' के अलावा 'अखराबत' और 'आखरी कलाम', दा पुस्तकें इन्होंने और लिखी हैं।

जायसी प्रेममार्गी कवियोंके प्रतिनिधि हैं। ये अपनी रचनाओंमें अपने समकालीन कवियासे बहुत आगे निकल गये हैं। 'पञ्चावत' में इन्होंने ऐतिहासिक और पौराणिक तत्त्वोंका मेल करके एक अनूठी

प्रतिभा और काव्य कौशलका परिचय दिया ह। 'पद्यावत'का प्रेमकथामें सांसारिक और जाध्यात्मिक दोनों तत्त्वोका सुंदर समन्वय हुआ ह।

ज्ञानमार्गी कवीरकी डाट फटकारने यद्यपि यह सिद्ध कर दिया था कि राम रहीम, मंदिर मस्जिद और काबा-कैलासका क्षगडा व्यथ ह पर प्रत्यक्ष जीवनमें उस एकताके स्वरूपको रखनेकी समस्या बनी हुई थी। प्रेममार्गी कवियोने यह काम हिंदुओकी कहानियाका हिंदुजाकी भाषामें कट कर ही कर दिखाया। जा काम कवीरकी डाट फटकारमें नहीं बन पाया था वह जायसीके प्रेमपूण व्यवहारसे बन गया।

'पद्यावत' फारसी ममनवियोकी शली पर फारसी लिपिमें लिखा गया ह। भाषा ठेठ जवधा ह। काव्य और भाषाकी दृष्टिने जायसी और उनका 'पद्यावत' प्रेममागक अद्वितीय रत्न है।

सदेश

म एहि अरथ पडितह बूझा। कहा कि हम्ह किछु और न सूझा ॥
 चौदह भुवन जो तर उपराहीं। ते सब मानुपके घट माहीं ॥
 तन चितउर, मन राजा कोहा। हिय सिंहल, बुधि पदमनि चीहा ॥
 गुरु सुआ जेइ पय बेखावा। विन गुरु जगत को निरगुन पावा ?
 नागमती यह दुनिया घघा। वाचा सोइ न एहि चित बघा ॥
 राघव दूत साइ सतानू। भाषा अलाउदी सुलतानू ॥
 प्रेम-क्या एहि भाति बिचारहु। बूझि लेहु जो यज्ञ पारहु ॥

तुरकी, जरघी, हिंदुई, भाषा जेती आहि।

जेहि मँह मारग प्रेमकर, सब सराह ताहि ॥

मुहमद कबि यह जोरि सुनावा। सुना सो धीर प्रेमकर पावा ॥
 जोरी लाइ रक्त क लेई। गादि प्रीति नयनह जलभेई ॥
 ओ म जानि गीत अस कीहा। मकु यह रह जगतमेंह चीहा ॥
 कहां सो रतनसेन अथ राजा ? कहां सुआ अस बुधि उपराजा ?

कहा अलाउद्दीन सुलतानू ? कहा राघव जेइ कीह बखानू ?
 कहें सुरूप पदमावति रानी ? कोइ न रहा जग रही कहानी ।
 धनि सोई जस कीरति जासू । फूल मर, प मर न बासू ॥

केइ न जगत जस बेचा, केइ न लीह जस माल ।

जा यह पढ कहानी हम्ह सेंबर दुइ बोल ॥

मुहमद विरिध बैस जो भई । जोपन हुत सो अवस्था गई ॥
 बल जो गएउ क खीन सरीरू । दिस्टि गई ननहिं देइ नीरू ॥
 दसन गए क पचा कपोला । बन गए अनरुच देइ बोला ॥
 बुधि जो गई देइ हिय बीराई । गरब गपउ तरहेंत सिरनाई ॥
 सरवन गए, ऊँच जो सुना । स्पाही गई सीस भा धुना ॥
 भेंबर गए केसहि देइ भूवा । जोबन गएउ जीति लेइ जूवा ॥
 जो लहि जीवन जोबन साया । पुनि सो मीचु पराए हाया ॥

विरध जो सीस डोलाव, सीस धुन तेहि रीस ।

“बूढ़ी आज होहु तुम्ह”, केइ यह दीह असीस ॥

बसत वर्णन

प्रथम बसत नवल श्रुतु आई । सुश्रुतु चत बसाए सोहाई ॥
 चवन चीर पहिरि धनि अगा । सेंडुर दीह बिहेंसि भरि भगा ॥
 कुमुम हार औ परिमल बासू । मलियागिरि छिरका बलासू ॥
 सौर सुपेती फूलन डासी । धनि औ कत मिले सुखवासी ॥
 पिउ सेंजोग धनि जोबन धारी । भौर पुहुप सेंग करहि धमारी ॥
 होइ फाग भलि घाँचरि जोरी । विरह जराइ दीह जस होरी ॥
 धनि ससि सरिस, तप पियसूरू । नखत सिंगार होहि सब चूरू ॥

जिह घर कता श्रुतु भली, आव बसत जो नित्त ।

सुख भरि आवहि दिवसनिंसि, दुख न जानें कित्त ॥

(पडश्रुतु-वर्णनम)

असाढ

घटा असाढ, गगन घन गाजा । साजा बिरह बुद दल बाजा ॥
 धूम साम, धीरे घन छाए । सेत धजा बग-पाति देखाए ॥
 सडग बीजू घमक चहुँ आरा । युद-मान बरसाहि घनघोरा ॥
 ओनई घटा आइ चहुँ फेरो । वत ! उबाए मदन हौं घेरो ॥
 दाबुर मोर कोकिला पीऊ । गिर बीजू, घट रह न जीऊ ॥
 पुष्य नखत सिर ऊपर आवा । हौं बिनु नाह, मदिर को छावा ॥
 आद्रा लाग, लागि भुईं लेई । मोहि बिनु पिउ को आदर देई ॥

जिह घर फता ते सुखी, तिह गारी ओ गब ।

वत पियारा बाहिर, हम सुख भूला सब ॥

फागुन

फागुन पवन झकोरा बहा । चोगुन सीउ जाइ नहि सहा ।
 तन जस पियर पात भा मोरा । तेहि पर बिरह देइ झक्मोरा ॥
 तरिवर झरहि झरहि बन ढाखा । भई ओनत फूलि फरि साला ॥
 करहि बनसपति हिये हुलाम् । मो कहें भा जग दून उदासू ॥
 फागु करहि सब चाचरि जोरी । मोहि तन लाइ दीहि जस होरी ॥
 जौ प पीउ जरत जस पावा । जरत मरत मोहि रोप न आवा ॥
 राति दिवस बस यह जिउ मोरे । लगीं निहोर फत अब तोरे ॥

यह तन जारौं छार क, कहीं कि 'पवन ! उडाव' ।

मकु तेहि मारग उडि पर फत घर जहें पाव ॥

जेठ

जेठ जर जग, चल लुवारा । उठहि बबडर, परहि अंगारा ॥
 बिरह गाजि हनुबेत होइ जागा । लकावाह कर तनु लगा ॥
 चारिहु पवन झकोर आगी । लका दाहि पलका लागी ॥
 दहि भइ माम नदी कालिंदी । बिरहक आगि कठिन अति मदी ॥

उठ आगि औ आव आधी। नन न सूझ, मरौं दुख बाधी ॥
 अधजर भइऊँ, मासु तन सूखा। लागेउ बिरह काल होइ भूखा ॥
 मास साइ अब हाडह लाग। अबहुँ आउ, आवत सुनि भाग ॥

गिरि, समुद्र, ससि, मेघ, रवि, सहि न सर्काहि वह आगि।

मुहमद सती सराहिए, जर जो अस पिउ लागि ॥

(बाहरमासा-वणनसे)

१०

गोस्वामी तुलसीदास

गोस्वामीजीका जन्म सन् १५३३ और मृत्यु सन् १६२४ में हुई।
 ये युक्तप्रातकं बादा जिलेक निवासी थे। इनके पिताका नाम आत्माराम
 और माताका नाम हुलसी था। इनका बचपन बड़े सकटमें बीता।
 पर बापा नरहरिदास और गोप सनातनजीके सत्संगसे इन्होंने सब
 विषयोका ज्ञान प्राप्त कर लिया। इनकी प्रतिभाका देखकर एक
 ब्राह्मणने अपनी रूपवती और गुणवती कन्या रत्नावलीका विवाह
 इनमें कर दिया।

तुलसीदासजी अपनी पत्नीसे बहुत प्रेम करते थे। एक बार
 उसके मायके चले जाने पर ये इतने बेचैन हो उठे कि चंडी हुई नदीको
 पार करके उसमें मिलने पहुँचे। स्त्रीने इनकी आमकित्का देखकर कहा
 "जितना प्रेम आप मुझमें करते हैं उतना यदि भगवानमें करते तो
 आप समारके बंधनमें मुक्त हो जात।" तुलसीदासजीके मन पर
 इस बातका बड़ा असर हुआ। उन्हें तबसे वराम्य हो गया और वे
 घरबार छाड़कर विरक्त हो गए।

गोस्वामीजी सगुण धाराकी रामभक्ति-शाखाके प्रतिनिधि कवि
 हैं। इन्होंने अपने आराध्यदेव मर्यादा-पुरुषोत्तम रामका गुणगान अपने

काव्यामें किया है। कहने है कि इन्होंने धीमन्त्रीय ग्रथ लिखे हैं, पर कुल १० ग्रथ मिलने हैं जिनमें 'रामचरित मानस' 'विनयपत्रिका', गीतावली दाहावली, कवितावली, और 'रामाज्ञा प्रस्तावली' ये छ बड़े ग्रथ हैं। गोस्वामीजीकी कीर्ति उनके 'रामचरित-मानस' के कारण है। इनका यह ग्रथ आज भी प्रत्येक हिन्दू घरमें आदर पाता है। जब प्रियताकी दृष्टिमें 'तुलसी' और उनके 'मानस' को हिन्दीमें प्रथम स्थान प्राप्त है।

गास्वामीजीका व्रज और अवधी दाना ही भाषाओं पर समान अधिकार था और दाना ही भाषाओंमें उन्होंने रचनायें की हैं। भाषाका मँजा हुआ रूप हिन्दीमें सबसे पहले तुलसीकी रचनाओंमें ही देखनेका मिलता है। मानस अवधी भाषाका सर्वोत्कृष्ट ग्रथ है।

वनगमनके लिए सीताका आग्रह

कहि प्रियवचन बिबेकमय, कीह मातु परितोष ।

लगे प्रबोधन जानकिहि, प्रगटि बिपिन गुनदोष ॥

मातु समीप कहत सकुचाहीं । बोले समउ समुझि मन माहीं ॥
 राजकुमारि सिखावन सुनहू । आन भाति जिय जनि कछु गुनहू ॥
 आपन मोर नीक जो कहहू । बचनु हमार मानि गह रहहू ॥
 आपसु मोर सास सेवकाई । सब बिधि भामिति भवन भलाई ॥
 एहि तें अधिक धरम नहि दूजा । सादर सासु समुर-पद-पूजा ॥
 जब जब मातु करिह सुधि मोरी । होइहि प्रेम बिकल मति भोरी ॥
 तब तब तुम्ह कहि क्या पुरानी । सुवरी समुझायेहु महु बानी ॥
 कहऊँ सुभाष सपय सत मोही । सुमुखि मातुहित राखऊँ तोही ॥

गुरु श्रुति समत धरम फलु, पाइज बिनहि फलेस ।

हठबस सब सकट सहे, गालव नहुय नरेस ॥

म पुनि करि प्रमान पितुधानी । बेगि फिरब सुनि सुमुखि सयानी ।
 दिवस जात नहि लागहि बारा । सुवरी सिखावन सुनहु हमारा ॥
 जो हठ करहु प्रेमबस बामा । तौ तुम्ह दुख पाउब परिजामा ॥

काननु कठिन भयकर भारी । घोर घाम हिम धारि बयारी ॥
 कुस कटक मग काँकर नाता । चलब पयादेहि बिनु पदत्राना ॥
 चरनकमल मृदु मजु तुम्हारे । मारग अगम भूमिधर भारे ॥
 कदर खोह नदी नद नारे । अगम अगाध न जाहि निहारे ॥
 भालु बाघ बृष केहरि नागा । करहि नाद सुनि घोरजु भागा ॥

भूमि सयन बलकल बसन, असन कद फल मूल ।

ते कि सदा सब दिन मिलाह, समय समय अनुकूल ॥

नरअहार रजनीचर चरहीं । कपटवेध विधि कोटिक् करहीं ॥
 लागइ अति पहार कर पानी । बिपन बिपति नहि जाइ बखानी ॥
 ब्याल कराल बिहग बन घोरा । निसि चर निकर नारि-नर चोरा ॥
 डरपाहि घोर गहन सुधि आये । मगलोचनि तुम्ह भीरु सुभाये ॥
 हसगवनि तुम नहि बन जोगू । सुनि अपजसु मोहि देइहि लोगू ॥
 मानस-सलिल-सुधा प्रतिपाली । जिअइ कि लवन पयोधि मराली ॥
 नवरसाल धन बिहरन सीला । सोह कि कोकिल बिपिन करीला ॥
 रहहु भवन जस हृदय बिचारी । चदबदनि दुख कानन भारी ॥

सहज मुहद-गुरु-स्वामि सिख, जो न करइ सिरमानि ।

सो पछताइ अघाइ उर, अवसि होइ हितहानि ॥

सुनि मृदुवचन मनोहर पियके । लोचन ललित भरे जल सियके ॥
 सीतल सिख दाहक भइ कसे । चकइहि सरदचद निसि जसे ॥
 उतर न आव बिकल बदेही । तजन घहत सुचि स्यामि सनेही ॥
 बरबस रोकि बिलाचन बारी । धरि घोरज उर अवनिकुमारी ॥
 लागि सामुपग कह कर जारी । छमबि देबि घडि अबिनय मोरी ॥
 दोट्टि प्रानपति मोहि सिख सोई । जेहि विधि मोर परम हित होई ॥
 म पुनि समुत्ति बील मन माहीं । पिय बियोग-सम दुख जग नाहीं ॥

प्राणनाथ करुनायतन, सुदर सुखद मुजान ।

तुम्ह बिनु रघु कुल-कुमुद बिधु, सुरपुर नरक समान ॥

मातृपिता भगिनी प्रिय भाई । प्रिय परिवार सुहृद समुदाई ॥
 सास ससुर गुह सजन सहाई । सुत सुदर सुसोल सुखदाई ॥
 जहँ लगि नाय नेह अरु नाते । पिय बिनु तियहि तरनिहँन ताते ॥
 तनु घनु धामु घरनि पुरराजू । पति बिहीन सब सोक समाजू ॥
 भोग रोग सम, भूपन भार । जम जातना सरिस ससार ॥
 प्राननाथ तुम्ह बिनु जग माहीं । मो कहँ सुखइ कतहँ कछु नाहीं ॥
 जिय बिनु देह नदी बिनु बारी । तइसिअ नाय पुरुष बिन नारी ॥
 नाय सकल सुख साय तुम्हारे । सरद बिमल बिधु-बदन निहारे ॥

खग मग परिजन, नगर बन, बलकल बिमल डुकूल ।

नाय साय सुर-सदन-सम, परनसाल सुख मूल ॥

धनदेवी वनदेव उदारा । करिहँहि सासु-ससुर-सम-सारा ॥
 कुस किसलय सायरी सुहाई । प्रभुसँग मजु मनोजतुराई ॥
 कद मूल फल अमिअ अहारु । अवघ सौध-सत सरिस पहारु ॥
 छिनु छिनु प्रभु पद कमल बिलोकी । रहिहँहुँ मुदित दिवस जिभि कोकी ॥
 वन दुख नाय कहै बहुतेरे । भय विपाद परिताप घनेरे ॥
 प्रभु-घियोग लख लेस-समाना । सब मिलि होहि न कृपानिधाना ॥
 अस जिय जानि सुजान सिरोमनि । लेइअ सग मोहि छाडिअ जनि ॥
 बिनती घहुत करउँ वा स्वामी । कहनामय उर-अतर-जापी ॥

राखिअ अवघ जो अवधिलगि, रहत जानि अहि प्रान ।

दीनबन्धु सुदर सुखद सील-सनेह निधान ॥

मोहि मग चलत न होइहि हारी । छिनु छिनु चरन सरोज निहारी ॥
 सबहि भाँति पिय सेवा करिहउँ । मारग जनित सकल छम हरिहउँ ॥
 पाय पक्षारि बठि तरु छाहीं । करिहउँ बाउ मुदित मन माहीं ॥
 छमरुन सहिन स्याम तनु देखे । कहँ दुख समउ प्रानपति पेखे ॥
 सम महि तन-तरु पल्लव डाली । पाय पलोडिहि सय निसि दासी ॥
 धार धार भृदुमूरति जोही । लागिहि ताति बयारि न मोही ॥

को प्रभुसग मोहि चितवनि हारा । तिष-वधुहि जिमि ससर सिपारा ॥
म सुकुमारि नापु बन जोगू । तुम्हाहि उचित तप मोव्हें भोगू ॥

ऐसेउ वचन कठोर मुनि, जो न हृदय मिलगान ।

तो प्रभु विषम बियोग-दुषु, सहिर्हाहि पांवर प्रान ॥

अस कहि सोय विवल भइ भारी । वचन बियोग न सकी सँभारी ॥
देसि दसा रघुपति जिम जाना । हठि राखे नहि रातिहि प्राना ॥
कहेउ कृपाल भानु-कुल-नाया । परिहरि सोचु चलठु बन साया ॥
नहि विषाद कर अवसर आजू । बेगि करठु बन-गवन-समाजू ॥
कहि प्रिय वचन प्रिया समुसाई । लगे मातुपद आणिय पाई ॥
येगि प्रजा दुख भेटय आई । जननी निठुर विसरि जनि जाई ॥
फिरिहि दसा विधि बहुरि कि मोरी । देखिहउं नयन मनोहर जोरी ॥
सुदिन सुपरो तात कय हाइहि । जननी जिअत बदन बिधु जोइहि ॥

बहुरि बच्छु कहि लालु कहि, रघुपति रघुवर तात ।

कयहि बोलाइ लगाइ हिय, हरवि निरविहउं गात ॥

(अयाध्यावाण्डस)

पद

(१)

तू दयाल, दीन हौं, तू दानि, हौं भिलारी ।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पापपुज हारी ॥
नाथ तू अनायको, अनाथ कौन मोसो ?
मो समान आरत नहि, आरति हर तोसो ॥
ब्रह्म तू, हौं जीव, तू ठाकुर, हौं चेतो ।
तात, मात, गुरु, सखा तू सब विधि हितु मेरो ॥
तोहि मोहि नाते अनेक, मानिय जो भाव ।
ज्यो-स्यो तुलसी कृपालु, घरन-सरन पाव ॥

(२)

ममता तू न गई मेरे मन तें ।
पाके बेस जमके साथी, लाज गई लोकन तें ॥
तन धावे कर कपन लागे जोति गई ननन तें ।
सरबो बचन न मुनत फाहु के बल गये सय इद्रिन तें ॥
टूटे दसन बचन नहि आयत सोभा गई भुखन तें ।
कफ पित बात कठ पर बडे मुतहि गुलावत कर तें ॥
भाइ बंधु सब परम पियारे नारि निकारत घर तें ।
'तुलसिदास' बलि जाउं चरन तें लोभ पराये धन तें ॥

(३)

रघुबर तुमको मेरी लाज ।
सदा सदा म सरन तिहारी तुमहि गरीब निवाज ॥
पतित उधारन धिरद तुम्हारो, सबनन सुनी अवाज ।
हौं तो पतित पुरातन कहिये, पार उतारो जहाज ॥
अघ खडन दुख भजन जनके, यही तिहारो काज ।
'तुलसिदास' पर किरपा कीज, भगति-दान देहु आज ॥
(विनयपत्रिकासे)

(४)

सोम जटा, उर बाहु बिसाल, बिलोचन लाल, तिरीछी सी भौंह ।
तून-सरसन-बान घरे, तुलसी, बन-भारगमें सुठि सोह ॥
सादर वार हि-वार सुभाइ बित तुम त्या, हमरे मन मोह ।
पूछति ग्राम-बधू सिय सा, कहो, सावरे से सखि ! रावरे को ह ?

(५)

सुनि सुंदर बन सुधारस-साने सपानी ह जानकी जानी भली ।
तिरछे करि नन, द सन तिह समुझाइ कछु मुसकाइ चली ॥

तुलसी, तेहि औसर सोह सब अवलोकति लोचन-लाह्रु अली ।
 अनुराग-तडागमें भानु उब बिगसी मनोमजुल कज-कली ॥
 (वकितावलीमें)

राम सतसई

(१)

जहाँ राम तहें काम नहि, जहाँ काम नहि राम ।
 तुलसी कब्रूँ होत नहि, रवि रजनी इक ठाम ॥

(२)

गगा यमुना सरसुती, सात सिधु भरपूर ।
 तुलसी चातकके मते, बिन स्वाती सब धूर ॥

(३)

तुलसी बिलम्ब न कीजिये, भजि लीज रघुबीर ॥
 तन तरकस तें जात है, स्वांस सार सी तीर ॥

(४)

असन बसन सुत नारि सुख, पापिहूँ के घर होइ ।
 सत-समागम रामधन, तुलसी कुलभ बोइ ॥

(५)

तुलसी राम सनेह कर, त्याग सकल उपचार ।
 जसे घटत न अक नव, नवके लिखत पहार ॥

(६)

तुलसी सत सुअबु तरु, फूल फलहि परहेत ।
 इतते ये पाहन हनत, उतते ये फल देत ॥

(७)

गोधन, गजधन, बाजिधन, और रतन धन खान ।
 जब आवत सतीष धन, सब धन घूरि समान ॥

(८)

दुर्जन दपन सम सदा, फरि देखो हिय गौर ।
समुलकी गति और है, विमुल भये पर और ॥

(९)

रामनाम मनि दीप घरु, जीह देहरी द्वार ।
तुलसी भीतर बाहिरो, जो चाहसि उजियार ॥

(१०)

मत्री, गुरु, अरु वद्य जो, प्रिय बोलहि भय आस ।
राज, धम, तन, तीन कर, होइ बेगिही नास ॥

(११)

दीरघ रोगी दारिदी, षट् बच लोलुप लोग ।
तुलसी प्रान समान जो, तऊ त्यागिबे योग ॥

(१२)

तुलसी जो कीरति चर्हिह, परकीरति को छोड़ ।
तिनके मुह मसि लागि है, मये न मिटि ह घोड़ ॥

(१३)

आवत ही हरमे नहीं, ननन नहीं सनेह ।
तुलसी तर्हि न जाइये, कचन बरसे मेह ॥

(१४)

रनको भूषन इडु है, दिवसको भूषन भान ।
दासको भूषन भक्ति है, भक्तिको भूषन ज्ञान ।

(१५)

ज्ञानको भूषन ध्यान है, ध्यानको भूषन त्याग ।
त्यागको भूषन गतिपद, तुलसी अमल अदाग ॥

सूरदास

कृष्णभक्ति शास्त्राके प्रमुख कवि सूरदासका जन्म सन् १४८४ और मृत्यु सन् १५६४ में हुई। वल्लभाचार्यजीकी गिण्य परम्परामें अष्टछापके आठ कवियोंमें आपका प्रथम स्थान है।

सूरदासजीने अपने गुरु वल्लभाचार्यजीकी आज्ञामें श्रीमदभागवतकी कथाको पदामें गाया। इनके रचे सवा लाख पद बताये जाते हैं। पर अब पाँच छ हजार पदासे अधिक नहीं मिलते। इन पदोंको मोटे रूपसे तीन भागोंमें बाँटा जा सकता है—(१) वात्सल्यके पद, (२) शृंगारके पद और (३) भक्तिके पद।

सूरदास बालमनोविज्ञानके गहरे पारखी थे। उनका बाल चित्रण हिन्दी-साहित्यमें ही नहीं विश्व-साहित्यमें भी बेजोड़ है।

शृंगारके पदामें वियोग शृंगार और भ्रमरगीतके पद बड़े अनठे हैं। इन पदामें जहाँ गोपियाके प्रेम और विरहका चित्रण हुआ है, वहाँ गोपियाके तर्कों द्वारा निगुण भक्तिकी धज्जियाँ उड़वाकर बहुत ही स्वाभाविक रूपसे सगुण भक्तिकी प्रतिपादन भी कर दिया गया है। निःसन्देह भ्रमरगीत सूरकी सबसे अधिक कलापूर्ण और उत्कृष्ट रचना है।

भक्तिके पदामें उन्होंने अपने आराध्यदेव कृष्णके लाकरजनकारी रूप और महिमाका गुणगान किया है। इन पदोंमें तमयता, स्वाभाविकता और सरसता कूट कूटकर भरी है।

सूरदासजीकी भाषा स्वाभाविक, चलती हुई और मुहाबरेदार प्रजभाषा है। इसमें गीतकी प्रधानताके कारण एक अनायास लालित्य आ गया है। भाषा भाव और रसकी दृष्टिसे सूरके काव्यमें गीति रचना अपनी पूरी ऊँचाई पर पहुँची।

(१)

धरण कमल बढौ हरि राई ।

जाकी कृपा पगु गिरि लघ, अघेको सबकुछ दरसाई ॥
बहिरो मुन, गूग पुनि बोलै, रक चलै सिर छन घराई ।
सूरदास स्वामी करुनामय, बार बार बढौ तिहि पाई ॥

(२)

छाडि मन हरि विमुखनको सग ।

जिनके सग कुबुधि उपजति है, परत भजनमें भग ॥
कहा होत पय पान कराये, विष नहि तजत भुजग ।
कागहि कहा कपूर चुगाये, स्वान हवाये गग ॥
खरको कहा अरगजा लेपन, मरकट भूपन अग ।
गजको कहा हवाये सरिता, बहुरि धर खहि छग ॥
पाहन पतित बान नहि बेधत, रीतो करत निपग ।
सूरदास खल कारी कामरि, चढत न दूजो रग ॥

(३)

मेरो मन अनत कहा सुख पाव ।

जसे उडि जहाजको पछी फिर जहाज पर आव ॥
कमलनयनको छाडि महातम और देवको घ्याव ।
परम गगको छाडि पिपासो दुमति कूप खनाव ॥
जिन मधुकर अबुज रस चाख्यो थपौ करील फल खाव ।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरो कौन दुहाव ॥

(४)

प्रभु मोरे अथगुन बित्त न धरो ।

समदरसी है नाम तिहारो, चाहे तो पार करो ॥

इक नदिया इक नार कहावत मलोहि नीर भरो ।
 जब दोऊ मिलि एक बरन भये सुरसरि नाम परो ॥
 इक लोहा पूजामें राखत, इक घर अधिक परो ।
 पारस गुन अबगुन नहिं चितव कचन करत खरो ॥
 यह माया भ्रमजाल कहाय 'सूरदास' सगरो ।
 अबकी बार मोहिं पार उतारो नहिं प्रन जात टरो ॥

(५)

मया मोहिं दाऊ बहुत खिजायो ॥
 मोसो कहत मोलको लीनो तोहिं जसुमति कब जायो ॥
 कहा कहीं एहि रिसके मारे खेलन हों नहिं जातु ।
 पुनि पुनि कहत कौन है माता को है तुम्हरो तातु ॥
 गोरे नद जसोदा गोरी तुम कत स्याम सरीर ।
 चुटकी द ब हँसत ग्वाल सब सिख देत बलबोर ॥
 तू मोहीको भारन सीखी दाउहि कबहुं न खीझ ।
 मोहनको मुख रिस समेत लखि जसुमति सुनि सुनि रीझ ॥
 सुनहु काह बलभद्र चबाई जनमत ही को धूत ।
 सूर स्याम मोहि गोधनकी सीं हों माता तू पूत ॥

(६)

मो देखत जसुमति तेरे ढोटा अबहीं माटी खाई ।
 इहि सुनकें रिस करि उठि घाई बांह पकरि ल जाई ॥
 इक करसो भुज गहि गाड़े करि इक कर लीने सांटी ।
 मारति हों तोहिं अबहि कहेया बेगि न जगिली माटी ॥
 ब्रज-लरिका सब तेरे आगे शूठी कहत बनाई ।
 मेरे कहे नहीं तू मानति दिखरावों मुह बाई ॥

अखिल ब्रह्मांड खडकी महिमा दिखलाई मुख माहीं ।
 सिधु सुमेरु नदी बन परवत चकित भई मन माहीं ॥
 करते साटि गिरत नहि जानी भुजा छांडि अकुलानी ।
 सूर कहै जसुमति मुख मूदेउ बलि गई शारंग-पानी ॥

(७)

खेलनके मिस कुँवरि राधिवा, नद महरके आयी हो ।
 सकुच सहित मधुरे करि बोली, घर हो, कुँवर कहाई हो ॥
 सुनत स्याम कोविल सम बानी, निकसे अति अनुराई हो ।
 मातासा कछु करत कलह हरि, सो डारी बिसराई हो ॥
 मैयारी, तू इनको चीहति, बारबार बतायो हो ।
 जमुना-तीर काल्हि म भूल्यो, बाह पकरि ल आयी हो ॥
 आवत यहा तोहि सफुचित है, म ब सोह बुलायो हो ।
 सूर स्याम ऐसे गुन आगर, नागरि बहुत रिझायी हो ॥

(८)

बूझति जननि, — कहां हुती प्यारी ?
 किन तेरे भाल तिलक रचि कौहो,
 कहि कच गूधि माग सिर पारी ?
 खेलत रही नदके आगन,
 जसुमति कही, — कुँवरि, ह्या आरो ।
 तिल चावरि गोद करि दीही,
 फरिया दपी फारि नव सारी ॥
 मेरो नाउँ बूझि, बाबाकी,
 तेरो बूझि, दयो हँसि गारी ।
 मो तन बित, चित ढोटा-तन,
 कुछ सयिता सों गोद पसारी ॥

यह सुनि क बृखभानु मुदितचित्त,
 हेंसि हेंसि बूझत बात बुलारी ।
 सूरदास रस सिंधु बढधो अति
 दपति मनमें यहै बिचारी ॥

(९)

प्रीति करि काहू सुख न लह्यो ।
 प्रीत पतग करी दीपक सो आप प्राण दह्यो ॥
 अलिमुत प्रीति करी जलमुत सो करि मुख माहि गह्यो ।
 सारग प्रीति करी जु नाद सो सनमुख बान सह्यो ॥
 हम जो प्रीति करी माधव सा चलत न कछू कह्यो ।
 सूरदास प्रभु बिनु दुख दूनो नननि नीर बह्यो ॥

(१०)

चले गये दिलके दामनगीर ।
 जब सुधि आवे प्यारे दरसकी उठत कलेजे पीर ।
 नटवर भेव नयन रतनारे सुदर स्याम सरीर ॥
 आपन जाय द्वारका छाए खारी नदके तीर ।
 अज गोपिनकी प्रेम बिसारधो ऐसे भये बेपीर ॥
 बूदावन बसोबट त्यागो निरमल जमुना नीर ।
 सूर स्याम ललिता उठ बोली आखिर जाति अहीर ॥

(११)

हरि परदेस बहुत दिन लाये ।
 कारी घटा देखि बादरकी नयन नीर भरि आवे ॥
 पा लागीं तुम धीर बटाऊ कौन देस तें घाये ।
 इतनी पतिर्या मेरी बीजो, जहाँ स्यामधन छाये ॥

दादुर मोर पपीहा बोलत, सोवत मदन जगाये ।
सुरदास, स्वामी जो बिछुरे आपुन भये पराये ॥

(१२)

निर्गुन कौन देखको दासी ?

मधुकर ! हँसि समुझाय सौंह व, यूझति साँच न हाँसो ॥
को है जनक जननि को कहियत, कौन नारि को दासी ।
कसो घरन भेस है कसो, काहे रसमें अभिलासी ॥
पावगो पुनि कियो आपनो, जो रे ! कहैगो गाँसी ।
मुनत मौन ह्व रह्यो ठग्यो सो, सूर सब मति नासी ॥

१२

मीराबाई

इनका जन्म सन १४९९ में और मृत्यु सन् १५४७ में हुई। मीरा बाई जाधपुरके मेडता राठौर मरदार रतनमिहकी इकतीनी लडकी थी। इनका विवाह मेवाडके राजकुमार भोजम हुआ मगर विवाहक थोडे समय बाद ही ये विधवा हो गई। बचपनमे ही कृष्णके प्रति इनके हृदयमें अनुराग था। पतिकी मृत्युक पश्चात तो इन्हाने अपना मन पूणतया कृष्णभक्तिमें ही लगा दिया। इनकी भक्तिभावना यहाँ तक बढ़ी कि राजकुँकी मर्यादा जोर लोकलाजको छोडकर ये जनसाधारणके बीचमें कृष्णकी मतिके सामने नाचने-गाने लगी। इनका यह जाचरण इनके स्वजनाका पमन्द नहीं आया और इनका तरह तरहकी तकरीफें दी। इनके पदामें कुछ इस तरहकी बातोंका उल्लेख भी है। कहा जाता है कि अपन स्वजनाके घुरे व्यवहारसे दुखी होकर इन्हाने गास्वामी तुलसीदासजीको पत्र* लिखकर उनकी सम्मति मागी

* ऐतिहासिक दष्टिमे यह पत्रव्यवहार सदिग्ध है।

“मेरे मातपिताके मम हो, हरिभक्तह मुखदाई।
हमको कहा उचित करवो ह, सो लिखिये समुझाई॥”

इसके उत्तरमें गोस्वामीजीने यह शिभाप्रद पद लिखकर भेजा था

“जाके प्रिय न राम बैदेही।

तजिये तिन्हें काटि बैरी सम जद्यपि परम सनेही।”

इस प्रकार गोस्वामीजीकी सम्मति पाकर यह यात्राके लिए घरमें निकल पडी। मथुरा और वृन्दावनमें जाकर इन्होंने अपने आराध्यके गुणोका गान किया। इसके पश्चात ये द्वारिका गइ। वहाँ सन् १५४७ में इनका स्वगवास हा गया।

मीराकी गणना सगुणोपासक कवियोंमें की जाती है। इन्होंने श्रीकृष्णका अपने पति प्रियतम और स्वामीके रूपमें मानकर माधुम्य भावसे उनका गुणोका गान किया ह। पर मीराके आराध्य कही ता सूरके “यामकी भाँति सगुण और कही कबीरके रामकी भाँति निगुण दिखाई पडते ह। सगुण और निगुणक इस समन्वयने ही मीराक काव्यमें अलौकिकता भर दी है। सरलता, सरसता और स्वाभाविकता मीराके काव्यकी प्रधान विशेषतायें ह।

मीराके पदाङ्गी भाषा कही राजस्थानी, कही गुजराती और कही साहित्यिक ब्रज है। कुछ पद ऐसे भी हैं जो मिली जुली भाषामें लिखे गये ह। मीराके पदामें सगीतकी प्रधानता है। यही कारण ह कि मीराका काव्य केवल साहित्यिकाकी ही धरोहर न हाकर भक्ता और मगीतज्ञोकी भी अमूल्य थाती ह।

हिन्दीके गीति कवियामें मीराका स्थान बहुत ऊँचा ह।

(१)

मन रे परसि हरिके चरण।

सुभग सीतल कौबल कोमळ, त्रिविध ज्वाला हरण।

जिण चरण प्रह्लाद परसे, इन्द्र पदवी धरण॥

जिण चरण ध्रुव अटल कीने, राख जपनी सरण ।
 जिण चरण ब्रह्माड भेटयो, नख सिखां सिरी धरण ॥
 जिण चरण प्रभु परसि लीने, तरी गोतम धरण ।
 जिण चरण कालीनाग नाथ्यो, गोप-लीला-करण ॥
 जिण चरण गोबरधन धारयो, गव मघवा हरण ।
 दासि मीरा लाल गिरघर, अगम तारण तरण ॥

(२)

भज मन चरण-कैवल अविनासी ।

जेताइ दीस धरण गगन बिच, तेताइ सब उठ जाती ।
 कहा भयो तीरथ व्रत कीहे, कहा लिये करवत-कासी ॥
 इण देहीका गरब न करणा, माटीमें मिल जाती ।
 यो सत्तार चहरकी बाजो, साझ पडचां उठ जाती ॥
 कहा भयो है भगवां पहरयां, घर तज भये सयासी ।
 जोगी होय जुगत नहिं जाणी, उलट जनम फिर आसी ॥
 अरज कहें अबला कर जोडे, स्याम तुम्हारी दासी ।
 मीराके प्रभु गिरघर नागर, काटो जमकी कांसी ॥

(३)

देखत राम हँसे सुदामा कू देखत राम हँसे ।

फाटो तो फुलडियां पाव उभाणे, चलतें चरण घसे ।
 बालपणेका मोत सुदामा, अब क्यू दूर वसे ॥
 कहा भावजने भेंट पठाई, ताडुल तीन पसे ।
 कित गई प्रभु मोरी टूटी टपरिया, हीरा मोती लाल वसे ॥
 कित गई प्रभु मारी गडअन बछिया, द्वारा बीच हसती फसे ।
 मीराके प्रभु हरि अविनासी, सरणे तोरे वसे ॥

(४)

फागुनके दिन चार होली खेल मना रे ।
बिन करताल पखावज बाजं अणहृदकी झणकार रे ॥
बिनि सुर राग छत्तीसू गाबं रोम रोम रणकार रे ।
सील सतौखकी बेसर घोळी प्रेम प्रीत पिचकार रे ॥
उडत गुलाल लाल भयो अबर बरसत रग जपार रे ।
घटके पट सब खोल दिये ह लोकलाज सब डार रे ॥
होलि खेलि पीव घर आये सोइ प्यारी पिय प्यार रे ।
मीराके प्रभु गिरघर नागर चरण-बँवल बलिहार रे ॥

(५)

कोई कहियो रे प्रभु जावनकी ।

आवन की मन भावन की ॥

आपु न आव, लिख नहिं भेज, बाण परी ललचावनकी ।
ए दोइ मन कह्यो नहिं मान, नदिया बहै जसे सावनकी ॥
कहा कहूँ कछु बस नहिं मेरो, पाँख नहिं उड जावनकी ।
मीराके प्रभु, कब रे मिलोगे, चेरी भयो तेरे दावनकी ॥

(६)

म्हारा जनम मरण रा साथी, धाँने नहिं बिसरूँ दिन राती ।
तुम देख्यां धिन कल न पडत है, जानत मोरी छाती ।
ऊँचो चढ़ चढ़ पय निहारूँ, रोय रोय अँखियाँ राती ॥
यो सतार सकल जग झूठो, झूठा कुलरा याती ।
दोउ कर जोडघाँ अरज करत हूँ, सुण लीज्यो मेरी बाती ॥
यो मन मेरो बडो हरामी, ज्यू भदमातो हाथी ।
सतगुरु हाथ धरयो तिर ऊपर अकुस द्वे समपानी ॥

पल पल तेरा रूप निहाहूँ, निरख निरख सुख पाती ।
 मीराके प्रभु गिरधर नागर हरि चरणा चित राती ॥

(७)

हेरी म तो प्रेम दिवानी, मेरा दरद न जाणे कोय ।
 सूली ऊपर सेज हमारी, किस विष सोणा होय ।
 गगन मडल प सेज पियाकी, किस विष मिलणा होय ॥
 घायलकी गति घायल जान, की जिन लाई होय ।
 जीहरीकी गति जीहरी जान, की जिन जीहर होय ॥
 दरदकी मारी बन बन डोलू, वंद मिल्या नहि कोय ।
 'मीरा' की प्रभु पीर मिटगी, जब बद साँवलिया होय ॥

(८)

मेरे तरे एक रामनाम दूसरा न कोई ।
 दूसरा न कोई साथो सकल लोक जोई ॥
 भाई छोडघा बधु छोडघा छोडघा सगासोई ।
 साथु सग बठ बठ लोकलाज खोई ॥
 भगत देख राजी हुई जगत देख रोई ।
 प्रेम नीर सोंच सोंच विषबेल धोई ॥
 दधि मय घत काढ लियो डार दई छोई ।
 राणा विषको प्यालो भेज्यो पाय मगन होई ॥
 अब तो बात फल पडो जाणे सब कोई ।
 मीरा राम लगण लगी होणी होय सो होई ॥

(९)

जबसे मोहि नदनंदन दृष्टि पडघो भाई ।
 तबसे परलोक लोक कछू ना सोहाई ॥

मोरनकी चन्द्रकला सीस मुकुट सोहै ।
 केसरको तिलक भाल तीन लोक मोह ॥
 कुडलकी अलक झलक कपोलन पर छाई ।
 मानो मीन सरवर तजि मकर मिलन आई ॥
 कुटिल भृकुटि तिलक भाल चितवनमें टोना ।
 खजन अह मधुप मीन भूले मृग छौना ॥
 सुंदर अति नासिका सुप्रीव तीन रेखा ।
 नटवर प्रभु भेख धरे, रूप अति बिसेषा ॥
 अघर बिब अहन नन मधुर मद हासी ।
 दसन दमक दाडिम दुति चमके चपला-सी ॥
 क्षुद्रघट किकनी अनूप धुनि सोहाई ।
 गिरधर अग अग मीरा बलि जाई ॥

(१०)

मत जा मत जा मत जा जोगी,
 पांय पर्ले म चेरी तेरी हों ॥

प्रेम भगतिका पडो ही यारो, हमकू गल बताजा ॥
 अगर चदनकी चिता रचाऊँ, अपने हाय जलाजा ॥
 जल बल भई भस्मकी ढेरी, अपने अग लगाजा ॥
 मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, जोतमें जोत मिलाजा ॥

नन्ददास

इनके जन्म और मरणकी वास्तव टोक पता नहीं चलता। यह भी प्रसिद्ध है कि ये मूरदासके समकालीन थे और तुलसीदासजीके गुरुभाई थे। इनका कविता-काल सन् १५६८ के आसपास समझा जाता है। अष्टछाप आठ कवियोंमें से कविताके सौन्दर्यकी दृष्टिसे मूरदासके बाद इन्हीका नाम आता है। इन्होंने भाषामें भावोका बड़ी सुन्दरतासे जड़ दिया है। इनका रचनाकौशलका स्पष्ट रूप लामान इन्होंने 'जडिया की उपाधि दी है।

ये एक कुशल संगीतन भी थे। इनके प्रकाशित ग्रन्थोंमें केवल दो ग्रन्थ ही मुख्य हैं — एक 'रास पचाध्यायी' और दूसरा 'भ्रमरगीत'।

'रास पचाध्यायी' का विषय कृष्णकी रासलीला है। भाषा ठेठ अलंकारमयी ब्रज है। 'भ्रमरगीत' की कथाका आधार मूरके भ्रमरगीतकी भाँति भागवतका १० वाँ स्कन्ध है। नन्ददासके भ्रमरगीतमें गापियके तक वितक और सवादाकी प्रधानता है। मूरका भ्रमरगीत अनुभूति-प्रधान है और इनका तक प्रधान। भाषा संस्कृतमयी है और अलंकारोंमें भरी हुई है।

भ्रमरगीत

ऊधो को उपनेस सुनो, ब्रज नागरी ।

रूप सील लावय सब गुन आगरी ॥

प्रेमधुजा, रसदपिनी, उपजावन सुख पुज ।

सुन्दर स्वाम विलासिनी, नव धूदावन कुज ॥

सुना ब्रज नागरी ॥

कहन स्याम-सदेस एक, हौं तुम प आयो ।
 कहन समय एकात कहैं, औसर नहि पायो ॥
 सोचत ही मनमें रह्यो, कब पाऊँ इक ठाऊँ ।
 कहि सदेस नंदलाल को, बहुरि मधुपुरी जाऊँ ॥

सुनो ब्रज-नागरी ॥

सुनत स्याम को नाम, ग्राम घरकी सुधि भूल्यो ।
 भरि आनद रस हृदय, प्रेम बेली द्रुम फूल्यो ॥
 पुलक रोम सब अग भये, भरि आये जल नन ।
 कठ धुटे गद गद गिरा, बोले जात न बन ॥

विवस्था प्रेमकी ॥

उर्धासन बठारि, बहुरि परिकम्मा दीहीं ।
 स्याम-सखा निज जानि, बहुरि सेवा बहु कीहीं ॥
 बृक्षत सुधि नदलालकी, विहँसत मुख ब्रजबाल ।
 नीके ह बलवीरजू, धीलति वचन रसाल ॥

सखा सुन स्यामक ॥

कुसल राम अरु स्याम, कुसल सब सगी उनके ।
 जदुकुल सिगरे कुसल, परम आनद सबनके ॥
 पूछन ब्रज कुसलात को, हौं पठघी तुम तीर ।
 मिलिह धोरे दिनन में, जनि जिय होउ अधीर ॥

सुनो ब्रज-नागरी ॥

सुनि मोहन-सदेश, रूप सुमिरन ह्व आयो ।
 पुलकित आनन-कमल, अग आवेस जनायो ॥
 विह्वल ह्व घरनी परी, ब्रज बनिता मुरझाय ।
 द जल छोट प्रबोधहीं, ऊषी बन मुनाय ॥

सुनो ब्रज-नागरी ॥

रसखान

ये दिल्लीके पठान सरदार थे। इनका जन्म सन् १५८४ में हुआ। मृत्यु कब हुई यह नहीं कहा जा सकता। हिन्दीके मुसलमान कवियोंमें इनका स्थान बहुत ऊँचा है। गोस्वामी विठ्ठलदासजीसे दीक्षा लेकर ये कृष्णभक्तिकी कविता करने लगे। इनकी कवितामें प्रेमकी प्रधानता है। इन्होंने प्रेमका बड़ा ऊँचा और सुन्दर रूप दिया है।

रसखानकी भाषा सरल और चलती हुई ब्रज है। सबया छन्द लिखनेमें तो ये अपना सानी ही नहीं रखते। इनके लिखे हुए दो ग्रन्थ मिलते हैं — प्रेमवाटिका और 'सुजान रसखान'। पहलेमें केवल ५२ दाहे और दूसरेमें १२८ छन्द हैं। इस तरह इनकी कविता यद्यपि अधिक नहीं है, पर ह बड़ी मार्मिक और भावपूर्ण।

प्रेमवाटिका

(१)

प्रेम-अपनि श्री राधिका, प्रेम-बरन नैद-नद ।
प्रेम वाटिकाके बोज, माली मालिन द्वद ॥

(२)

प्रेम हरी की रूप है, त्यों हरि प्रेम-स्वरूप ।
एक होइ द्वमें लस, ज्यों सूरज अह धूप ॥

(३)

कमल ततुसों छीन अह, कठिन खडगकी धार ।
अति सूषो, टेढो बहुरि, प्रेम पय अनिवार ॥

(४)

प्रेम प्रेम सब षोड कहै, प्रेम न जानत शोय ।
जो जन जान प्रेम तो, मर जगत बयो रोय ॥

(५)

सास्त्रन पढि पडित भये, क मौलवी कुरान ।
जु प प्रेम जान्यो नहीं, कहा कियो रसखान ॥

(६)

हरिके सब आधीन पै, हरी प्रेम-आधीन ।
याही तैं हरि आपु ही, याहि बडप्पन दीन ॥

(७)

डर सदा चाहै न कछु, सहै सब जे होय ।
रहै एकरस चाहि क, प्रेम बखानो सोय ॥

सुजान रसखान

(१)

मानुष हौं, तो वही रसखानि,
बसौं ब्रज-गोकुल गावके ग्वारन ।
जो पसु हौं, तो कहा बसु मेरो,
चरौं नित नदकी धेनु मँहारन ॥
पाहन हौं, तो वही गिरि कौ,
जो घरचो कर छत्र पुरदर धारन ।
जो खग हौं, तो बसेरो करौं,
मिलि कालि दी फूल कदम्बकी डारन ॥

(२)

या लकुटी अह कामरिया पर,
राज तिहें पुर कौ तजि डारौं ।

४९

आठहूँ सिद्धि नवो निधिको मुख,
 नदकी गाय घराइ बिसारौं ॥
 इन आखिन सा रसखानि कर्षौं,
 श्रजके बन-बाग-तडाग निहारौं ।
 कोटिब ही कलघोतके धाम,
 करीलके कुजन ऊपर वारौं ॥

(३)

मोर पखा सिर ऊपर राखि हौं,
 गुजवी माल गरे पहिरींगी ।
 ओढि पिताम्बर, ल लकुटी बन,
 गोधन ग्वारिन सग फिरौंगी ॥
 भावतो वोहि मेरो रसखानि, सो,
 तेरे कहे सब स्वांग भरौंगी ।
 प मुरली मुरलीघर की,
 अधरान घरी अधरा न धरौंगी ॥

(४)

सेस गनेस महेस दिनेस,
 सुरेसहु जाहि निरतर गाव ।
 जाहि अनादि अनत जलड,
 अछेद अभेद सुवेद धताव ॥
 नारद से मुक पास रट,
 पचि हारें तऊ पुनि पार न पाव ।
 ताहि अहीर की छोहरियाँ
 छछिया भरि छाछ प नाच नचाव ॥

रहीम

इनका पूरा नाम अब्दुल रहीम खानखाना था। ये अकबरक
नामापति प्रधानमन्त्री और नवरत्नामे से एक थे। ये बड़े अनुभवी
नदार और बलाप्रिय व्यक्ति थे। ब्रज, अवधी, मस्कृत, अरबी और
तारमी आदि भाषाओं पर इनका पूरा अधिकार था। परोपकार
और दानमें ये लासानी थे। गगकी एक कविता पर मग्य होकर
न्होंने उसको छत्तीस लाख रुपये दे डाले थे। अकबरकी मृत्युक बाद
ने जहागीरके दरवारमें भी रहे, पर इनके आखिरी दिन बड़े ही
फट और मकटमें गीते।

‘रहीम सतमई’, ‘बरवै नायिका भेद’, ‘मदनाटक’, रास
‘चाध्यायी’ जादि इनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। इन्होंने पूर्वी और पश्चिमी
(अवधी और ब्रज) दोनों ही प्रचलित काव्य भाषाओंमें रचनायें की हैं।
इनकी भाषा सरल और उक्तिया लुभावनी ह। इनका सबसे
अधिक प्रिय छंद दोहा रहा है।

दोहा

(१)

तरवर फल नाहि खात ह, सरवर पियाहि न पान ।
बहि रहीम पर काज हित, सपति सुर्वाहि सुजान ॥

(२)

जो रहीम मन हाय है, मनसा कहुँ किन जाहि ।
जलमें जो छाया परी, काया भीजत नाहि ॥

(३)

बहि रहीम सपति सगे, बनत बहुत बहु रीत ।
बिपति कसौटी जे कसे, तेई सांचे भीत ॥

(४)

तब ही लग जीबो भलो, दीबो पर न धीम ।
बिन दीबो जीबो जगत, हमोह न रुचै रहीम ॥

(५)

रहिमन देखि बडेन को, लघु न दीजिये डारि ।
जहा काम आवै सुई, कहा करे तरवारि ॥

(६)

अमर-धेलि बिन मूल को, प्रतिपालत है ताहि ।
रहिमन ऐसे प्रभुहि तजि, खोजत फिरिये काहि ॥

(७)

सर सूखे पछी उड, ओरे सरन समाहि ।
दीन मीन बिन परछके, कहू रहीम कहै जाहि ॥

(८)

धूर धरत निज गीन पर, कहू रहीम किहि काज ।
जिहि रज मुनि पन्नी तरी, सो ढड़त गजरज ॥

(९)

कहू रहीम कसे निभ, बेर केह को सग ।
वे डोलत रस आपने, उनके फाटत अग ॥

(१०)

कमला बिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोय ।
पुरुष पुरातन की बधू, क्यों न चचला होय ॥

(११)

रहिमन बहत मुपेट सों, क्यों न भयो तू पीठ ।
रोतै अनरीतै बरत, भरो बिगारत दीठ ॥

(१२)

यो रहीम सुख होत है, बढत देखि निज गोत ।
ज्यो बडरी अँखिया निरखि, आखिनको सुख होत ॥

(१३)

ओछो काम बडे कर, तौ न बडाई होय ।
ज्यो रहीम हनुमत को, गिरधर कहै न कोय ॥

(१४)

जो बढेनको लघु कहौ, नहिं रहीम घटि जाहिं ।
गिरिधर मुरलीधर कहे, कछु दुख मानत नाहिं ॥

(१५)

प्रीतम छबि नग्ननि बसी, पर छबि कहा समाय ।
भरी सराय रहीम लखि, आप पणिक फिरि जाय ॥

(१६)

रहिमन रिस सहि तजत नहिं, बडे प्रीतिको पौरि ।
मूकन मारत आवई, नौद बिचारी दौरि ॥

(१७)

ज्यों रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय ।
बारे उजियारो लग, बड्डे अँधेरो होय ॥

(१८)

घनि रहीम जल पक को, लघु जिय पियत अघाय ।
उदधि बडाई कौन है, जगत पिपासो जाय ॥

(१९)

गुन तें लेत रहीम जन, सलिल कूप तें काढ़ि ।
कूपहें नें कहुँ होत है, मन काहू को बाढ़ि ॥

(२०)

रहिमन निज मन की व्यथा, मनहीं राखी गोय ।
मुनि अठिलहं लोग सब, बाँटि न लँह कोय ॥

(२१)

खर खून पासी खुसी, बँर प्रीति मधुपान ।
रहिमन दाबे ना दबे, जानत सकल जहान ॥

(२२)

छिमा बदन को चाहिये, छोटन को उतपात ।
फा रहीम हरि को घटघो, जो भृगु मारी लात ॥

(२३)

रहिमन अँमुया नन डरि, जिय दु ख प्रकट करेइ ।
जाको घर तें काढ़िये, बयो न भेद कह देइ ॥

(२४)

नन सलोने अघर मधु, कहु रहीम घटि कौन ।
मीठी भाव लोन पर, अह मीठे पर लौन ॥

(२५)

रहिमन ब्याह बियाधि ह, सकहु तो जाहु बचाइ ।
पाँयन बेरी परत ह, डोल बजाइ बजाइ ॥

(२६)

रहिमन यहि ससार में, सब सो मिलिये धाइ ।
ना जाने केहि हपमें, नारायण मिल जाइ ॥

(२७)

अब रहीम मुसकिल परी, गाढ़े ढोऊ काम ।
साँचे से तो जग नहीं, झूठे मिले न राम ॥

केशवदास

इनका जन्म मन् १५४६ में हुआ और मृत्यु १६१८ ई० में।
 ये रीतिकालके प्रबलतक और प्रथम कवि थे। ये अपनी
 कविताकी क्लिष्टताके लिए प्रसिद्ध ह। बहावत ह —

‘कविको देन न चहै बिदाई।

पूछै केशवकी कविताई॥

केशव सस्कृतके महापंडित थे। इम पांडित्यक कारण ही उनकी
 कवितामें दुरूहता और क्लिष्टता जा गई है। केशव आडछाके राजा
 इन्द्रजीतसिंहके दरबारमें रहने थे। वे इनका और इनकी कविताका
 बड़ा आदर करत थे। इन्द्रजीतसिंहकी मृत्युक बाद जब आडछाका
 राज्य वीरसिंहदेवने हाथमें चला गया, ता ये कुछ समय तक
 उनके दरबार में भी रहे। पर वहाँ इनका मन अधिक नहीं लगा।
 और ये गंगा-तट पर जाकर रहने लगे, जहाँ सन् १६१८ में
 इनका स्वर्गवाम हो गया।

ये रीतिकाल के प्रथम आचार्य थे। इनक ये ग्रंथ मशहूर ह —

(१) राम अलकृत मजरी, (२) नखसिख, (३) रसिक
 प्रिया, (४) कविप्रिया (५) रामचंद्रिका, (६) विज्ञान गीता,
 (७) रतनबावनी, (८) जहागीर जस चंद्रिका और (९) वीरसिंह
 देव चरित।

इन ग्रंथामें काव्यकी दृष्टिसे कविप्रिया रसिकप्रिया, और राम
 चंद्रिका श्रेष्ठ है। कविप्रियामें अठकार तथा अय काव्यागोत्रा विवेचन
 ह। रसिकप्रियामें शृंगार रसका वर्णन है। रामचंद्रिका रामका
 चरित लेकर लिखी गई ह और रामायणके बाद रामभक्ति पर लिखी
 गई दूसरी सुंदर प्रबन्ध रचना ह।

केशवको आशोकाने हृदयहीन अलंकारवादी कवि कहा है। केशवकी कवितामें उनके पांडित्यका दर्शन ही अधिक होता है। रामचंद्रिका जैसी मुद्दर प्रबंध रचना भी केवल अलंकार और छंदाकी नुमाइश बनकर रह गई है।

इन ग्रंथोंमें कुछ सूक्तियाँ भी हैं। केशव राम अलंकार जीर पिगलने माने हुए आचार्य थे। मुक्तक काव्य लिखनेमें वे सिद्धहस्त थे। कथापत्रयनकी शैलीमें रचना करनेमें तो वे अपना कोढ़ सानी ही नहीं रखते।

केशवके काव्यकी भाषा ब्रज है जिसमें बुंदेलखंडी शब्दोंका प्रयोग भी मिलता है। संस्कृत शब्दोंकी प्रचुरताके कारण केशवकी भाषामें गरसता और सरलताका संवन्ध जभाव है।

अगद-रावण-संवाद

[यह प्रसंग 'रामचंद्रिका' में लिया गया है। राम रावण युद्धसे पूर्व रावणको आतिथी वार ममत्तानेके लिये अगद रामके दूतके रूपमें रावणके दरवारमें आते हैं। अगद और रावणके बीचके संवाद यहाँ दिये गये हैं।]

प्रतिहार

पत्नी, विरचि ! मौन बेद, जीव ! सोर छडि रे ।
कुबेर ! घेर कँ वही, न जच्छ भीर मडि रे ॥
दिनेस ! जाइ दूर बठु नारदादि सग ही ।
न बोलु, चद मन्बुद्धि ! इद्र की सभा नहीं ॥

अगद मों मुनि बानी ।

चित्त महा रिस्त आनी ॥

ठेलि के लोग अनसे ।

जाय सभा महँ बसे ॥

कौन हो, पठचे सो कौने, ह्या तुम्हें कहा काम ह ?
जाति बानर, लकनायक—दूत, अगद नाम ह ॥
कौन है, वह बाधि क हम बेह-पूछ सब दही ?
लक जारि सहारि अच्छ गयो, सो बात क्या कही ?
कौन के सुत ? बालिके, वह कौन बालि, न जानियो ?
काख चापि तुम्हें जो सागर सात हात बखानियो ॥
ह कहाँ वह ? वीर अगद देवलोक बताइयो ।
क्या गयो ? रघुनाथ वान विमान बठि सिधाइयो ॥
लकनायक को ? विभीषन देव दूखन को दह ।
मोहि जीवत होहि कयो ? जग तोहि जीवित को कह ?
मोहि को जग मारिह ? दुरबुद्धि तेरिय जानिये ।

राम को काम कहा ? रिपु जीतहि, कौन कब रिपु जीत्यो कहा ?
बालि बली, छलसी, भृगुनदन-गव हरयो, द्विज दीन महा ॥
दीन सो कयो, छित्तिछत्र हत्यो, बिन प्रानन हहय राज कियो ।
हहय कौन ? वहं, बिसरयो ? जिन खेलत ही तोहि बाध लियो ।

अगद

सिधु तरयो उनको बनरा, तुम प धनुरेख गयो न तरी ।
बानर बांधत सो न बंध्यो, उन बारिधि बांधि क बाट करी ।
श्री रघुनाथ प्रताप को घात तुम्ह, दसकठ, न जानि परी ?
तेलहु-तूलहु पूछ जरी न जरी, जरी लक जराइ जरी ॥

रावण

महामीचु बासी सदा पाई धोव । प्रतिहार ह्व क कृपा सूर जोव ॥
छपानाय लीने रह छत्र जाको । करेगो कहा शत्रु सुप्रीव ताके ॥
सका मेघमाला, सिखी पाककारी । कर वीतवाली महादधारी ॥
पढ़ बेद ब्रह्मा सदा द्वार जाके । कहा बापुरो शत्रु सुप्रीव ताके ॥

अगद

पेट चढ़घो, पलना-पलका चढ़ि, पालकि हू चढ़ि, मोह मढघौ रे ॥
 चौक चढ़घौ, चितसारि चढ़घौ, गज-भाजि चढ़घौ गढ़ गव चढ़घौ रे ॥
 घ्योम विमान चढ़घौ ही रह्यौ, फहि केसव, सो बबहूँ न पढ़घौ रे ॥
 चेतत नाह, रह्यौ चढ़ि चित्त, सो चाहत मूढ चिताहूँ चढ़घौ रे ॥

रावण

निकारघौ जु भैया, लियौ राज जाकी ।
 दियो काठि कं जू, कहा प्राप्त ताकी ॥
 लिये भानराली, कहीं बात तोसौं ।
 सु कसे जुरे राम सप्राम मोसौं ॥

अगद

हायो न साथी न घोरे न चरे न गाउं न ठाउं-कुठाउं बिलह ।
 तात न मात न पुत्र न मित्र न वित्त न तीय कहुँ संग रह ॥
 केसव, काम को राम बिसारत, और निकाम ते काम न ऐह ।
 चेति रे चेति अजौ चित अतर, अतकलोक अवेलोई जह ॥

रावण

डर गाव विप्र, अनाथ जो भाज । परद्रव्य छाड परस्त्रीहि लाज ॥
 परद्रोह जासौं न होव रती को । सो कसे लर बेस कीहे जती की ॥

गँद करघो म खेल की हर गिरि, केसोदास ।
 सीस चढ़ाये आपने कमल समान सहास ॥

अगद

जमो तुम कहत उठायो एक हर गिरि,
 ऐसे कोटि कपिनके बालक उठावहीं ।
 बाटे जो कहत सीस, बाटत घनेरे घाघ,
 भगरके खेल क्यों मुभट पद पावहीं ॥

जीत्यो जो सुरेस रन, साप रिलि-नारि ही कौ,
 समझहु, हम द्विज-नाते समुझायहीं ।
 गही राम-पाँइ, मुख पाँइ कर तपो तप,
 सीताजी को देख, देख दुहुभो यजावहीं ॥

रायण

जपो-तपो विप्रन छिप्र ही हरी । अदेव द्वेषी सब देव सहरी ।
 सिया न दहों, यह नेम जी परी । अमानुसी भूमि अवानरी करी ॥

अगद

पाहन तँ पतिनी करी पावन, टूक कियो धनु हू हर की रे ।
 छत्र बिहीन करी छिनमें छिति, गब हरघो तिनके बरकौरे ॥
 पबत पुज पुरनिके पात समान तरे, अजहूँ धरकौ रे ।
 होइ नराइन हू प न ये गुन, कौन यहाँ नर, धानर को रे ?

रायण

देहि अगद राज तो कहूँ, मारि बानर राज कौ ।
 बाँधि देहि बिभीषन अरु फोरि सेतु समाज कौ ॥
 पछ जारहि अच्छ रिपुका, पाइ लागहि रुद्रके ।
 सीय को तब देहुँ रामहि, पार जाइँ समुद्र के ॥

अगद

लक लाय दिपो बली हनुमत सतन गाइयो ।
 सिंधु बाँधत सोधि क नल छीरछोट बहाइयो ॥
 ताहि तोहि समेत, अघ, उखारि हौ उलटी करी ।
 आजु राज कहा बिभीषन बठि ह तेहि तँ डरी ॥
 जगद रावनको मुकुट ल करि उडयो सुजान ।
 भानी चल्यो जम-लोक को दसतिरको प्रस्थान ॥

विहारी

विहारीलाल भायुर चौबे ब्राह्मण थे। इनका जन्म सन १६०४ में जीर मृत्यु १६६४ ई० में हुई। बाल्यावस्था बुंदेलखंडमें और तरुणावस्था उनकी ममुराल मथुरामें यतीत हुई। मथुरामें जयपुरके मिर्जा राजा जयसिंहके दरबारमें जाकर वे सम्मानसे रहने लगे। कहा जाता है कि जिस समय ये जयपुर पहुँचे उस समय राजा अपने राजपाटको भूलकर अपनी नई रानीके प्रेममें इतने लीन थे कि उन्हें राजकाजके लिए भी फुरसत नहीं थी। विहारीने तत्काल यह दोहा लिखकर उनके पाम पहुँचाया -

‘नहि परागु नहि मधुर मधु नहि विकास इहि काल ।
अली कली ही मों बँध्या आगँ कौन हवाल ॥’

इस दोहेका अमर महाराजके दिल पर बहुत हुआ। इसने उन्हें बन्धन-भरायण बना दिया। वे इतने प्रमत्त हुए कि विहारीको जागीर देकर उन्होंने जयपुरमें ही बसा लिया और उनके प्रत्येक दाहे पर एक आर्षी देनेका वचन दिया। परिणामस्वरूप विहारीने ७०० दाहाका एक मग्नह ‘विहारी मतमई’ के नामसे तयार किया।

शृंगार रमके ग्रथामें जितना आदर ‘विहारी मतमई’ का हुआ, उतना जीर किमी ग्रथका नहीं हुआ। पचासमें भी अधिक टाकवें अवनव अिम ग्रथकी हा चुकी है और हानी जा रही है। अथ गाभीयकी दृष्टिमें मतसइने दाह अनूठे हैं। विहारीने गागरमें सागर भरा है। किमीने ठीक ही कहा है

सतमेया के दाहरे ज्या नाकिबके तीर ।
दमनमें छाटे लगे, बंधे मकर गरीर ॥’

दोहा

(१)

मेरी भव बाधा हरी, राधा नागरि सोइ ।
जा तनकी शाई पर, स्याम हरित छुति हाइ ॥

(२)

अधर धरत हरिके परत, ओठ दीठ-पट जोति ।
हरित बासकी बासुरी, इन्द्रधनुष रग होति ॥

(३)

इन दुखिया अँखियान कौ, मुख सिरजोई नाहि ।
देख बन न देखते, अनदेख अकुलाहि ॥

(४)

जो चाहत, चटक न घट, मलौ होइ न मित्त ।
रज राजसु न छुवाइये, नेह चीकने चित्त ॥

(५)

चिर जीवी जोरी जुर, बयो न सनेह गभीर ।
को घटि, ये बृषभानुजा, ये हलधरके वीर ॥

(६)

कहलाने एकत बसत, अहि मयूर मृग बाध ।
जगत तपोवन सो कियो, दीरघ-शाघ निदाघ ॥

(७)

तन्त्री-नाद, कवित्त रस, सरस राग, रति रग ।
अनमूडे बूडे, तरे, जे बूडे सब अग ॥

(८)

इक भीजे चहले परे, बूडे बहे ह्यार ।
किते न अवगुन जग करत, नै व चढ़ती बार ॥

(९)

बढत बढत सपति-सलिल, मन सरोज बड़ि जाइ ।
घटत घटत पुनि ना घट, बध समूल कुम्हिलाइ ॥

(१०)

जिन दिन देखे वे कुसुम, बीति सो गई बहार ।
अब अलि रही गुलाबमें, अपत कँटीली डार ॥

(११)

इहि आशा अटकयो रहै, अलि गुलाबके मूल ।
हुइ ह बहुरि बसत ऋतु, इन डारन वे फूल ॥

(१२)

कर ले सूघि सराहि क, रहै सबे गहि भौन ।
गधी गध गुलाबको, गेवई गाहक कौन ॥

(१३)

कनक कनक तें सौगुनी, मादकता अधिकाइ ।
उहि खाये बीराय जग, इहि पाये बीराइ ॥

(१४)

बडे न हूजे गुनन दिन, विरद-बडाई पाइ ॥
कहत धतूरे सौ कनक, गहनौ गढ़घो न जाइ ॥

(१५)

या अनुरागो चित्त की, गति समुझ नहि कोय ।
ज्यों ज्या बूड स्याम रंग, त्यों त्यों उज्ज्वल होय ॥

(१६)

दोरघ सांत न लेइ दुख, सुख साईं मति भूल ।
दर्ई दर्ई बपो करत है, दर्ई दर्ई सु कबूल ॥

(१७)

नहि परागु, नहि मधुरमधु, नहि विकासइहि काल ।
अली कली ही सों बॅप्यो, आगे कौन हवाल ॥

(१८)

जप माला, छापा तिलक, सर न एकौ काम ।
मन काँच नाच वृया, साच राँच राम ॥

(१९)

सीस मुकुट, कटि-बाछनी, कर मुरली, उर-माल ।
यहि धानिक मो मन बसो, सदा बिहारो लाल ॥

(२०)

कब कौ टेरतु दीन रट, होत न स्याम सहाइ ।
तुमहूँ लागी जगत-गुरु जगनायक, जग बाइ ॥

(२१)

गड रचना, बहनी, अलक, चितवनि, भीह, कमान ।
आधु बँकाई ही चढ़, तरनि तुरगम तान ॥

(२२)

लिखन बठि जाकी सबी, नहि नहि गरब गहर ।
भए न केते जगत के, चतुर चितेरे कूर ।

(२३)

को कहि सक बडेनु सों, लखे बडीयो भूल ।
दीने दर्ई गुलाबकी, इन डारनु वे फल ॥

(२४)

को छूटघो इति जाल परि, कत, कुरग, अकुलात ।
ज्यो ज्यो गुरमि भज्यो चहत, त्यो त्यो उरमत जात ॥

(२५)

ज्यो ह्व हों त्यो होउंगो, हों हरि अपनी चाल ।
हठ न करी, जति कठिनु है, मा तारिबो, गुपाल ॥

१८

भूपण

इनका जन्म सन १६१४ में हुआ और मृत्यु १७१६ में।

रीतिकालके कवियोंमें भूपण ही एक ऐसा कवि है, जो राजस्वनी वाणीसे विलासितामें डूबी जनतामें प्राण फूकनेका करते पाये जाते हैं। भूपण श्रुंगार कालक वीर कवि हैं। वास्तविक नामका पता नहीं। 'भूपण तो उपाधि है जो चित्रसालकी राजा रुद्रने इनकी कविता पर रीझकर इन्हें प्रदान की थी।

भूपण अनेक राजाओंके दरबारोंमें रह कर शिवाजी छत्रसालका छोड़कर दूसरे आश्रयदाता इन्हें नहीं रुके। शिवाजीने इनके एक छंद पर ही लाला रुपये दंड डाले थे। पन्नातरश छत्रम कहते हैं इनके आदरके लिए इनकी पालकीका कथा लगाया था। कारण है कि भूपणने इन दोनों ही आश्रयदाताओंका मुक्तगुणगान किया है।

भूपणकी कवितामें न केवल आश्रयदाताओंकी प्रशंसा है बल्कि उसमें तत्कालीन परिस्थितियोंका सच्चा चित्रण भी है। वह राष्ट्रीय भावनाम जोतप्राप्त है। भूपणके लिये तीन ग्रंथ मिलते हैं (१) शिवराज भूपण (२) शिवा वावनी और (३) छत्रसाल दण्ड

तीनों ही ग्रथामें ओजस्विनी भाषाम लियी गयी वीररत्नकी रचनायें हैं। ह्रीं शब्दांगी ताडमराड और व्याकरणकी अवहलना अवश्य ही इनके कायमें वही कही खटवती हैं।

गणेश वदना

(१)

बिकट जपार नवपथके चलेको छम,
हरन करन विजनासे ग्रह ध्याइये ।
यहि लोक परलोक सुफल करन,
कोहनदसे चरन हिय आनिके जुडाइये ॥
अल्पुल कलित कपोल, ध्यान ललित,
आनद रूप सरितमें भूषण अहाइये ।
पापतरु भजन, विघन गड गजन,
जगत-मन रजन, द्विरद मुख गाइये ॥

(२)

कामिनी फत सो, जामिनी चंद सो,
दामिनी पावस मेघ घटा सो ।
कीरति दान सा, सुरति ज्ञान सो,
प्रीति बडी सम्मान महा सो ॥
भूषण भूषण सो तरुनो,
नलिनी नव भूषण देव प्रभा सो ।
जाहिर चारिहु ओर जहान
लस हिंदुवान खुमान सिवा सो ॥

(३)

इंद्र निज हेरत फिरत गज इंद्र अरु
इंद्रको अनुज हेर दुग्ध नदीसको ।

भूषण भनत सुर सरिताको हस हेर
 बिधि हर हसको घबोर रजनीसको ॥
 साहि तन सिथराज करनी करी है त जु
 होत है अचम्भो देव कोटियो ततीसको ।
 पावत न हेरे तेरे जस म हिराने निज
 गिरिषो गिरीस हेर गिरजा गिरीसको ॥

(४)

तो कर सो टिति छाजत दान है,
 दान हूँ सा अति तो कर छाज ।
 त ही गुनीकी बडाई सज अरु
 तेरी बडाई गुनी सब साज ॥
 भूषण तोहि सो राज बिराजत
 राज सों तू सिवराज बिराज ।
 तो बलसो गढ़ कोट गज अरु
 तू गढ कोटनके बल गाज ॥

(५)

साजि चतुरग वीर रग में तुरग चढि,
 सरजा सिवाजी जग जीतन चलत है ।
 भयण भनत नाद बिहद भगारनके
 नदी नद मद गबरनके रलत है ॥
 ऐल फल खल भल खल्कमें गल गल,
 गजनकी ठल पल सल उसलत है ।
 तारा सो तरनि घूरि धारा में लगत जिमि,
 धारा पर पारा पारावार या हलत है ॥

(६)

राजत झखण्ड तेज छाजत सुजस बडो
गाजत गणद दिगज न हिय सालको ।
जाहि के प्रताप सो मलीन आफताप होत
ताप तजि दुजन करत बहु एयालको ॥
साजि सजि गज तुरी पदरि कतार दोहे
भूयण भन्त ऐसो दीन प्रतिपाल को ?
और राव राजा एक मनमें न त्याऊँ अब
साहूको सराहौं क सराहौं छत्रसालको ॥

१९

नामदेव

महाराष्ट्रके भक्तोंमें नामदेव बड़े मशहूर भक्त हुए हैं। इनका जन्म पठरपुरमें सन् १२७० में और मृत्यु सन् १२५० में हुई। यह जातिके छीपा थे और काम दर्जीका करते थे। मत लाग सारे दशका भ्रमण किया करत थे, इसलिए ये अपनी भाषाक माथ माथ हिन्दीमें भी लोगका उपदेश दिया करते थे। नामदेवने भी मराठीके साथ-साथ हिन्दीमें भी रचनायें की हैं। बचपनसे ही इनकी रुचि ईश्वर भक्तिकी ओर थी। इन्होंने अपने माहात्म्यसे साबित कर दिया कि—

‘जाति पाति पूछे नहि कोई ।
हरिको भज सा हरिका होई ॥’

नामदेवकी हिन्दी रचनायें दो प्रकारकी ह — एक सगण भक्तिकी, जो परम्परागत काव्य भाषा या व्रजभाषामें ह। इसरी निर्गुण वाणी, जो मताकी सधुक्कडी भाषामें है।

(१)

आजु नामे बीठल देखा ।

मरख षो समझाऊं रे ॥

पाडे तुम्हारी गायत्री लोघेका खेत खाती थी ।

ल करि ठंगा टगरी तोरी, लगत लगत आती थी ॥

पाडे तुम्हारा महादेव, धौल बलद चढ़ा आवत देखा था ।

पाँडे तुम्हारा रामचद, सो भी आवत देखा था ॥

रावन सँती सरबर होई, घरकी जोय गँवाई थी ।

हिंदू अघा तुरुकी काना, दुवौ ते जानी सयाना ॥

हिंदू पूज देहरा, मुसलमान मसीद ।

नामा सोई सेविया जहँ देहरा न मसीद ॥

(२)

हसत खेलत तेरे देहरे आया ।

भगति करत नामा पकडी उठाया ॥

हीनडी जात भेरी यादव राया ।

छीपेके जनम काहे को आया ॥

ल कमली चलियो पलटाई ।

देहरे पाछे बठो जाई ॥

जेम जेम नामा हरिगुण उचरे ।

भगत जनाको देहरा फिरे ॥

फेरि दिय देहरी नामेकी ।

पडित को पिछवारला ॥

(३)

मोहि लागती तालाबेली ।

बछरे बिनु गाय जकेली ॥

पनिया बिनु मोन तल्प । ऐसे रामनामा बिनु नामा कल्प ॥

जसे गायका बाछा छूटला । थन चोखता माखन घूटला ॥
 नामदेव नारायन पाया । गुरु भेटत अलख लखाया ॥
 जसे बिष हेत पर नारी । ऐसे नामे प्रीति मुरारी ॥
 जसे ताप ते निमल घामा । तसे रामनाम बिनु बापुरो नामा ॥

२०

अखा

अखाका जन्म एक सान्नी परिवारमें हुआ था । ये अहमदाबादके निवटवर्ती गाव जैतलपुरके निवासी थे और जहमदाबादमें रहकर सुनारका धंधा करते थे । कुछ समय तक सरकारी टक्सालमें भी इन्होंने काम किया था । इनके जीवन-काग्ये मध्यममें प्रामाणिक जानकारीका अभाव है । अनुमानत १५९१ स १६५६ ई० तक अखाका जीवन-काल निर्धारित होता है ।

अखाके जीवनमें एक-बाद एक एम दुःख प्रसंग बतलाने चले गए कि उ-ह ममारम विरक्ति हो गई । वे मत्सरका छोड़कर साधु-सतोंका मत्सर करने लगे । पर असे भी इन्होंने शीघ्र ही त्याग दिया क्योंकि उस क्षेत्रमें भी इ-ह ढाग और मिथ्याचारका ही बोलवाला देल पडा । इन्होंने अपने पदोंमें 'जगत और भगत' में फेरे हुए इन पाखंडों पर जोरदार प्रहार किये हैं ।

अखा एक पहुँचे हुए जानी थे । इन्होंने ब्यातका अच्छा अभ्यास किया था । इनके जैसे गीता 'गुरु शिष्य सवाद' 'पचीकरण' आदि गुजराती काव्य प्रख्यात ह । हिन्दीमें भी इन्होंने मुन्दर काव्याकी रचनाएँ की हैं जिनका संग्रह 'सतप्रिया' नामने प्रसिद्ध है ।

अखाकी तत्त्वज्ञान और समाज समीक्षा विषयक रचनाएँ बहुत ही अनूठी और प्रभावोत्पादक ह ।

(१)

कहा भयो कचन बुद सो अग,
रग सुगण्य गोभा अति ओपे।
कहा भयो तान तुरग तुरी घट्टे,
धुजे घरा जावे नेक कोपे।
घनद सो घन, करन सो दानी,
तो कहा काम सयों हरि तोपे।
एते गुन अवगुन भए 'सोनारा',
जो गुहजान न पायो गुह्ये॥

(२)

जावत ह सब लीग यहा धे,
आवत नाहिं जन कोइ फरी।
राय राना से बडे भट पडित,
कोइ न दे पठयो पतरी॥
घन दारा सुत रहत परे,
मानीनता देह सग बरी।
इतनी तो अपने नैनु देखो,
ओर 'अखा' मनने पकरी॥

(३)

माला न पेहें, टीका न बनाऊं,
गरणे न जाऊं म कोउ किसीका।
आपा न भेटू थापा न थापू,
म मदमाता हूँ मेरी खुशीका॥
भिस्त न दोजक दोऊ न चाऊं
ना चाऊं नाम न रूप किसीका।

हे नहिं की सध्य परी जो 'अखा' की,
जानेगा जो षाड़ डेर उसीका ॥

(४)

निदक नेक नारायण न जानत,
ठानत है ओगुन मुख निदा ।

काग कु षद कपूर मानो विष्ठा,
अतर सहेज सुभावका षदा ॥

सुंदर सरमध्य खर नहिं नहावत,
मदन छार कीने थे आनदा ।

कहत 'अखो' सतसग न लागत,
कुबुध कुटिल नर मतिमदा ॥

२१

मनोहरदास

मनोहरदास इसाकी १८ वीं शताब्दीके अंतमें हुए । इनके जन्म-कालका ठीक पता नहीं । केवल इतना ज्ञात है कि सन् १८३८ में इन्होंने चतुर्थ-जाश्रममें प्रवेश किया और सन् १८४५ में इनका स्वर्गवास हुआ ।

ये सौराष्ट्रके महुवा गाँवके रहनेवाले थे । सस्कृतके साथ ही साथ ये फारसीके भी अच्छे पंडित थे । वेदांत और भुपनिषदाका इनका अच्छा अभ्यास था । गुजराती और हिंदुस्तानी दोनों ही भाषाओंमें इन्होंने कविता की है । इनके पद 'मनहर पदा' के नामसे प्रसिद्ध हैं । इन पदोंमें इन्होंने सगुण निगुणके भेदमें न पड़कर एतेश्वरवादकी स्थापनाका प्रयत्न किया है और ढागिया तथा पाल्लडियोको खूब फटकारा है ।

इन्हाने यही 'मनाहर' जीग कहा 'सच्चिदानन्द ब्रह्म' नाम
छाप लगाकर पन्नाकी रचनायें की ह।

मनहर पद

(१)

कोई कहे ज्ञानी जो सकल व्यवहार जाने ।
कोई कहे सब नाम्त्र जाने सोई ज्ञानी है ॥
कोई कहे ज्ञानी काल भत अरु भाधी जाने ।
काई कहे ज्ञानी करामतहू की खानी है ॥
कोई कहे ज्ञानी सकल जग माने सोई ।
बालत विविध ऐसे मिथ्या मति ठानी है ॥
ब्रह्मको लहे जभेद जसे बोले चारो बेंग ।
मनोहर सोई सब ज्ञानीकी निशानी है ॥

(२)

तू चेतन जड तन क्या डंडत, क्यों भरमाया बाजीमें ।
तू है ब्राह्मण क्षत्री वश्य में, तू मुल्ला तू काजीमें ॥
तू है मनुज दनुज देवनमें, तू है मात पिताजीमें ॥
तू जलचर थलचर पशुपक्षी, तू ही सकल गज बाजीमें ॥
सब जग व्यापक सबसे प्यारा, खोज देख दिल काजीमें ॥
स्व स्वरूप इत तित बित दूइत, क्यों पावे बुतसाजीमें ॥
पच कोशते पार बूझके, झीलहुं ज्ञान गगाजीमें ॥
बसहुं सच्चिदानन्द ब्रह्ममें, मत रहे माया पाजीमें ॥

दयाराम

गण्डभापाके विकासम याग देनेवाले अहिदी भापी कवियोंमें दयाराम प्रमुख हैं। आपका जन्म गुजरातके चादाद गावमें सन् १७७६ में हुआ। इनके पिताका नाम प्रभुराम और माताका नाम महालक्ष्मी था।

बचपनमें ही भगवद भक्तिकी जाग इनकी रुचि थी। त्रिकालदर्शी प० इच्छाराम भट्टमें मागदशन पाकर ये दश-देशातराका भ्रमण करनेके लिए घरस निकल पडे। लौटने पर ब्रजभापा जीर कृष्णभक्तिके प्रति इनके हृदयमें अनन्य अनुराग उत्पन्न हुआ और ये तमय होकर कृष्णभक्तिक पदाकी रचना करने लगे।

दयारामका गुजरानी जीर ब्रज दाना ही भापाआ पर समान अधिकार था। दानो ही भापाआमें इन्हाने सुन्दर रचनार्यो की ह। 'वस्तुवददीपिका' 'श्रीमद्भागवतकी अनुष्मणिका' और 'ब्रज-विलास' आदि इनकी ब्रजभाषाकी सुन्दर रचनार्यो ह। दयारामके 'सतमई क सात-मौ दाहे' इनकी काव्य शक्तिके मच्चे परिचायक हैं। दोहाकी भाषा जीर अवगाभीय देवकर हिन्दीक कवि विहारीकी याद आ जाती है। कवि हातक साथ ही साथ दयाराम एक पहुँचे हुए नक्त और समीक्षक भी थे।

इस महान कलाकारकी मृत्यु ७६ बपकी आयुमें सन १८५२ ई० में डभाई नामक स्थान पर हुई।

दोहे

(१)

चाहूँ बसाये हृदयमें, धरूँ त्रिभगो ध्यान।
तार्ते राख्यो फुटिल उर, होहि असो सौँ म्यान ॥

चूक जीउ वी धरम है, छमा धरम प्रभु आप ।
आयो शरन निवाजि निज, करि हरिये सताप ॥

(३)

जद्यपि रवि आतप भयो, सीतल लगत सरोज ।
सकुचें लखि सो सुधाकर, समस प्रेमकी चोज ॥

(४)

प्यारे मोको तीर दिहु, प जिन देहु कमान ।
कमान लागत तीर सम, तीर लगत प्रिय प्रान ॥

(५)

ससि चकोर अरविद अलि, दिप पतग मूग राग ।
जिन बिन चल्यो न बर्यो तजे, जदपि एक अनराग ॥

(६)

रूप भूपके राजमें, यह महान अयाय ।
नाम न लें को मूढको, च्यातुर मारे जाय ॥

(७)

सज्जन दुरिजन एकसे, कछुक बीच बिय बीच ।
इक बिछरत असु लेत सद, एक मिलत हुइ मीच ॥

(८)

गग पाप शनि ताप अरु, दारिद कल्पद्रुम नास ।
इत्यादिक औरहु हने, मिलत दास अबिनास ॥

(९)

दारा निदा सपदा, परजन जिन करि प्यार ।
प्यारी सोई पान ले, जमी भाट कटार ॥

(१०)

बुरो बिचारो औरको, भलो आपको च्हाइ ।
रज डारे जिमि सूर पे, परे सु निज मुख आइ ॥

(११)

भले भलेको सब दिखे, बुरो बुरेको होइ ।
दुष्ट सुधिठिर ना मिल्यो, साधु सुयोधन कोइ ॥

(१२)

पुष्ट रहे पर कष्टमें, ये ही दुष्ट सुभाय ।
आक जवासा प्रीममें, हरे और दुख पाय ॥

(१३)

सो बड सूधे मग चले, कुटिल गती मति मद ।
लखि लेहू शतरज ज्यो, सूतर और गयद ॥

(१४)

जनक जननिगत परित्सा, सुनु अशक्य पितु मात ।
मित सकट, दारिद्र तिय, बाटा बाटत भ्रात ।

(१५)

काहु न मालुम कौन बिध, तुष्ट हृष्ट भगवत ।
गिध गनिका बकुठमें, भूतल भटकत सत ॥

(१६)

प्रीति जुरो प्रकृति न मिलि, वह दुह पख दुख पांय ।
रोटी गडेरी चबी, क्यो डारे क्यो खाय ॥

कविता-कुज

सतनको कहा सीकरी सा काम ?

जावत जात पहुँचा टूटी, बिसरि गयो हरि-नाम ।

जिनको मुख देखे दुख उपजत, तिनको करिबे परी सलाम ॥

‘कुभनदास’ लाल गिरिघर बिनु और सब बेकाम ॥

(कुभनदास)

*

*

*

देखहु दुरमति या ससारकी

हरि सी हीरा छाडि हाथ तें, बाधत मोट बिकारकी ॥

नाना विधिके करम कमावत, खबरि नहीं सिरभारकी ।

झूठे सुखमें भूलि रहे ह, फूटी आँख गँवारकी ॥

कोइ खेती कोइ बनजी लाग, कोई जास हृथ्यारकी ।

अथ धुधमें चहुँ दिसि ध्याव, सुधि बिसरी करतारकी ॥

नरक जानि क मारग चाले, सुनि सुनि बात लवारकी ।

अपने हाथ गलेमें बाही, पासी भायाजारकी ॥

वारवार पुकार कहत हों, सोह सिरजन हारकी ।

‘सुदरदास’ बिनस करि जहै, देह छिनकमें छारकी ॥

(सुदरदास)

*

*

*

मुनो दिलजानी मेरै दिलकी कहानी तुम,

इस्म ही बिकानी बदनामी भी सहेंगी म ।

देवपूजा टानी म निमाज हू भुलानी,

तजे कलमा कुरान सारे गुनन गहेंगी म ॥

(३)

बुरो प्रीतको पथ, बुरो जगलको बासा ।
बुरो नारिको नेह, बुरो मूरतसों हासो ॥
बुरो सूमकी सेव, बुरो भगनी पर भाई ।
बुरी कुलच्छन नारि, सास घर बुरो जमाई ॥
बुरो पेट पपाल है, बुरो युद्धसे भागनो ।
'गग' कहे अकबर सुनो, सबसे बुरो है मागनो ॥

(गग)

*

*

*

(१)

पूत कपूत, कुलच्छनि नारि,
लराक परोस, लजायन सारो ।
घघु कुबुद्धि, पुरोहित लपट,
चाकर चोर, अतीय धुतारो ॥
साहव सूम, अराक् तुरग,
किसान कठोर, दिवान नकारो ।
'ब्रह्म' भन सुनु गाह अकब्वर,
बारहो बाधि समुद्रमें डारो ॥

(२)

पटमें पौढ़के पौढ़े मही पर,
पलना पौढ़के बाल बहाये ।
आइ जब तएनाई त्रिया सग,
सेज प पौढ़के रग मचाये ।
छोर समुद्रके पौढ़नहारको,
'ब्रह्म' कबो चितने नहीं घ्याये ।

पीढत पीढत पीढत ही सो,

चित्ता पर पीढनके दिन आय ।

(बोरवल 'ब्रह्म')

*

*

*

(१)

जारकी विचार कहा, गनिकाको लाज कहा,

गदहाको मान कहा, आधरेको आरसी ।

निगुनीको गुन कहा, दान कहा दारिदको,

सेवा कहा सूमकी, अरडनकी डारसी ॥

मदपीकी सुचि कहा, साच कहा लपटको,

नीचको बचन कहा, स्यारकी पुकारसी ।

'टोडर' सुकवि ऐसे हठी ते न टारे टर

भाव कहो सूधी श्वात, भाव कहो फारसी ॥

(२)

गुन बिनु धन जैसे, गुरु बिन ज्ञान जसे,

मान बिन दान जसे, जल बिन सर है ।

कण्ठ बिन गीत जसे, हित बिन प्रीति जसे,

वेश्या रसरीति जसे, फल बिन तर है ॥

तार बिन जत्र जसे, स्थाने बिन मत्र जसे,

पुरुष बिन नारि जसे, पुत्र बिन घर है ।

'टोडर' सुकवि तसे मनम विचारि देखो

धम बिन धन जने, पछो बिन पर है ॥

(टोडरमल)

दोहे

(१)

करत करत अभ्यासके, जडमति होत सुजान ।
रसरि जावत जात तें, सिल पर परत निसान ॥

(२)

सरस्वतिके भडारकी, बडी अपूरव धात ।
ज्यो खरच त्यो त्यो बड, बिन खरच घटि जात ॥

(३)

ओछे नरके पेटमें रहे न मोटी धात ।
आध सेरके पात्रमें कसे सेर समात ॥

(४)

कछु कहि नीच न छेजिये, भलो न वाको सग ।
पायर डारे कौचमें, उछरि बिगार अग ॥

(५)

नयना देत बताय सब, हियकौ दैत अहेत ।
जसे निमल जारसी, भली घुरी कहि वेत ॥

(६)

भले घुरे सब एक्से, जी लीं बोलत नाहि ।
जानि परतु ह काकपिच, ऋतु बसतके माहि ॥

(बुद)

*

*

*

बिना बिचारे जो कर, सो पीछे पछताय ।
काम बिगारे आपनो, जगमें होत हँसाय ॥

जगमें होत हँसाय, चित्तमें चन न पाव ।
 खान पान सम्मान, रागरग मनाहि न भाव ॥
 कह गिरधर कविराय, दु ख बछु टरत न टारे ।
 खटकत है जिय माहि, कियो जो बिना बिचारे ॥

(गिरधर)

*

*

*

ससि बिन सूनी रन ज्ञान बिन हिरद सूनी
 कुल सूनी बिनु पुत्र पत्र बिन तरुवर सूनी
 गज सूनी इक दत ललित बिन साधर सूनी
 विप्र सून बिन वेद और बन मुहुप बिहूनी
 हरिनाम भजन बिन सत अरु घटा सून बिन दामिनी ।
 'बताल' कहे विक्रम सुनी पति बिन सूनी कामिनी ॥

(बताल)

*

*

*

गगाके चरित्र लखि भाष्यो जमराज यह,
 एरे विश्रगुप्त । मेरे हुकुमप कान द ।
 कहे 'पदमाकर' नरक सब मूदि करि,
 मूदि दरवाजनको तजि यह यान द ॥
 देखु यह देयनदो फीहे सब देव, याते,
 वूतन बुलाइक बिगके बेगि पान द ।
 फारि डार फरद न राखु रोजनामा कहे,
 खाता क्षति जानि द, धहीको यहि जानि द ॥

(पद्याकर)

कठिन शब्दार्थ

१ चदवरदाई

सजमरायका आत्मत्याग

लोह लागि — तलवारसे धायल
होकर

चहुँवान — पथ्वीराज चौहान

मूरछा ह्वै — मर्छित हाकर

धरतिय — जमीन पर

चुञ्च — चाच

वाहैति — चलाती है प्रहार
करती है

विरित्तिय — जारस

दृग दाढति — आखे निकालते हुए

भखु दिया — खिला दिया

ततच्छिन — उसी क्षण

अत सम — अतिम समयमें

धम पल्लियव — धमका पालन

बिबान — विमान

देह सटत — सदह

धरि चल्लियव — बठा कर चले

पल — मास गोश्त

दह हँसत — सदेह हँसन हुए

पद्मावतीका सौंदर्य

कुट्टि वेम — घुघराले बाल

मुदम — सुंदर

पीहप रचियत — पुष्प गूथे हुए

पिक्कमद — कोयलके समान म
शब्द

गध — सुगन्ध, खुसबू

वयमध — बचपन और जव
क वीचकी अवस्था

सेत — श्वेत, सफेद

साहै — शाभित ह अ
लगन हैं

नख जस — नाखून मा
जैसे ह

भमर भैवहि — भोर मडराते

भुल्लहि सुभाव — अपना स्वम
भूलकर

सुक — शुक, तोता

सदिन — अच्छे मुहूर्तमें

उमा प्रसाद — पावतीके प्रसाद

हर हेरियत — शनरकी कृप
दृष्टिसे

२ अमीर सुसरो

छालिक बारी

छालिक बारी — सुसरान अप

इस पद्यवापमें जरबी, फारसी

और तुर्की शब्दकि पर्याय

हिन्दी गद्य दिये ह।

रमूल = पगम्बर = बसीठ — दूत
 ईठ — इष्ट, हितकी बात
 मद = मनस — आदमी
 जन = स्त्री — औरत
 कहन = अकाल — दुकाल
 ववा = मरी — प्लेग
 बिआ विरादर = आआरे भाई —
 हे भाई आ
 बिनशी मादर = बठरी माई —
 ह माता वैठ
 तुरा बगुफ्तम = में तुझ कहा —
 मैंने तुझस कहा
 कुजा विमादी = तू कित रह्या —
 तू कहा रह्या
 राह = तरीक = मारग = सबील —
 रास्ता

तेहका — उनका

पहेलिया

पुरुष — पुरुष, जादमी
 गुनभरा — गुणासं भरा हुआ
 उलटा बेल — तारके लपेटते
 ममय उलटा ही जाता
 है । माल उलटी डाली
 जाती है ।
 करतार — परमात्मा
 बरन — वण रग
 लचकत — मुडती, झुकती

आरी — करवत, लकड़ी काटनेका
 दातेदार औजार
 बाला — (१) छोटा (२) जलाया
 भाया — अच्छा लगा
 बडा हुआ — (१) बडा होने पर
 (२) बुझ जाने पर
 कह नाब — (१) उमहा
 नाम कह दिया, बतला दिया
 (२) उमका नाम दिया
 (दीपक) कहलाता है ।
 तरवर — वृक्ष पेड
 आधो नाब बतायो — (१) पूरा
 नाम न बताकर आधा नाम
 बताया (२) पिताका नाम
 'नीम' बताया (नीम —
 आधा)
 अपने न बोली — (१) अपने
 नामके बारेमें कुछ न बोली
 (२) अपना नाम 'नबोली'
 (नीमका फल) बतलाया
 नाखून बिया — (१) खून नहीं
 किया (२) नाखन बनाए
 आईना — (१) नहीं आई (२) दपण
 पाईना — (१) नहीं मिली (२) दपण
 आरसी — (१) आल्स्य (२) दपण
 दानाईसे — बुद्धिमातीसे
 भुनाना — (१) सिकवाना (२)
 छुटे पैसे करवाना

मुरलीधर — कृष्ण मुरली बजाने वाले

पीतांबर — पीला वस्त्र

नाद करत है — संगीतकी ध्वनि पैदा करता है

विरला बसे फोय — शायद ही कोई इसे बतला सकता है

मुकरियां

मुकरिया — एक प्रकारकी पहेलिया

मनका भारा — बडे दिलवाला

जच्छर — जक्षर

हिया — हृदय

मुखना

मुखना — उक्ति कथन

फेरा न था — (१) उलटा पलटा न था (२) दौड़ाया न था

तला न था — (१) जूतेके नीचेका हिस्सा नहीं था (२) भुना हुआ न था

दाना न था — (१) दानेवाला नहीं था (२) बुद्धिमान नहीं था

गटा न था — (१) बरतन नहीं था (२) जमीन पर लोटा न था

दो मुखना

दा मुखना — दा भापाभ्राम वही गई एक अधवागी उक्ति

मौदागर राचे मी वायद — सोना गरको क्या चाहिये

बूचा — जिसके कान न हो

दोकान — (१) दुकान (२) दो कान

तिश्ना राचे मी वायद — प्यासेको क्या चाहिये

चाह — (१) पानी (२) इच्छा

शिकार बचे मी वायद व —

शिकार किससे करना चाहिये

कवते भगजको — दिमागकी ताकत के लिए

बादाम — (१) जालसे (२) बादाम

गीत

वाला — छोटा

बाँका — बनठनके रहनेवाला

दोहा

गोरी दम — ऐमा प्रमिड है कि अपने गुर हजरत निजामुद्दीनसी मृत्यु पर खुसराने यह भावपूर्ण दाहा बहकर स्वय भी प्राण त्याग लिये थे।

गारी — मुल्त रानी

रन — रात्रि

३ विद्यापति

(१)

अवहट्टु — अपभ्रंग भाषा
सरमिज — कमल
सर — तालाव
की — क्या
सूर — मूय
जोवन — यौवन जवानी
पिय दूर — प्रियतमके दूर हाने पर
मार — मेरा
बड — बडा, अधिक

(२)

परिनाम — परिणाम भविष्य
तुहु — तू
जगतारन — ससारका उद्धार
करनेवाला
दीन दयामय — गरीबा पर दया
करनेवाला
अतए — अत, अतएव
ताहर — तरा
जाध जनम — आधी आयु
गमामनु — गँवा दी
जरा — बुढापा
सिसु — शैशव बचपन
कत दिन गेला — कितने ही दिन
चग गए
निधुवन — कदम्बका वृक्ष

रमनि रभम रग मातनु — रमणि
याके साथ श्रौडा करनमें
मम्त रहा

भजव — भजता, याद करता
कआन वेल — किस समय
कत — कितने
चतुरानन — ब्रह्मा
मरि मरि जाआत — पचकर मर
जात है
तुअ — तेरा
आदि जवगाना — आरभ और अत
ताह — तुझसे
समाआन — समा जाते है, लीन
हा जाते ह
भनइ — कहत है
मेप समन भए — शेषनाग भी
शात हो गया है
तुअ बिन आरा — तरे बिना
और गति नही है
आदि अनादि — जगतका मूल
कारण
कहाओसि — माने जाते ही
तारन भार ताहारा — मुझे तारने
का भार तुम्हारा है

(३)

बन्दों नाय — नमन करने के
पदाकी वन्दना करता है

परिहरि — छोड़कर
 पाप-पयोनिधि — पापका समुद्र
 पारक उपाय — किस उपायसे
 पार कहेंगा
 नहि सेवितु — तेरे पदका
 सवन नहीं किया
 जुवती — युवती, स्त्री
 मति मयें भेलि — मनमें बसाकर
 हलाहल — जहर
 किए पीअल — पान किया पिया
 सम्पद भेलि — सपत्ति स्त्री
 आपत्तियाको इकट्ठा कर
 लिया
 मने गनि — मनमें सोचकर
 कहल बाजे — कहते हैं कि
 (स्नेह) कस बडेगा
 साशक बेरि — सायकालके समय,
 अतिम अवस्थामें
 सेबकाई भेंगइत — भविन भांगता है
 हेरइत — दसता है
 लाजे — लज्जित हाकर

४ कबीर

साली

(१)

ममद — समुद्र
 मनि — स्याही, रागनाई
 लेखनि — कलम

वनराइ — वनके वक्ष

बागद — बागज

(२)

सा साइ — वह ईश्वर

ज्यू — जैस

पुटपनमें — पुष्पामें

वास — खुशबू

कस्तूरीके मिरग — कस्तूरीवाला

मग, हिरण जिसकी नाभिमें

कस्तूरी होती है

(३)

कावे पांय — किसके चरण

(पहल) छूउं

(४)

मुआ — मर गया

क्त — पति, स्वामी

(५)

न पाइय — नहीं पाया जाता

दुहागिनी — विधवा

(६)

माझ — सध्या, शाम

दिन आयव्या — दिन अस्त हा गया

चकवा चकई — पत्नी विधेय, जो

शापके कारण रातका एक

साय नहीं रह सकते।

रन हाय — रात्रि कभी न हा

(७)

आंगडियाँ चाँई पडी — आँसोसे
बम दिग्गने लग गया

पथ — रास्ता

निहारि निहारि — दखते-दखत

जीभडियाँ — जीभ पर

(८)

बगुला — तूफान, चप्रवात

तिनवा — तृण

तिनवा मिला — उनका उनसे
मिल गया

तिनवा पाम — उनका धा,
उन्हीं पात चला गया

(९)

बाठरी — बमग

पुतली — आँकड़े बीचका काला
भाग

चिब — परत

लिया रिझाय — प्रसन्न कर लिया

(१०)

हेरत हेरत — गाजा-गाजन

हेराय राधा — सो गया

बूँद समे-में — बूँद समुद्रमें
विशेष है (जीवात्मा
परमात्मामें मिल है)

साधा जाय — साध ग मोत्रा
जा करती है

(११)

समंद बदमें — समुद्र बूँदमें
समा गया है (परमात्मा
जात्मामें है)

(१२)

मै — अहम मदी

माँकरी — सँकडी

(१३)

बहुरी — फिर

बद्व — बव

हरियर — हरेभरे

मखडा — वध

इवण — मूनी लखडी जा जगनेव
काम जानी है

सत्र — सब

(१४)

विनापाय मयुवा आन देखकर
जायका नय नुआ बि बडारि
चा अथ हतारी बारी है ।

पान्ठि — बर

(१५)

पात पडता — पडत हुए पने

अबक सिछुने ना मिने — इन बार
अन्य जने पर मिना
समय है

(१६)

कानी काया — कथा (नय)
सरीर

मन अधिर — चचल मन
थिर थिर काम करत — स्थिरता
पूर्वक काम करता है

निपडक — निडर

हमन — यमराज हँमता है

(१७)

चक्की — कालकी चक्की
दो पाटनके बीचमें — जम जोर
मत्यु रूपी दो पाटाके बीचमें ।

(१८)

पतग — पतगा

भ्रमि भ्रमि — भूल भूलकर

इवै पडत — इस पर पडता ह

एक जाध उबरत — कोई विरला

ही बचता है

(१९)

वारह फलत — जो वारह

महीने फलता रहे

गहर फल — रममे भरे फल

पखी — पक्षी

कठि करत — शीडा करते है

(२०)

निन्दक — निन्दा करनेवाला,

बुराई करनेवाला

नियरे — पाममें

कुटी छवाय — कुटिया बनवाकर

सुभाय — स्वभाव

(२१)

मूड मूडाये — मायेका मुडन
करानेमे

मूडनें — बाल काटनेमे

(२२)

रोजा — व्रत

राति हनत ह — रातको मारता ह

खून — हत्या

बदगी — भक्ति

कैसे खुदाय — परमात्मा कसे

खुश हा सकता है ?

(२३)

धरकी नारी — पत्नी

तनकी नारी — नाडी

(२४)

लाली — लाल रग, प्रेमका रग

लालकी — प्रियतमकी

हो गई लाल — म भी प्रेमक

रगमें रग गई

विशेषाय सारा समार ईश्वरक

प्रेमसे रगा हुआ ह । कबीरने

उमे देखना चाहा ता वह

भी ईश्वर भक्तिके रगमें रग

गया ।

(२५)

बुभ — घडा

जल जलहि समाना — जल जलमें

समा गया

यह तत कथौ गियानी — ज्ञानीने
 यह तत्त्व कहा
 विन्पेपाथ इस रूपकमें कबीरने
 बतलाया ह कि आत्मा और
 परमात्माके बीच मायाका
 आवरण ह । मायाका आवरण
 हटने ही आत्मा परमात्मासे
 मिल जाती है, उसी प्रकार
 जैसे घड़ेक फूटते ही घड़ेका
 जल कुएँके जलमे मिलकर
 एक हा जाता है ।

सबद

(१)

मीन — मछली

आत्मज्ञान — आत्मज्ञान (आत्मा
 और परमात्माकी एकताका
 ज्ञान)

धरी — रबी हुई

बाहर खाने जामी — अन्यत्र
 सलाम करने जायगा

उदासी — उदास, विरक्त

अधिनासी — ईश्वर

(२)

फूला फूला फिर — मस्त फिरता ह

विर — भाई

भुजा — हाथ

ल्पटि झपटिक — आलिंगन करके,
 लिपटकर

तिरिया — स्त्री पत्नी

हस — जीवात्मा

जब लगि — जब तक

फेर करे घर बासा — फिर घरमें
 वास करती है (निश्चिन्त
 होकर घरमें रहती है)

चार गजी चरगजी — चार
 गजका कफनका टुकड़ा

काठकी घाड़ी — अर्थी

फक दिया जम हारी — होलीकी
 तरह जला दिया

(३)

करमगति — कर्मकी गति
 विधाताका लिखा

मोधि धरी — खूब सोच-
 विचारक विवाहका मुह्त
 निकाला

विपत्ति — विपत्ति, मकट

पद — फदा

पारिधि — गिनारी

मिरग — मृग, हिरण

चरी — त्रिचरता था

हरिचन्द — सत्यवादी राजा हरि-
 चन्द्र जिन्हें विश्वामित्रका

कज्र अदा करनेके लिये डोमक
हाथा विकना पडा था।

बलि — राजा बलि जिनकी सारी
भूमि वामनावतारने तीन पैड
में नाप ली थी जीर जिन्हें
पथ्वी छाडकर पातालमें जाना
पडा था।

काटि — कराडा

नग — एक राजा जो एक करोड
गाय प्रतिदिन दान करता
था, पर कर्मोंकी गतिके कारण
उसे भी मनुष्यस गिरगिट
बनना पडा।

गिरगिट — पेड पर रहनेवाला
छिपकलीकी जातिका एक जंतु
आपु — आप स्वयं भगवान
पटाया — समाप्त किया
हानी होके रही — विधाताका
लिखा सत्य होकर रहा

(४)

हमन — हमका
इश्क भस्ताना — भस्त कर देने-
वाला प्रेम
हामियारी — सावधानी
यारी — दोस्ती
दरबदर — मारे मारे द्वार-द्वारपर
यार — टास्त

इन्तजारी — प्रतीक्षा

खलक — ससार

सलक पटकता है — ससार
अपने नामक लिए निष्फल
प्रयत्न करता है

नेह लागी ह — प्रेम हुआ ह

वेकरारी — बेचैनी

इश्कका माता — प्रेममें मस्त

दुई — द्वैतका भाव

राह नाजुक — सँकडा भाग जिसमें
गिरनेका डर हा

(५)

यह तन ठाठ तँबरेका — यह शरीर
तँबरे जसा है

ऐँचत खटी — तारका खँचता
ह सूटीको मरोडता है

राग हजूरेका — अलौकिक संगीत
हो गया धूरम धूरेका — धूर्ममें
मिल गया

हम तँबरेका — शरीरकी जीवात्मा
अगम पथ — न जाया जा सके

ऐसा हुगम पथ

सूरेका — गुरवीरका

५ रँदास

(१)

कहा — क्या

मूल — जड

अनूप — जिसकी उपमा न हा,
वेजाड

धनहर दूध — धनसे निकला हुआ
ताजा दूध

बछरू जुठारी — बछड़ेने जठा कर
दिया

पुठप बिगारी — पुष्पकी भ्रमरने
और जलका मछलीने बिगाड
दिया

भल्यागिर भुअगा — घदनको
सपौने विपैला बना दिया
दोड एक सगा — दाना एक साथ
सेऊँ — सेवा करता हूँ

अरचा — अचना

(२)

अवर सँग — दूसराके साथ

वादर — वादल

जात्री — यानी

ठाकुर — स्वामी

भय फाँसा — डरका फदा

भक्ति हेतु — भक्तिके लिए

(३)

सगति — साथ, साथवत

सरन — शरण जाश्रय

गली गलीको — गदी गलियोना

सुरसरि — गगा

परताप — प्रताप

महातम — माहात्म्य बडाई, आदर

गगादक — गगाजल

स्वातिबूद — स्वाति नक्षत्रमें
बरसनेवाली बूद

फनि — नप

विप — जहर

वही बद कै — उसी बदमें

निपजै — उत्पन्न होता है

अधिनाई — अश्रिता

रड — अरडके पेंड

वापुर — वेचारे

कमब — कम पेगा

६ गुरु नानक

(१)

इस दम दा — इस सामंका

मन — मुये

कीवे — क्या

रन दा — रातका

भनतन दे — भक्ताङ

पन परमे — चरणाका स्पर्श किया

(२)

कप — कुआ

धेनु — गाय

छीर — दूध

मदिर — भवान

हीना — हीन निम्न, नीचा

रन — राशि

मेह — वर्षा

वेदविहीना — वेदाने जानसे रहित
निहारा — ध्यानपूर्वक देगा
छाड़ दे — छाड़ दे (बाम प्राथ
आदिको)

(३)

बाह र जाई — बिस लिए
वनम वाजने जाता ह

सब निवामी — सब स्थानो पर
निवाम करनेवाला

सदा अरुपा — सदा अल्पित
रहनेवाला

ताहि भग समाई — तुषमें रमा
हुआ ह

वाम वमत ह — मुगध बसती है
मकर माहि जम छाई — दणणमें
जैने परछाड़ रहती ह

निरतर — सदा हमशा

घट ही साजा — अपने शरीरमें
ही खाजो

विन जापा चीन्हे — स्वयको जाने
विना आत्मजानके विना

बाई — कीचड

७ दाहू दयाल

दोहा

(१)

धीध — धी

ग्मि रह्या — मिला हुआ है

व्यापन — फैला हुआ

ठोर — म्यान

बमता — बमता, बहनेवाले

मधि बाड ते और — आममयन
करके सार तत्त्वको निकालने
वाले बिरले ही होते ह।

(२)

दोया — (१) नीपक (२) देना
दिया करो — (१) नीपक जलाआ

(२) दान दिया करो

घरमें पाइये — घरम रखी
हुई वस्तु भी नहीं मिलती ह

जो कर न होय — (१)

यदि हायमें दिया न हो (२)

यदि हायमे (दान) न दिया
हो

(३)

केते — कितने ही

पारख — पारखी परीक्षा करने
वाले

पचि मूये — प्रयत्न करते करने
मर गए

कामति — मूल्य

हरान है — आश्चयमें डूबे हुए ह
गूगेका गुड खाई — गूगेका-सा

गुड खाकर। जिस तरह

गूगा गुडका स्वाद अनुभव

करता है पर व्यवत नहीं

कर सकता उसी प्रकार राम-
नामकी महिमाका जनुभव
सब करते हैं पर उसका मूल्य
कोई नहीं आक सकते ।

(४)

मसीत — ममजिद
देहरा — मदिग
भीतर — मनके अदर

(५)

म — अहम खुदी
बरीक — सँकडा, बारीक
ठाम — जगह स्थान
द्वको नाही ठाम — दो आदमिया
का एक साथ रहना मुशिकल
है ।

(६)

मिसरी करि — मिस्रीमें मिल
कर
माल बस — बौसका टुकडा
माल (मिस्री) क भाव बिक
गया ।
यो महिगा हस — इसी प्रकार
हस (आत्मा) परमात्मामें
मिल कर महत्त्वगाली हो
गया ह ।

(७)

बमान — धनुष

बिरला कोइ — बहुतोमें से कोई
एक इक्का दुक्का

पाचौ मिरगला — पाच हिरण —
पाच ज्ञानेन्द्रिया, (आख
जिह्वा नाक कान और
त्वचा) अथवा उनके गुण
(रूप रस, गंध शब्द स्पर्श)

सूरा — शर्वीर

(८)

हस्ती छटा — हाथीके जैसे स्वतंत्र
बाहु जाइ — किसीसे नहीं बाधा
जाता है

महाबत — हाथीका चलानेवाला
पचि गए — प्रयत्न करके हार गए
कछु न बसाई — कुछ भी बग
नहीं चला

(९)

अमालक — अमूल्य
आपणा — अपना
चलें खाइ — व्यथ ही खो चने
(१०)

बहि बहि — बह बहकर ममपा
ममझाकर

जीभ रटि — जीभ थक गई
बपुरा — बेचारा

मड — मूल

अजान — अनजान

(११)

निंदा — बुराई

गए समूल — जड़मूलमे नष्ट हो गए

नाव — बनियाद

नाव धल — उनका नाम,

स्थान यहा तक कि उनकी

मिट्टी भी नष्ट हा गई ।

सबद

(१)

ऐसे — इस तरह

गरीब नेवाज — गरीब पर दया

करनेवाले

हस्तकैवल — हायरूपी कमल

टारियो हें न टर — हटायेसे भी

न हटे

छाति — छत, बीमारी

तापति त ही डर — उस पर त

ही कृपा करता है

हरि मा सबै सर — भगवानकी

कृपामे सबका काम बन जाता ह ।

(२)

तत — तत्व

जव लग — जब तक

जिम्हा वाणी — जीभकी बालनकी

शक्ति

सारगपाणा — विष्णु

पवना — पवन

श्रवन सुणीजै — कानसे सुनाई

पडता ह

साव मजद — अच्छे शब्द,

साधुजाकी शिष्या

श्रवणी सुरति — सुननेकी शक्ति

तवका सुणि ह — तव क्या सुनेगा

पेखै — देखे

नीका — अच्छा

जीवनि जीका — प्राणके प्राण, ईश्वर

(३)

जिकर — चर्चा

फिकर — चिंता

आशिक — प्रेमी

मुश्ताक — इच्छुक

तस तस — तरस तरसकर

खलक खेग — मसार अपना ह

दिगरनेग — दूसरा कोई नहीं ह

दिन भरने ह — दिन खतीत करते ह

दायम — सदा हमेशा

गैर — दूसरा पराया

शहीद — बलिदान हानेवाला

जिद — जिदगी

दीवान — दीवाना

जर खरीद घरक ह — धनमे

खरीदे हुए दास ह

८ मलकदास

(१)

मेरी तन — मेरी तरफ

हेरिये — देखिये

जाके ढिग — जिसके पास

सलया — शलाका सलाई

रूपा — चादी

कौड़ी नाहि — गाठमें (अटीमें)

कुठ नी नही है

साहु — साहूवार

पराई — दूसरोकी

धनी — मानिक

काकी — किमकी

(२)

दीदार — दशन

अलमस्त — पूरी तरह मस्त

टाड होऊँ — खडा हाऊँ

उदाजादा — सेवक

कुलाह — कलगी

गले पैरहन साजा — गलेमें
जाभूषण पहन रखे ह

तौजी — तौजीअ कर्मोने हिमाव
का चिट्टा

वरि रोजा — रोजा (व्रत) रखना

वाग — पुकार

जिकिर — धार्मिक चचा

कजा — हत्या

दिल लाया — दिल लगाया

हज्ज — यात्रा

मुरसिद — गुरु

(३)

पयगम्बर — मुहम्मद साहब

मत खाई है — बुद्धि खा दी है

दीनिमान — दीन और ईमान

दुविधा — सदेह शका

दूजी — दूसरी

हजरत — पैगम्बर

सा — सीगध

छाडि — छाडकर

(४)

भील — भगवानका एक भक्त

षद — कब

फील — हाथी, जिसे भगवानने
मगरसे बचाया था

मुरीद — शिष्य

गीध — गिद्ध, जटायु, जिमका
भगवानने उदार किया था

ब्याध और बधिक — शिकारी
जिनके पापोका भूलकर भग

वानने मोक्ष प्रदान किया था

निसाफ कहू तिसका — इनका
इन्साफ करो

नाग — मय, शेषनाग

अजामिल — भगवानका एक भक्त

हिमका — स्पर्धा

बदराह — कुमारी

बदी — बुराई

माफजन — क्षमा
 अजानी — जा अच्छी जातिना
 न हो
 रिम — श्राय

९ जायसी

सदेश

एहि — इमका
 पडितह उक्षा — पडितासे पूछा
 कहा सूया — उन्हाने कहा कि
 हमें ता इसके सिवा कुछ
 और नहीं सूया
 तर उपराही — नीचे ऊपर
 मानुपके घट माही — मनुष्यके
 शरीरके अदर
 चितउर — चित्तौड
 कीहा — किया
 हिय — हृदय
 सिंहल — सिंहल द्वीप
 बुधि — बुद्धि
 चीहा — पहचाना
 देखावा — दिखाया
 निरगुन — ब्रह्म
 दुनिया धधा — जगत्ता जजाल
 वाचा सोइ न — वही नहीं वचा
 एहि चितयथा — जिसने अपना
 चित्त इससे वाधा
 सोइ — वही

वक्षि लेहु पारहु — इस लौकिक
 बयावा पारलौकिक अथ इस
 प्रकार समझ लो।

आहि — है

मारग प्रेमकर — प्रेमका माग
 यह जोरि मुनावा — इसे जाडकर
 मुनाया, कविता रूपमें व्यक्त
 किया

पीर प्रेमकर — प्रेमकी वेदना
 जोरी भेई — इस कविनाका
 मने रक्तकी लेई लगाकर
 जोडा है और प्रीतिके आसुआने
 भिगो भिगाकर गीला किया
 है।

जानि — जान-बझकर

गीत अस कीहा — ऐसे गीत
 (काव्य) बनाये है

मकु चीहा — ससारमें यह
 मेरी यादगार बनी रहे

अस बुधि उपराजा — जिसने
 रत्नसेनके मनमें ऐसी बड़ि
 उत्पन्न की

सुरूप — सुंदर

धनि सोई — वही धन्य ह

केइ मोल — किसीने ससारमें
 यग नहीं बेचा किसीन यग
 मोल भी नहीं लिया।

दुइ बोल — दो शब्दों दो बार
 हम्ह वाल — थोडा बहुत हमें
 याद करेगा
 विरिध वैम — वृद्धावस्था
 जोबन हुत गई — किसी समय
 जवानी थी पर अब वह
 अवस्था नष्ट हो गई है।
 मीन — क्षीण
 दिस्टि — दष्टि
 नर्नाहि नेइ नीरू — आँखासे पानी
 बहने लगा
 दसन — दाँत
 पचा कपोला — गाल पिचक गए
 धन — शब्द
 अनरुच देइ बोला — बोलनेमें
 अरुचि हो गई
 बीराई — वाबलापन, पागल्पन
 तरहेत सिराई — सिरका नीचे
 की आर झुकावर
 सरवन — श्रवण, वान
 ऊँच जो गुना — ऊँचा मुनाई देने
 लगा
 स्याही — बालाका वाला रंग
 सीस भा धुना — माया धनी मईज
 जगा मफेद हा गया
 नया — बौतका फल
 भँवर मरा — नीरे जग बाल
 बाल बौतका जग मफेद हो गए

जीति रेइ जूवा — जुआने जीत
 ले गया
 जो लहि — जब तक
 जो लहि हाया — कबि बहता
 है कि जब तक जिन्दगी रहे
 जवानीवे साथ रहे, फिर जब
 दूसरेका आश्रित हाना पड़े
 तब ता मरना ही अच्छा है।
 मीस डोलाव — सिर हिलाव
 सीस धुनै तेहि रीस — डमी क्रोधसे
 सिर पीटे
 “बूढी तुम्ह” — आआ तुम
 भी बूढ़े हा जाओ
 केइ अमीस ? — किसने ऐसा
 आगीबाँद दिया
 वसत-वणन
 नवल — नवीन, सुन्दर
 चन्दन चीर — पीली माडी, चदन
 की मुगधसे युक्त साडी
 धनि — स्त्री
 विहँमि — हँसवर प्रसन्न हाकर
 मँदुर मगा — प्रसन्न हाकर
 माँगमें (स्त्रियाने) मिदूर भरा
 परिमल — पराग, पुष्परज
 मलयगिरि कँगमू — मान
 कँगम पर चन्द छिडा
 गिया हा

सौर — चादर
 डामी — बिछाई हुई
 सौर डामी — सफेद फलाकी
 चादर बिछी हुई है
 सजोग — मिलन
 कत — स्वामी पति
 जोवन वारी — यौवनवाली
 करहि धमारी — होली खेल रह ह
 फाग — होली
 बिरह हारी — बिरहको होली
 की तरह जलाकर नष्ट कर
 दिया है
 धनि मनि सूरु — पत्नी
 चंद्रमाकी तरह शीतल और
 पति सूर्यकी तरह उत्तप्त है ।
 नखत चरु — नक्षत्रोव समान
 शृगार चूर चूर होता है
 नित्त — नित्य प्रतिदिन
 कित्त — कहां

वारहमासा-वणन

अपाढ़

चढा असाढ — असाढका महीना
 आन ही
 गगन घन गाजा — जासमानमें
 वादल गरजने लगे
 दुद — दुदुभी, नगाडा

साजा बाजा — मानो बिरहन
 अपने दलको बुदुभी और
 वाजेम सजाया हो
 धूम — धूमले रगके
 साम — श्याम, काले
 धीरे — धवल, सफेद
 घन — वादल
 धाए — दौडे
 सेत धजा — सफेद झडिया
 वक्पांति — बगुलोकी पकितया
 कतारं
 खडगरीजू — तलवारकी जमी
 बिजली
 बुदवान — वदाके वाण
 घनघोरा — बहुत अधिक मानमें
 ओनइ — झुकी
 आइ चहुँफेरी — आकर चारा
 तरफस मुझे घेर लिया
 उबारु — बचा
 मदन ही घेरी — कामदेवने मुझे
 चारा तरफमे घेर लिया है
 पीऊ — पपीहा
 बीजू — बिजली
 घट — शरीर
 जीऊ — जीव, प्राण
 पुप्य नखत — पुप्य नक्षत्र आठवां
 नक्षत्र जिमकी जावृति
 वाणकी-सी है ।

नाह — नाथ, स्वामी
 मंदिरका छावा ? — मेरे मकानकी
 छावन कौन ठीक करेगा ?
 (वर्षा ऋतुके पहले मकानकी
 छतें ठीक की जाती ह।)
 अद्रा लाग — आद्रा नक्षत्र
 लागि भुईं लेई — पृथ्वी पानीसे
 भर गई
 तिह गारो जो गज — उन्हीको
 गौरव और गव है
 सब — सब

फागुन

पवन चकारा बह्य — पवनके झाक
 चरने लगे
 चागुन सोड — चौगुनी मर्दि
 तन जन पियर पात भा — शरीर
 पील पत्ते जसा हो गया
 झकझारा — झकझारना, पकडकर
 जोरस हिलाना
 चरहि — चडना पत्ताका गिरना
 डाखा — वृक्ष विशेष
 ओनत — जवनत, नीचे झुरी हुआ
 बतसपति — पड-पीधे
 हुलामू — प्रसन्नता, आनंद
 मो कहें भा — मेरे लिए हो गया
 दून — दूना
 फाग जारी — चाचर गाकर
 सब होली खेलते हैं

मोहि होरी — मेरे शरीरमें
 जस होत्री जला दी गई हो
 जो पै पावा — ऐसे जलत हुए
 भी यदि प्रीतमको पा लू
 रोप — क्रोध
 लगीं निहोर — निहोर लगना, काम
 आना यह शरीर किसी तरह
 तुम्हारे काम आ जाय
 जारो छार कं — जलाकर राख
 कर लूँ
 मकु — काश !

जेठ

चलै ठुवारा — लू (गम हवा)
 चलती है
 बवडर — बगूला आंघी
 पर्गह अंगारा — आग बरसती है
 गाजि — गजना करके
 लका दाह तनु लाग — लकाको
 जलाकर अब शरीरके लग
 गया है
 चारिह पवन — चारा तरहके
 पवन
 झकारै आगा — आगको प्रज्वलित
 करते हैं
 पलवा — पलग
 साम — श्याम काली
 कार्लिदी — यमुना

विरहक अति मदी — विरह
की आग धीरे धीरे जलनेवाली
होते हुए भी बड़ी कठिन
होती है।

दुख बाधी — दुखसे व्याकुल
हाकर

अधजर — अधजली

हाडह लागै — हाडाका (खाने)
लगा है

अवहुँ आउ भागै — अव भी
आ जा, शायद तरे आगमनको
सुनकर यह विरह (जो भला
काल होकर मेरे हाड मांसको
खाने लगा है) भाग जाय।

१० तुलसीदास

प्रसंग —

यह काव्य 'रामचरित मानस'
के अयोध्या कांडसे लिया गया है।
पिताकी आनाका पालन करनेके
लिए जब रामचंद्रजी वनमें जाने
लगे, तो माता कौशल्याजीको बड़ा
दुख हुआ। रामचंद्रजीने किसी
तरहसे खुहे तो समझा-बुझा लिया
पर सीताका घर पर रहनेके लिए
वे किसी प्रवार भी राजी न कर
सके। विवग होकर रामचंद्रजीका
उह साथ ले जाना पडा। पति-

पत्नीके बीचके इस वाद विवाद
का कविने बडा ही मनोहारी बगन
किया है।

विवेकमय — जानसे भरे हुए
कीह मातु परिताप — माताका
सतुष्ट किया

लगे प्रवाधन — कहने लगे, समवान
लगे

विपिन — वन

समउ — समय, परिस्थिति

सिषावन — शिक्षा

आन भाति गुनहू — जीमें

कुछ और बात न समझा

आपन मोर — अपना और मेरा

नीक — भला

आयसु — आना

भामिनी — स्त्री

सब विधि भलाई — हे भामिना

घरमें रहनेमें सब तरहमें

भलाई ही है।

सुधि — याद

मति भोरी — भोली बुद्धिवाली

कथा पुरानी — पुरानी कथाए

कहहुँ सुभाय — सीधे स्वभावसे
कहता हूँ

सपथ मत माही — म रकडा

सौगंध खाकर

गुरु-श्रुति-समत — गुरु जना और

बदक कह हुए

पाइय कलेस — बिना परि
 थमके ही पा जाओगी
 हठ बस — हठके कारण
 गालव — गालव मुनि विश्वा
 मित्रके शिष्य थे। शिक्षा
 समाप्त हो जाने पर उन्होंने
 गुरुको दक्षिणा देनेका हठ
 किया। गुरुने ८०० श्यामवण
 घोड़े मांगे जिनका इकट्ठा
 करनेमें गालवका बड़े कष्ट
 उठाने पड़े।

नहुप — नहुप बड़े मदाचारी और
 धमात्मा राजा थे। अपन
 गुणाके कारण इन्हें इन्द्रामन
 मिला। इन्द्रामन मिलन पर
 ये राजमदमें चर हा गए
 और इन्द्राणीको पानेका हठ
 करने लगे। मदाध होकर
 एक दिन पालकीमें बठवर
 ये इन्द्राणीको लेने 'चले।
 पालकीका सप्तपियोके कंधो
 पर रखा गया। जल्दी चलनेके
 लिए ये बार बार मुनियासे
 सस्त्रतमें सप 'सप' कहने
 लगे। मुनियाने क्रोधित होकर
 शाप दिया कि 'जा तू ही
 सप हो जा।'

पुनि — फिर

करि प्रमान पितुबानी — पिताकी
 जानाको पूरा करके
 बेगि फिरब — जल्दी ही लौटगा
 बारा — बार, दर
 सिखवनु — उपदेश
 वामा — स्त्री (ह वामा !)
 परिनामा — परिणामस्वरूप,
 परिणाममें
 कानन — जगल
 घोर घाम — तेज धूप
 हिम — बर्फ सर्दी
 बारि — वर्षा
 बयागी — बयार, पवन
 चलव पयादहि — पदल चलना
 पडेगा
 बिनु पदत्राणा — बिना जूतियाके
 मृदु मजु — कोमल और सुंदर
 अगम — मुश्किल जहाँ काभी न
 जा सके
 भूमिधर नार — बड़े पवत
 कदर — गुफा
 खाह — कदरा
 नारे — नाला, पहाड़ी नदी
 अगाध — बहुत गहरे
 भालु — रीछ
 बृक — भेडिये
 केहरि — सिंह
 नागा — हाथी

वरहा नाद — जारमे चिल्लात है
 धीरजु भागा — धैय नष्ट हा जाता
 है
 भूमिमयन — धरती पर माना
 बलबल वमन — पडाकी छालने
 कपडे पहनना
 असन — भोजन
 ते कि — वे भी क्या
 नर अहार — मनुष्योका खानेवाले
 रजनीचर — राक्षस
 कोटिक — कराडा
 लागइ पानी — पहाडका पानी
 बहुत लगता है
 विपन विपति — बनकी विपत्ति
 ब्याल कराल — डरावने मांप
 विहग — पक्षी
 घारा — धार, भयकर
 निसि चर निकर — राक्षसाक शुड
 नारी-नर चारा — स्त्री-पुरुषाको
 चुरानेवाले
 धीर — धैयवान, बहादुर
 तुम्ह भीर सुभाये — तुम तो
 स्वभावसे ही डरपोक हो
 हसगबनि — हसकी जसी सुन्दर
 चालवाली
 तुम्ह नाहि बन जोग — तुम बनमें
 जानेके लायक नहीं हा
 मानस — मानसरोवर

प्रतिपाली — पाली हुई
 लवन पयाधि — तारा ममुद्र
 मरागी — हगनी
 मानस मराली — जा हसनी
 मानसरावरक अमतम्पी
 जलमे पाली गई है वह क्या
 खारे समुद्रके किनार गृहकर
 जी सकती है ?
 नवरमाल सीला — नये जामा
 क दगीचेमें विहार करनवाली
 सोह कि — क्या गाभा दता है
 विपिन करीला — करीलके जगलमें
 सुहृद — मित्र भला चाहनेवाला
 सिख — शिक्षा
 अघाइ उर — दिल भरकर खूब
 अवसि — अवश्य
 लोचन ललित — सुन्दर नेत्र
 दाहक — जलन उत्पन्न करनेवाली
 उत्तर न आव — कुछ उत्तर नहीं
 दिया गया
 बदेही — जानकीजी
 तजन चहत — त्यागना चाहती हैं
 बिलाचन बारी — नत्रोक आम्र
 अबनिकुमारी — पृथ्वीकी क्या
 जानकी
 छमवि देवि — हे देवि ! क्षमा
 करना
 अविनय — डिठाई

म पुनि माही — मैंने फिरसे इसे
 मनमें समझकर दख लिया है
 करुणायतन — दयाके सागर
 सुपद — सुखप्रद, सुख देनेवाले
 सुजान — चतुर
 रघु-कुल-कुमुद विधु — रघुकुल रूपी
 कुमुदकी खिलानेवाले चंद्र
 सुरपुर — स्वर्ग
 भगिनी — वहिन
 सुहृद समुदाई — मित्राका समूह
 सजन — स्वजन
 जहें लगि — जहा तक
 तरनि — सूय
 नेह अरु नाते — स्नेह और सबध
 तिय — स्त्री
 पिय बिनु तात — स्त्रीके लिए
 पति बिना वे मव सूयसे भी
 अधिक् तपानवाले ह ।
 धामु — मवान
 घरनि — पृथ्वी
 सोक् समाजू — शोकका समूह,
 दु खवा भडार
 भूपन — आभूषण
 सरिसा — समान
 बतहें — वही भी
 तइमिअ — वैसे ही
 गरद विमल विधु-वदन — गरद
 श्रुतुके स्वच्छ चंद्रमाके
 समान मुख

निहारे — देखकर
 परिजन — कुटुम्बी
 बलबल — पेड़ोकी छाल
 विमल दुकूल — अच्छे वपडे
 सुर सदन — दवताजाका घर, स्वर्ग
 परनसाल — पणसाला, पत्ताकी
 झापडी
 किसलय — कोमल पत्ते
 साथरी — विछोता
 मजु मनाज तुराई — कामदेवकी
 तोशकके समान मुंदर
 अभिअ — अमृत
 अवध पहारु — वनके पहाड
 अयोध्याके राजमहलाक बरा
 बर हागे ।
 छिनु छिनु — क्षण क्षणमें
 बिलोकी — दखकर
 मुदित — प्रसन्न
 कोकी — चकवी
 परिताप — मताप, दु ख
 घनेरे — बहुतसे
 प्रभुवियाग समाना — स्वामी
 व वियागके एक क्षणक बराबर
 सुजान सिरामनि — ह चतुर
 गिरामणि ।
 छाडिअ जनि — न छाडिबे
 उर-जनर-जामी — दिलकी बात
 जाननेवाक

अवध — अयोध्या
 अवबिलगि — चौदह वपकी अवधि
 तक
 राग्निय अवध जहि प्राण —
 अग्न आप यह जानत ह कि
 चौदह वप तक (आपके बिना)
 मरे प्राण वचे रहगे ता
 मुझे अया-यामें छोड जाइये ।
 हारी — थकावट
 चरन मराज — चरणकमल
 मारग जनित सकल मम — रास्ता
 चलनकी सारी थकावट
 पत्तारि — धाकर
 वाउ — वायु, हवा
 पले — दम्बर
 कहैं पेखे — प्राणपतिवा देख
 लेने पर दु खका अवसर कहाँ ?
 सम टामी — बराबर जमीन
 पर घास जीर वक्षोक पत्ते
 बिछाकर
 पाय पलाटिहि — पाँव दाबा करेगी
 ताति बयार — गरम हवा
 मोहि चितवनिहाग — मेरी तरफ
 जाँल उठाकर देखनेवाला
 सिध-वधु — सिंहकी स्त्री शेरनी
 नमक — खरगाश
 सियार — गोदड
 हृदय बिलगान — दिल नही फटा
 पाँवर प्राण — नीच प्राण

रघुपति जिय जाना — रामच
 जीने दिलमें जान लिया
 हठि राखे प्राणा — यदि ह
 पूर्वक इस यहा छोड जाए
 ता यह निश्चय ही प्राणाक
 न रखेगी ।
 भानुकुल नाथा — मूयकुलक स्वाम
 परिहरि — छोडकर
 विपादक अवसर — दु ग करनेक
 अवसर
 वेगि करहु बन गवन समाजू —
 जल्दी बन चलनेकी तयारी करो
 लगे मातुपद — माताक पाँव पडे
 मेटव — मिटाओ
 विमरि जनि जाई — भल मत जाना
 फिरिहि मारी — हे विधाता
 क्या फिर मेरी दशा कियेगी
 बच्छु — वम पुत्र
 पद
 (१)
 दयाल — दयाशु दीनो पर दया
 करनेवाला
 हौं — म
 पातकी — पापी
 पाप-मुजहारी — पापके समूहका
 नाश करनेवाला
 भोमो — मुझ जैसा
 आरत — दु खी
 तोसो — तुझ जैसा

जीव — आत्मा
 अकुर — स्वामी
 चैरो — मेवक
 हितु — हितकारी
 ताहि भाहि नात अनेक — तेरे
 मर अनेक सबध है
 जा भाई — जो अच्छा लगे
 ज्यो-या — जैसे तसे, कित्ती भी
 तरह

(२)

ममता — माह, आसक्ति
 पावे बेस — बाल पक्कर सफेद
 हो गए
 राज गई लावन न — मसारस
 लज्जा जाती रहा
 मुनहि बुलावत करन — बोला नहो
 जाता (पुत्रका भी हाथके
 इशागैस बुलात ह)
 ओभ पगये धनतें — यह शरीर
 पराया धन है इस पर लाभ
 करना व्यथ है।

(३)

गरीब निवाज — गरीबोंकी सहा
 यता करनेवाला
 पतित उधारन — पतितोंका उद्धार
 करनेवाला
 बिरद — यश, बड़ाई
 सवनन सुनी अवाज — कानासे यह
 ध्वनि सुनी है

पतित — पापी
 पुरातन — पुराना
 अघखडन — पापाका नाश करने
 दु खभजन जनके — मनुष्य
 दु खाको दूर करनेवाले
 (४)

उर बाहु विसाल — वक्ष
 (सीना) और हाथ बड
 विनेचन — नेत्र
 सून धरे — धनुष पर
 धरे हुए
 मुठि सौट — बडे सुदर
 हात है
 चितै तुम ल्यौ — तुम्हारी
 देखकर

रावरे को ह ? — आपके कीत
 (५)

सुधारम-साने — अमतके
 भीगे हुए
 सयानी — चतुर
 द सैन — इशारा करक
 ओमर — अबमर समय
 लोचन लाहु — लाचनाका
 तडाग — तालाव
 बिगसी — खिली
 कज-कली — कमलकी कली
 रामसतसई

(१)

काम — वासना
 इक ठाम — एक जगह एक

(२)

सरगुती — गरस्वती नदी
चातबर मन — पपीहव गिण
घर — धूर

(३)

विलम्ब — दर
तन तरवग — गरीरूपी तरवग
स्वाम मार सो तीर — स्वागम्पी
मार तत्त्वध जैसा तीर

(४)

जसन — भोजन
बसन — वस्त्र
सत समागम — मत लागाका मिलन
रामधन — भक्ति
दुलभ — जा जासानीसे न मिले

(५)

रामसनेह — रामकी भक्ति
उपचार — उपाय
अक नव — नौका अक
पहार — पहाडा
जस पहार — नौके पहाडेमें
नौका अक कभी घटता नहीं,
उसका जोड सदा नौ ही
बना रहता है जैसे — १८ २७
३६ आदिका जोड सदा ९ ही
रहता है।

(६)

सुअवतरु — अच्छे आमका पेड
इतर — इधरसे

उतन — उधरसे

पाहन हनत — पत्यर मारत

(७)

गा — गाय
गज — हाथी
वाजि — पाडे

(८)

गौर करि दगा — विचार करके
दम ला

समुप — (१) सामने (२) प्रसन्न
विमूव — पीठ पीछे, अप्रसन्न

(९)

मनि — मणि
जीह दहरी — जीभ रूपी दहला
भीतर बाहिरो — अतर और बाहर
उजियार — उजियाला प्रकार

(१०)

भय आस — भयने कारण अथवा
किसी प्राप्तिकी आगास
तीन कर — इन तीन चीजाका
राज नास — मन्त्रीके कारण
राज्य, गुरुके कारण धम और
बैद्यके कारण तन, इन तीनोंका
जल्दी ही नाश हा जाता है

(११)

दीरघ रागी — पुराना मरीज
दारिदी — दरिद्री

कटु वच — कड़े वचन बालनेवाले
लालुप लाग — लालची आदमी
त्यागिबे योग — छोड़ देने लायक
(१२)

कीरति — कीर्ति, बडाई
मसि — स्याही, कालिय
तिनके मुह मसि लागि है —
उनका मुह अवश्य काला होगा
मुपे — मरने तक
(१३)

कचन बरसे मेह — चाह वहाँ मोन
की ही वर्षा होती हो
(१४)

भपण — आभूषण (शोभा)
इडु — चंद्रमा
भान — भानु, सूर्य
(१५)

अमल अदाग — स्वच्छ दाग रहित

११ सूरवास

(१)

वदी — वन्दना करता ठे
हरिराई — श्रीकृष्ण
पगु — अपग
लघै — उलाघ जाना, कूदकर पार
कर जाना
दरसार्ह — दिखलाई पडना
गग — गया

पुनि — पुन फिरसे
रव — गरीब
सिर छय धराई — राजा बनकर
पाई — पाँव

(२)

छाडि — छोड़ दे
छाडि को सग — जा लाग
ईश्वरके विमुख (खिलाफ)
है उनका साथ छाड दे
कुबुधि — कुबुद्धि खराब काम
करनकी इच्छा
उपजति है — उत्पन्न हाती है
पय पान कराये — दूध पिलानेस
नहिं तजत — नहीं छोडता है
भुजग — सप
स्वान — कुत्ता
हवाये — स्नान करानेस
खर — गधा
अरगजा लपन — चंदनवा छेप
भरकट — बन्दर
भपण — आभूषण
गज — हाथी
खहि — मिट्टी
बहुरि घर खहि छग — फिरसे
अपने मस्तक पर मिट्टी
डालता है
पाहन पतित — नीच पत्यग
निपग — तरकश

गङ्गा कागी वामरि — दुष्ट लग
वाग वमली (कण्ठ) क
ममान ह

(१३)

अनन — जयत्र

वमन्वयन — श्रीकृष्ण

महानम — माहात्म्य महिमा

याव — भजता है स्मरण करता है

दुमति — मूख

कूप यनात्र — कुआ सुदवाता है

मधुकर — भ्रमर, भँवरा

जयज रम — वमलका रम

करील फल — कडवे फल

प्रभु वामधनु — प्रभु (श्रीकृष्ण)

स्पर्षी मव इच्छाआका पूरा

करनवालो गाय

छरी — बकरी

दुहाना — दूध निकलवाना

(४)

अवगुन — अवगुण बुगइया

ममदरसी — समद्रष्टा, बराबरकी

नजरम देखनेवाला

नार — गंद पानीकी नाली

एक वरन — एक वणक एक

रगके

मुरमरि — गंगा

वधिव — कसाई

पारम — एक पत्थर जिसके स्पर्श
मे लोहा सोना बन जाता है

पारम गरा — पारस लोहेर
गुण अवगुणका नही देगता,
वह ता उम सरा माना बना
दना है।

मगरा — सब

प्रन जान टरो — नहा तो पतियों
वा उद्धार करनवा आपका
प्रण टट जायगा।

(५)

विजाया — तग किया, चिन्नाया

मोमा — मुझसे

मोलना गीना — सरीरा हुआ

कव जाया — कव जम गिया

कहा कही — क्या बतलाऊँ

एहि रिमने मारे — इमी गुस्सेक
कारण

पुनि पुनि कहत — बार बार
कहत ह

तुम कत स्याम सरीर — तुम
काले रगके कस हा ?

सिलै दत बलवीर — बलदाऊजी
उठ सिन्हा नेते हैं

न खीझ — कभी नाराज नही होती
रिस समत लखि — गुस्सेसे भरा

हुआ देखकर

रीझ — प्रसन्न होती है

चबाई — चुगलवार

धूत — धत दुष्ट

गोधनकी सी — गायकी सौगध
हों — म

श — लडका

करि उठ धाई — गुस्सा करके
जलीसे उठकर गई

। गहि गाढे करि — मजबूतीमें
हाथ पकडकर

श्री — उड़ी

ल — उगलना खाई हुई

वस्तुको मुहसे थकना

रका — लडका

वाई — मुह खोलकर

ल महिमा — सारे

ससारका ऐश्वय

धु — समुद्र

ह — मोनेका एक पवत

लानी — व्याकुल हा गई

गपानी — विष्णु

(७)

नके मिस — खेलनेके वहानेमें

व महित — सकोचके साथ

हो — हे कुँवर कहाई ।

घर पर हा क्या ?

करि बोरी — मधुर शब्द बाजी

अतुराई हो — अत्यन्त

आनुरतासे

१ — लडाई, झगडा

डारी बिसराई हा — जमे

भूल गए

ति — पहचाननी है ?

ताह सकुचति ह — तुममें शर्माती
है

दौ सौह — सौगव देकर

गुन जागर — गुणोंके भंडार

नागरि — राधिका

(८)

बूपति जननि — माता पूछनी है

कहा हुति — कहा थी ?

भाल — मस्तक, ललाट

कच गृथि — बाल सँवार कर

ह्याँ — यहा

तिल करि दीन्ही — तिल आर

चावलासे गोद भर दी (सगाई

का एक दस्त्र)

फरिया — बिना सिला लहंगा

नवसारी — नई साडी

नाऊँ — नाम

दयी हँसि गारी — हँसकर गाली

दी (ब्याह मगाई आदिके

अवसर पर दूसरे पक्षवालाका

गाली गाने या गाली देनका

एक रिवाज)

मो तन — मेरी तरफ

चिन — देखे

सविता — सूर्य

कुछ पमागी — सूर्यक सामने

झाली फलाकर कुछ मागा

वृक्षभानु — गधाक पिता

दुआरी — प्यारी (पुत्री)
दपनी — राधाके मातापिता

(९)

काह मुल न लह्या — किमीको
मुख नही मिला
प्राण दह्या — अपने प्राणाका जला
डाला

अलिमुत — भ्रमर, भँवरा
कमि गह्या — हाथीके मुहमें
चला गया

जलमुत — कमल

मारग — हिरण

नाद — मगीत

मनमुल बान सह्या, — छाती पर
वाण सहना पडा

दामनगीर — सहारा देनेवाल

सुधि — ध्यान खयाल

दरम — दशन

पीर — पीडा

नटवर भेप — चतुर नटके जसा भेप

रतनारे — लाल

वेपीर — जा दूमरेके दुखका न
जाने निमम

अहीर — गाय भस रखनेवाले
गवालाकी एक जाति

आखिर जाति अहीर — नीच
जातका है (इमीलिए गापिया
को भूल गया ह)

(११)

बहुत दिन लाये — बहुत दिन
लगाये व्यतीत किये

पालागी — पैरा पडती हैं
वीर बटाऊ — हे भाई राहगार
से धाये — मे आये हो

पतिया — चिट्ठी सदशा
स्याम घन — घनस्याम, काळे वाल
सावत, मदन जगाय — साते हए
कामदेवको भी (इन दादुर,
मोर आदिने) जगा लिया ह
जापुन भये पराये — अपने पराए
हो गए ह

(१२)

निगुण — निगुण ब्रह्म
निगुण वासी — तुम्हारा निगुण
किस देवका रहनेवाला है ?

मधुकर — भँवरा

सीह द — सौगध दकर

जनक — पिता

काहे रसमे अभिलामी — किम
चीजके शौकान ह

कहगा गामी — यदि कपट रत्न
कर कहगा

पावगा आपनो — अपना किया
भोगेगा

ठग्योसो — (उद्धव) ठगासा रह
गया

मति नासी — सारी बुद्धिमानी
जाती रही

१२ मीराबाई

(१)

परसि — स्पश कर

सुभग — सुन्दर

त्रिविध ज्वाला — तीन प्रकारकी
ताप (१) आध्यात्मिक (२)
आधिदैविक जोर (३) आधि
भौतिक

जिण — जिन

हरण — हरनेवाले

धरण — धारण की प्राप्त की
अटल कीने — आवासमें अचल

यनागर स्थापित कर दिमा
ब्रह्माण्ड भेटघो — विश्वको नाभा

नख सिर्पा सिरी धरण — नखसे
शिरसा तक शूण श्री (शोभा)

को धारण करनेवाले भगवान
जिण परसि जाने — जिन

चरणाका स्पश करव

तरी गौतम धरण — गौतम ऋषि
की पत्नी अहिल्याका उद्धार
हो गया।

काली नाग — यमुनामें रहनेवाला
कालिय नामका साँप

नाथ्या — नाकम नकेल डालकर
वगमें किया

गावधन धार्या — ऐसा प्रसिद्ध है
कि इद्रका कोप होने पर

श्रीकृष्णने गोवधन पवतका
सात दिन तक अपने हाथ
पर रखा था।

मघवा — इद्र

अगम — दुस्तर

तारण — तारनेवाला

तरण — तरणी, नौका

अगम तारण तरण — भय-सागर
से पार करनेवाला

(२)

अविनासा — जिमका नाश न हो,
परमात्मा

जेताई — जितने ही

दीमें — दिखाई देते हैं

धरण गगन बिच — पृथ्वी और
आकाशक बीच

तताई — उतने ही

उठ जाती — उठ जायेंगे नष्ट हो
जायेंगे

करवन कामी — वाशीमें करवत
केना। (यह कहा जाता है
कि वाशीमें जाकर करवत
काकर मरनेसे स्वयं मिलता
ह।)

इण देहीका — इस शरीरका

न करणा — नहीं करना चाहिये

चहरकी बाजी — चिडियोका ढेल

साँझ पडया — सत्या होने पर

भगवों — भेरए वस्त्र

जुगत — भुक्ति, उपाय
उल्ट आसी — लौटकर फिर
ससारमें जन्म लेगा अर्थात्
आवागमनसे छुटकारा नहीं होगा

(३)

अबला — दुबल स्त्री
काटो जमकी फासी — मृत्युका फदा
काट दो, आवागमनमें भुक्ति दो ।

राम — श्रीकृष्ण
फाटी तो फुलडिया — टटी जतियाँ

उभाणे — नगे
घसे — घिसते हैं

मीत — मित्र
भावज — भाभी

भेंट पठाई — सौगात भेजी है
तादुल — चावल

तीन पमे — तीन मुट्ठी
टपरिया — कुटिया

कसे — जडे हुए हैं
हसती पसे — हाथी फैसे हुए हैं

रास्ता रोककर थडे ह

(४)

खेल मना रे — हे मन तू होली खेल
विन करताल — विना हथेलियाके
आघातके स्वत

पसावज — शोलकके आकारका
वाजा

अणहृदकी बकार — अनाहत नाद
ईश्वरीय मगीतकी ध्वनि

राग छतीसू गाव — ६ राग और
३० रागिनियाँ

रणकार — ध्वनि
मील सतोख — शील और सताप

पिचकार — पिचकारी
गुलाल — हाली खेलनेके लिए

रोलीके जमा लाल रगवा
पदाय

अवर — आकाश
घटके पट — दिलके दरवाजे

डार — छोड़कर
होरी आये — तेरे प्रीतम घर

आये ह, त होली खेल
सोड प्यार रे — बहो प्यारा

है जिसे प्रीतम प्यार कर

(५)

बावनकी — आनेकी
मन भावन — मनको भावना

(श्रीकृष्ण)

बाण — आदत, स्वभाव
चेरी — दामी

दावन — दामन

(६) •

धाने — जापको
नहीं बिसरूँ — नहीं भूलूँ

कल न पडत है — गाति नहीं
होती ह

जानत मागी छाती — मरा निल
ही जानता ह ।

राती — लाल
कुलरा न्याती — कुटुम्बके सम्बन्धी
दोड़ कर जोड़घा — दोनों हाथ
जोड़कर

वाती — बात
हरामी — अधमों दुष्ट
मदमातो — मतवाला
अकुस — अकुश, एक हथियार,
जिससे हाथीको चलाया
जाता है

(७)

हेरी — अरी
मैज — शय्या, पलंग
किस विध — कैसे
की जिन लाई हाथ — अथवा वह
जान सजता है जिनने (वही
प्रेम करके उसकी पीछा)
लगाई हो।

माँवलिषा — वृष्ण

(८)

सकल लोव जोई — सारा ससार
दख लिया
मगा माई — शूब मगे-सबन्धी
साध सग — साधुओंके साथ
लोर लाज खोई — समारकी
मर्यादा नष्ट कर दी
भगत — भक्त

छोई — छाछ
पाय — पीकर

(९)

दष्टि पडघो — नजर आय
कछु ना सोहाई — कुछ भी
सुहाता है
मोरनीकी चद्रकला — मोर
चंदोवा
कुडलकी अरक मलक —
पर पडा हुआ घुघराले
का प्रतिबिम्ब

कपाल — गाल

मीन — मछली

मकर — मगर

कुटिल भूकुटि — टेढ़ी भ
चितवनमें टीना — दृष्टि
खजन — एक पक्षी जिस
बडे सुन्दर होते ह

मधुप — भ्रमर

मृग छोना — मृगशावक,
बच्चा

नासिका — नाक

सुग्रीव — अच्छी गदन

नटवर भेव घरे — च

ममान भेव धारण

रूप अति विमेषा —

भी विमेष प्रतीत

अधर बिब — विबाफलके समान
हाठ

मद हाँमा — धीमी हँसी, मुस्कान

दमन — दाँत

दुति — द्युति, वाति चमक

चपला — बिजली

धुद्र घट किवनी — छाटी छाटी

घटियावात्री करधनी

अनूप — जिमकी उपमा न दी
जा सके

बन्दि जाई — बन्दिहारी जाती है

(१०)

गग — गगी

पडा — भाग

चाग — जुदा

गग — गग्ना

अगग — एक मुगधित पत्थर

त्राग — अशाति

१३ नददास

भ्रमगगी

ब्रत्र-नागगा — ब्रत्रकी पत्नी तारा

गगग — गुग्गुला

गग गग आगरा — गग गुगाम

भरा दूई

अमथजा — अमथजा अथवा पत्नी

गग बरिनी — गग गगाम

अन-अमी

उपजावन पुज — गुग्गु-समूहकी
उपजानेवाली

स्याम विलासिनी — श्रीकृष्णक

साथ आनंद करनेवाली

हौ — मैं

तुम पे — तुम्हारे पाम

कहूँ — कही पर

ओसर — अबसर

इव ठाऊँ — एक स्थान, एक मीरा

बहुरि — पुन फिरसे

मधुपुरी — मधुरा नगर

पुलिन भदे — गार शरीरमें

रामान हाँआया

गद गद गिरा — यागा प्रेक्षणी

अधिवनाग रज गई

वन — गग

विवस्या — व्यवस्था दम्भूर

उर्ध्वगन उडागि — ऊँचा भाग पर

बैठावर

बहुरि — फिरसे पुन

परिवर्त्ता — परिवर्त्ता यागा

आर सिना

स्याम तिर्र जानि — गुग्गुला सिन

का अरना मजवर

मुधि — मजवर या

विहंगन — हंगन

गग है बलवान्त्र — गुग्गुला अर्थात्

गग है न ?

वचन रसाल — मोठे वचन

राम अरु म्याम — बलदाऊजी
और कृष्ण

पूछन ब्रज कुसलात वो — ब्रजकी
कुशलता (हालचाल) पूछने
के लिए

हैं तीर — मैं तुम्हारे पास
भेजा गया है

जनि अधीर — हृदयमें व्याकुल
मत हो

सुमिरन हूँ आयो — याद जा गया
आनन कमल — मुख कमल

अग आवेस जनायो — शरीरमें
भावातिरेकके कारण दौरा
आ गया

विह्वल हूँ — घबराकर
धरती — पृथ्वी

ब्रज वनिता — ब्रजकी स्त्रियाँ
प्रबोधही — कहता है

१४ रसखान

प्रेम वाटिका

(१)

प्रेम-अगर्नि — प्रेमका घर

प्रेम-बरन — प्रेम-स्वरूप

प्रेम बाटिका — प्रेमका बग़ीचा

दूद — दोनों

(२)

एक हाइ द्वै में लसै — एक होकर
दा मालूम पडते हैं

(३)

कमल ततु — कमल ताल

छीन — क्षीण पतला दुबल

खडग — तलवार

अति बहुरि — अत्यन्त सीधा
और फिर टेढा भी

अनिवार — अनीवाला, तीक्ष्ण

(४)

मरे जगत क्या राख — मृत्यु पर
ससार क्यों रोना है ? क्योंकि
यदि शरीरसे प्रेम है तो शरीर
पडा रहता है। और यदि
जात्मासे प्रेम है तो चिताका
आवश्यकता ही नहीं, आत्मा
ता जमर ह।

(५)

ब — अथवा

जु पै — (इतने पर भी) यदि

(६)

याही तैं — इसीलिए

हरि आपु ही — स्वयं परमात्माने

याहि — इमे प्रेमका

(७)

एव रम — समान

सुजान रसखान

(१)

मानुष हौं — यदि मैं मनुष्य देह
पाऊँ

वसौं — वास करूँ रहूँ

पशु — पशु

धेनु मैज्ञारन — गायोके बीचमें

पाहन — पत्थर

छत्र — छत्ता

पुरन्दर — इन्द्र

जा घरयो धारन — जिस

(गोवधन) पवतना श्रीकृष्ण

ने इन्द्रके कोपसे ब्रजवासियो

की रक्षा करनेके लिए हाथ

पर छत्र बनाकर धरा था।

खग — पक्षी

बसेरो करौं — घासला बनाऊँ

कालिन्दी — यमुना

क्ल — किनारा, तट

कदम्बकी डारन — कदम्बकी

डालियाँ

(२)

लकुटी — लकड़ी छोड़ी

वामरिया — कमली कम्बल

तिहूँ पुर कौ — तीनो लोकाका

तजि डारौं — छोड़ दू

आठहूँ सिद्धि — योगकी आठ

, सिद्धियाँ

नवा निधि — कुवेरकी नौ निधियाँ

बिमारी — भुला डालू

क्यों — कभी

तडाग — तालाव

निहारौं — देखू

कोटिक — करोडा

कल्धौतके धाम — मानक महल

करील — एक कँटीली झाड़ी

- जिसमें पत्तिया नहीं हानी

(३)

मोर पखा — मोरका पल चंदोआ

गुजकी माल — घुघचीके फूलीकी

माला

गरे — गलेमें

पिताम्बर — पीला वस्त्र

गोधन — गायोका झुण्ड

भावतो बोहि मेरा — (१) मेरा

चहेता तो वही ह (२) मेरा

तो उनके प्रति वही (प्रेमका)

भाव है

स्वाँग भरौंगी — भेष बनाऊँगी

पै — लेकिन

अधर — हाठ

धरी — रखी हुई
 अधरान धरौंगी — पर उनके
 होठा पर धरी मुरली को मैं
 अपने होठी पर नही धरूंगी

(४) . .

सेस — शेषनाग
 गनेस — गणेशजी
 महेस — महादेवजी
 दिनेस — सूय
 सुरभ — इन्द्र
 जाहि निरतर गाव — जिसक
 गुणाका गान हमेशा करते
 रहने है।

जाहि — जिसे
 अनादि — जिसका प्रारम्भ न हा
 अनत — जिसका अत न हो
 अखड — संपूर्ण, खडरहित
 अछेद — जिसका छेदन न हो सके
 अभेद — जिसे भेदा (काटा) न
 जा सके
 सुवेद बतावै — वेद वणन करते है
 नारदमे रटै — नारदसे लेकर
 श्री शुक्देव और व्यास तक
 उसका स्मरण करते है।

पचि हारै पार न पाव — प्रयत्न
 करके हार गए पर फिर भी
 जिसका पार न पा सके।

ताहि — उसे, परमात्माको
 अहीरकी छाहरिया — अहीरकी
 छाकरिया, ग्वालनें
 छछिया — मिट्टीका छोटा बरतन
 छछिया भरि छाछ पै — थोडीसी
 छाछके लिए

१५ रहीम

(१)

तरुवर — वृक्ष
 सरवर — सरावर, तालाब
 पान — पानी
 पर वाज हित — दूसराके कामके
 लिए
 सपति मुर्चाहि — सपत्तिका सचय
 करते ह।

सुजान — चतुर, सज्जन

(२)

मन हाथ है — मन पर अधिकार है
 मनसा — इच्छा
 कहूँ किन जाहि — कही भी कणो
 न जीय
 काया — शरीर

(३)

नपति सगे — धनके सम्बन्धी
 बिपति कसौटी जे कसे — विपत्तिकी
 कसौटी पर जो कसे जा

सकें मुसीबतमें जा काम आ
सकें

मीत — मित्र

(४)

तब ही लग — तब ही तक

जीबा — जीना

दीबो — दान देनेकी शक्ति

धीम — धीमा मद

हर्माह न रुचै — हमका अच्छा
नहीं लगता है

(५)

देखि बडेनको — बड़ी वस्तुओका
देखकर

लघु — छोटी वस्तु

तरवारि — तलवार

(६)

अमरखेलि — एक प्रकारकी बक्षी
पर फलनेवाली बिना जडकी
बेल

मल — जड

प्रतिपालत है ताहि — ईश्वर

उसको भी पालता है

काहि — किसलिए, किसे

(७)

सर — तालाब

ओरे सरन समाहि — हमरे

तालाबमें जाकर समा गए

मीन — मछली

बिन पच्छके — बिना पखाकी

(८)

धूर धरत — धूर धारण करता
है, धूल डालता है।

किहि काज — किस कामके लिए
जिहि रज मुनि पत्ना तरी —

जिस (चरण रज) से अहिल्या
का उद्धार हो गया

गजराज — हाथी

(९)

कैसे निभे — किस तरह निभ
सकता है

वेर करु को सग — वेर और बल
की मित्रता

वे डोलत रम आपने — वह अपने
आनन्दमें झूमता है

(१०)

कमला — लक्ष्मी, धन-सम्पत्ति

धिर — स्थिर

पुष्य पुरातन — (१) विष्णु (२)
बुद्धका आदमी

चचल — चंचल

(११)

रीतें — रानी भला होने पर
अनरीत करत — बुरीत बुरे काम
करता है

भरे — भर जाने पर, तप्त होने पर
 दीठ — दष्टि
 रीनें दीठ — भ्रूयक कारण
 आदमी कुक्क करता है और
 भरापूरा होने पर घमड करने
 लगता है।

(१०)

निज गात — अपना गात्र, अपना
 समुदाय
 बडरी अंखियां निरखि — बडी
 आंखोको देखकर

(१३)

ओछो — छोटा आदमी
 गिरिधर काय — हनुमानको
 वृष्णक्री भाति गिरिधर
 (पहाडको उठानेवाला) कोई
 भी नहीं कहता

(१४)

बडेनका — बडे आदमियोका
 नहिं घटि जाहि — छाटे नहीं होते

(१५)

छवि — शोभा, सुंदरता
 कहीं समाय — कहीं समा सकती है
 सराय — धमशाला
 आप फिरि जाय — राहगीर
 स्वय ही लौट जाता है

(१६)

रिस — गुस्मा
 प्रीतकी पीरि — प्रेमका दरवाजा
 मूकन भाग्न — मुक्कियावा प्रहार
 करने पर (धपयमानेसे)
 दौरि — दौडकर

(१७)

गति — दशा
 दीप — दीपक
 कुल कपूत — कुलके कुपुत्र
 वारे — (१) जगने पर (२)
 बचपनमें
 बडे — (१) बुझ जाने पर (२)
 बडे हो जाने मर

(१८)

जलपक — गडढेका पानी
 पियत अघाय — तृप्त होकर पीते है
 उदधि — समुद्र

(१९)

गुन — (१) रस्सी (२) गुण
 मरिह — जर
 बाढि — बडकर, गहरा

(२०)

निज मनकी व्यया — अपने मनका
 दुख

मनही गाय — मनमें ही छुपा
कर रखो

अठिन्ह — होंगे

(२१)

एँ — कुशल क्षम निश्चिन्तता

पून — हत्मा

मधुपान — शराव पीना

दावे ना दवे — छुपाएसे नही छुपते

(२२)

छिमा — क्षमा

उतपात — उत्पात

हरि — विष्णु

भृगु — एक ऋषि, जो विष्णुको

सोता हुआ देखकर उचित

मत्कार न पाने पर आधित

हुए -ये और जिन्हाने विष्णुके

सीने पर लात मारकर

उन्हें जगाया था।

(२३)

नन डरि — नेत्रोंसे निकलकर

जावा — जिसे

(२४)

मलौने — नमकीन

मधु — मीठे

घटि कौन — कौन घटता है यानी

काई भी किमीसे कम नही है

लौन — नमक

(२५)

वियाधि — व्याधि, सबट, दुःख

सकहु बचाइ — यदि हा सक

तो इससे बच जाआ

वेरी — बेडी

ढोल बजाइ बजाइ — सरे काम

ढोल बजा-बजाकर

(२६)

घाइ — दौडकर

बहि रूपमें — किस रूपमें

(२७)

गाडे दाऊ काम — दोना ही काम

मुश्किल है

जग नही — (सब बोलनेमें)

सामारिक सफलता नहा

मिलती।

१६ केशवदास

अगद रावण-सवाद

प्रतिहार — द्वारपाल, दरवान

विरचि — ब्रह्मा

मोन — चुपचाप

जीव — बहुस्पति

शोर छडि से — शोर मचाना

छोड दे

कुवेर — धनपति

देवताआक

कापाध्यक्ष

बेर बँ कही — कितनी बार कहा
 जच्छ — यक्ष, कुचेरकी निधियाक
 रक्षक
 न जच्छ मडिरे — यक्षाकी
 भीड मन इचट्ठी कर
 दिनेय — सूय
 नारदादि मग ही — नारद
 वगैराके साथ ही
 मद बुद्धि — मूख
 वानी — वाणी / वचन
 चित्त आनी — चित्तमें बडा
 क्रोध आया
 ठेलिबे — धक्का देके
 लोग जनैसे — (अन्+ईग) राक्षस
 लोग
 पठयें सो कौने — किसने भजा है ?
 लकनायक-दूत — लकाक राजा
 (भावी राजा विभीषण) का
 राजदूत
 दही — जला दी
 सहारि अच्छ — अक्षयकुमारको
 मारकर
 न जानियो — नहीं जान पाया
 काय चापि बखानियो — जिसके
 लिए प्रसिद्ध है कि तुम्हें
 बगलमें दबाकर सात समुद्रों
 में स्नान करता था ।

देवलोक — स्वर्ग
 रघुनाथ सिधाइयो — रघुनाथ
 के वाणरूपी विमान पर
 बैठकर चला गया अर्थात्
 रामचन्द्रजीके वाणमें भरनेके
 कारण उसका मोक्ष हो गया
 देव दूखनका दह — देवताओंसे बर
 रखनेवाले राक्षसोंका मारने
 वाला
 दुरबुद्धि — दुबद्धि, मूर्खता
 रिपु जीतहि — दुश्मनको जीतते हैं
 भृगन-शन — परशुराम
 द्विज दीन महा — अत्यन्त दीन
 ब्राह्मण
 छिति छत्र — पृथ्वीकी रक्षा करने
 वाले क्षत्री
 हत्यो — नष्ट किया
 बिन प्राणन कियो — सह-
 छात्रुनको मारा
 वहुँ बिसर्यो ? — वही भूल गया
 क्या ?
 सिधु तर्यो — सागरका तैर गया
 धनुरेख — धनुषकी रेखा जिसे
 लक्ष्मणजीने पणकुटीके द्वार
 पर रामचन्द्रजीकी यात्रामें
 जाते समय गीचा था
 उन वारिध बाट करी —
 उन्होंने समुद्रको बाँधकर उस

परमै लकामें आनेका रास्ता
(पूल) बना दिया।

दमकठ — रावण

तेलट्टू जराइ जरी — तेल और
रईमें हनुमानजीकी पछ तो
जली या नही जली (जरा भी
नही जली) पर रत्नजटित
लका बिल्कुल जल गई।

मीचु — मत्यु

सूर — सूय

छपानाय — चंद्रमा

लीने रहै — लिये रहता है

छत्र — राजाआके सिर पर रहने
वाला सुनहरी छाता

सका मेघमाला — बादल भिस्तीका
काम करते है

सिखी पाककारी — अग्नि रसो-
इयेका काम करती ह

कोतवाली — पुलिस विभागकी
देखरेत

महादडधारी — भैरव

पेट चढघा — पेटमें आया

पलका — पलग

चौक — आगन

चित्तसारि — चित्रसारी विलास
भवन

गज बाजि — हाथी घाडे

गढ गव — गवना गढ

व्योम — आकाश

रहधा चढि चित्त — अब भी तेरा
चित्त चढा हुआ है

त्रास — डर

धानराली — बदराकी सेना

घोरे — घाडे

चेरे — चाकर

ठाऊं — स्थान

कुठाऊं बिलहै — बुरी जगह मारा
जायगा

तात — पिता

बित्त — धन

कहूँ सग रहै — साथ रहगे क्या ?
अर्यात् कोई भी माय नही
रहेगा

कामको राम — ईश्वर, जा आठ
समय काम आता है

निकाम — व्यथ

काम न ऐह — काम नही आयेग
चेति अजौ चित्त अतर — अब भी
मनमें चेत जा

अतक लोक — परलोक

जैह — जायगा

विप्रै — विप्र, ब्राह्मण

अनाथै जो भाज — जो अनाथ
कहलाते ह जो यतीमो पर
दया करते ह

छाड — त्यागे

परद्राह — अपकार

त्तोको — किंचित, थोडासा भी
 सेस — भेष
 तती — यति योगी
 रगिरि — बैलान
 हास — खुशीस
 नरे — बहुतसे
 ष — जादूगर
 गर — इन्द्रजाल
 भट पद — योद्धाकी पदवी
 रेम — इद्र
 ष — रण युद्ध
 ष — शाप
 खि-नारि — ऋषिकी पत्नी —
 अहिल्या
 ज-नाते — तुम ब्राह्मण हो इस
 लिए
 ी — पकड लो
 न-पाँइ — रामके चरण
 ष — तपस्वी
 बजावही — देवता लोग
 नगाडे बजावर जयजयकार
 बनेगे
 ष — क्षिप्र तुरन्त
 व द्वेषी — राक्षसोस बर रखने
 वाले
 ी — मार डालू
 नुसी — बिना मनुष्याकी
 नरी — बिना बदराकी
 ी — मुनि पनी, अहिल्या

पावन — पवित्र
 हर धनु — शिवका धनुष
 छत्र बिहीन — क्षत्रिया (राजाया
 ने) रहित
 छत्र — क्षण
 छिति — पृथ्वी
 तिनके बरकौ — परशुरामके बल्का
 पुज — समूह
 पुरैनि के तरे — कमलक पत्तेक
 ममान तर गए
 जजहू घरकौ रे — अब भी तेरे
 मनमे रावा है
 नराइन ह प — नारायणमें
 ता कहें — तुझे
 वानर राज — मुग्रीव
 मत्तु — पुलिया
 अच्छ रिपु — अक्षयनु मारका
 दुश्मन हनुमान
 र्द्र — महादव
 लाय दिया — जला दिया
 सोधि कँ — जान बचकर
 नल — रामकी सेनाका एक प्रमुख
 वानर
 छीर छोट बहाइया — बिलकुट
 जल्मान कर दिया
 ताहि ताहि समेत — सम (उवा
 का) तुप महित

प्रस्थान — वह वस्तु जो यात्रावे
महान पर घरसे निकलकर
यात्राकी दिगामें रख दी जाती
है।

१७ बिहारी

दोहा

(१)

यह बिहारी सतमईका पहला
दाहा है। इसमें कविने राधाकी
वदना की है।

भव — मसार

बाधा — श्वावट, विघ्न

राधा नागरि माइ — वही चतुर
राधिका

चाई पर — (१) परलाई पडनेसे

(२) शक दिखनेसे (३)

स्थान आनम

हरित द्युति — (१) हरे रगवाला

(२) प्रसन्न (३) जिमकी

द्युति हर ली गई हा तजहीन

(२)

अधर धरत — जोठ पर धरते ही

परत — पडती है

दीठ — दृष्टि

पट — वस्त्र

हरित धाम — हरे बाँमकी

इद्रधनुष रग — इद्रधनुषके जसे

विविध रगावागी

(३)

मिरजाई नाहि — बनाया ही नहा

दखै दखन — नायकक दिखने

पर लज्जावश उसकी आर

देखा नहीं जाता है

अबुलाहि — व्याकुल होती है

(४)

जा चाहत — यदि चाहत हो

चटक — चमक

मित्त — मित्रता

रज राजम — रजोगुणकी धूल

नेह चीकने चित्त — स्नेह (प्रम,

तेल) में चिकनाये हुए चित्त पर

(५)

चिर जीवा जारी — इन दोनाकी

जोडी चिरजीवी हो

जूर — जुड़े

को घटि — कौन कम है?

वपभानुजा — (१) वपभानुकी बटी

(२) वपके सूर्यकी बेटी (३)

वृषभ अनुजा बलकी बहन

वे हलधरक वीर — (१) बलदेवजी

क भाई (२) शोपनागक भाई

(३) हलको धारण करने

वाले बैलके भाई

(६)

बहगाने — व्याकुल होकर किस

कारणसे ?

एकत वसत — इकट्ठे ही गए हैं
अहि — सप

तपोवन — तपस्विनोके रहनेका
वन जहाँ जीवघारी आपसका
वैर छोड़ कर वसते हैं।
दीरघ दाघ निदाघ — प्रचंड ताप
वाली गर्मी

(विशेष) ऐसा प्रसिद्ध है कि
इस दोहेकी पहली पक्ति बिहारीके
आश्रयदाता महाराज जयसिंहने
चित्रकार द्वारा बनाए गए एक
चित्रका देखकर कही थी। दूसरी
पक्ति बिहारीने उसका उत्तरमें
कही।)

(७)

तन्त्रीनाद — वीणाके मधुर स्वर
कवित्त रस — काव्यका आनन्द
रति रग — स्त्री प्रेम

अनबूड़े बूड़े — जा आधे ही डचे
वै बूव गए, नष्ट हो गए
तरे जे बूड़े सब अग — जो पूरे
डूबे वै तर गए उनका
उद्धार हो गया

(८)

चहले परे — फिसल जाय
नै वै — नदी और उम्र
अवगुन — भूल

(९)

मपति सलिल — मपत्ति (धन)
रूपी जल

मन सगज — मन रूपी कमल
पुनि — फिरसे पुन
वर — चाहे
ममूल — जड सहित

(१०)

वहार — वमत ऋतु
अलि — भ्रमर
अपत — बिना पत्तीकी
कँटीली डार — काटावाली डाल

(११)

अटवयो रहै — लगा रहता है,
उलझा रहता है
मूल — जड सूखी टहनी
हुइ ह बहुरि — फिरसे होंगे

(१२)

कर ले — हाथमें लेकर
सराहि कै — प्रशंसा करके
गहि मौन — चप होकर
गधी — इत्र बेचनेवाला
गँवई गाहक कौन — गाँवमें कौन
प्राहक है

(१३)

कनक — (१) मोना (२) धतूरा

कनक कनक तें — मोनेमें धतूरस
 मादवता — नगा
 अधिकाइ — अधिव
 पाय बीराय — पानेस ही पागल हो
 जाना है

(१४)

धिरद — यश बडाई
 कहत कनक — धतूरेको कनक
 कहने ह

(१५)

अनुरागी — प्रेमी
 गति — राति चाल
 श्याम रग — (१) श्रीकृष्णके प्रेम
 में (२) काले रगमें
 उज्ज्वल — (१) निमल (२)
 मफेद

(१६)

दीर्घ साँम — लम्बी भास
 माइ — स्वामीका
 दर्ई दर्ई — हाय दया ! हाय दया !
 दइ कबूल — जो विपनि
 विघाताने दी है उस स्वीकार
 कर

(१७)

पराम — पुपरज, जवानीकी रगत
 मधुर मधु — मीठा मकरद,
 सरसता

कगी ही सा बँधो — कगीके प्रेममें
 ही बँध गया है
 हवाल — दगा
 (विशेष ऐसा कहा जाता है
 कि यह दोहा बिहारीने जयपुरक
 राजा जयसिंहको लक्ष्य करके
 लिखा था।)

(१८)

सर काम — कुछ भी काम
 नहीं बनता
 मन काँच — बच्चे मनवाला
 माँचे राम — ईश्वर तो
 सच्चाईसे प्रसन्न होता है

(१९)

कटि — कमर
 काछनी — छोटी धानी
 यहि बानिक — इन भेषमें
 बिहारीलाल — (१) बदावनमें
 बिहार करनेवाले श्रीकृष्ण
 (२) कविका अपना नाम

(२०)

टेरतु — पुकारता हूँ
 रट — नामका जप
 जगवाइ — जमानेकी हवा

(२१)

गड रचना — किलेकी बनावट
 बहनी — आँखकी पलकके बिनाये
 के बाल

अलक — बेश, बाल

चितवन — दृष्टि

कमान — धनुष

आध बँवाई ही चढ — इनका माल

इनके बाकेपनसे ही बढता है

तहनि — सुंदर स्त्री

तुरगम — घाडा

तान — मगीतके स्वराका उतार

चढाव

(२२)

सबो — (अरबी शबीह), चित्र

गहि गरूर — खूब घमड करके

केते — कितने ही

चतुर चिनेरे — कुशल चित्रकार

कूर — अपमानित

(२३)

को मों — बडे आदमियोको

कौन कह सकता है

लखे — दंगवर

दीने दई — बिधाताने बनाई है

(२४)

को छूटधा — कौन मुकन हुआ है

इहि — इस

कत — कथा

कुरग — हिरन

अकुलात — ध्याकुल होता है

सुरक्षि — सुलभकर

भज्या चहत — भागना चाहता है

(२५)

ज्या हाउंगो — जैसा होना

होगा वैसा ही हो जाऊंगा

चाल — चालचलन, कम्का फल

मो तारिबौ — मेरा उद्धार करना

१८ भूषण

(१)

विक्ट — कठिन

भव — ससार

पथ — राह

सम — परिश्रम

हरन — हरण करनेवाला

करन — कण, कान

विजना — परा

ब्रह्म ध्याइये — ब्रह्मकी तरह मान

कर ध्यान कीजिये

बापनद — कर्म

अलि — भोग

कलित — सुगामित

कपोल — माल

ध्यान ललित — जिनका ध्यान

सुन्दर है

मग्नि — नदी

जहाइये — स्नान कीजिये

तरु — वक्ष

भजन — तोडनेवाल

विघन — विघ्न, आपत्ति

गढ — किला

गजन — नष्ट करनेवाले

द्विरत्माव — हाथीक जैस मुहवाले,

गणेशजी

(२)

कामिनी — स्त्री

वत — स्वामी पति

जामिनि — रात्रि

दामिनि — विजली

पावस — वर्षा ऋतु

सो — से

कीरति — कीर्ति बडाई

सूरत — दशा हालत

सनमान — सम्मान आदर

भूपने — गहना

तरुनी — युवती

नलिनी — कमलिनी

नव — नए

पूपन — पूषण सूय

प्रभा — चमक

जाहिर — प्रसिद्ध

रस — शोभा पाता है

हिंदुवान — हिन्दू समूह

(३)

(इस पदमें भूपणने बडी हा अनुठी कल्पना की है। काव्यमें यगवा एग सफेद माना जाता है। गिवाजीने अत्यधिक यगव कारण मारी वस्तुएँ सफेद हा गई ह। इस सफेदीक कारण जो मुक्तिके पदा हुइ उनका कवि यहाँ वषण करता है)

निज — अपना

हेरत फिरत — डूढता फिरता है

(क्याकि पहले तो एव ऐरावत

हाथी ही सफेद था पर अब

ता सभी हाथी सफेद हो गए

ह)

गज इद्र — गजेद्र ऐरावत हाथी

इद्रका अनुज — इद्रका छोटा

भाई, विष्णु

दुग्ध नदीस — दूधका समुद्र, क्षीर

सागर

सुरसरिता — गगाजी

विधि — ब्रह्मा

रजनीस — चन्द्रमा

करनी — काय

देव कोटियो ततीसको — ततीस

करोड देवताआको

गिरीस — महादेव ---

निज गिरि—अपना पहाड,
हिमालय

गिरिजा—पावती
(४)

ता—तव, तुम्हारे
छिति—पृथ्वी
छाजत—शोभित होता है
तै ही—तेरेसे ही
बिराजत—गोभा पाता है
गजै—गरजते है
(५)

साजि—सजाकर
चतुरग—वह सेना जिसमें रथ,
हाथी, घोडे और पैदल, ये
चारा होते है।

तुरग—घोडा
सरजा—शिवाजीकी पदवी
जग—लडाई
भगत—कहता है
नाद—शोर
बिहद—बृहद, बहुत अधिक
नदी नद रलत ह—शिवा
जीकी सेनाके मस्त हाथियोके
मदसे नदी-नद भर गये ह।

ऐल—झुड
फैल—फैलनेसे
खल भैल—खलभल

खलक—ससार
ठैल पैल—धक्का, रगड
उसलत है—उखड जाता है
तरनि—म्य
थारा—थाल
पाग—धानु विशेष
पारावार—समुद्र
(६)

आफनाब—सूय
साज मजि—आभूषणामे सजाकर
तुरी—घोडा
पैदर कतार—पदलाकी पक्ति
साहू—छत्रपति शिवाजीके पौत्र
छत्रसाल—भूषणके एक आश्रय
दाता राजा

१९ नामदेव

(१)

आजु—आज
नामे—नामदेवने
बीठल—विद्रुल, नामदेवके
आराध्य भव
पांडे—पंडित
गायत्री—गायत्री मंत्र (कमकाड)
लोधा—एक जाति विशेष
लैकरि—लेकर
ठेंगा—लकड़ी

लँकरि तोरी — लकड़ी लेकर
 टाग तोड दी
 लगत — लँगडाते हुए
 धौल बल्द — सफेद बल
 सँती — स
 सरबर होई — आमना सामना
 हाने पर
 जोय — जोर, स्त्री
 तुरुकी — मुसलमान, तुक
 सयाना — चतुर
 देहरा — मंदिर
 मसीद — मस्जिद
 सोई सबिया — उम्मीकी उपासनों की

(२)

प्रसंग ऐसा प्रसिद्ध है कि
 एक बार नामदेवके एक मंदिरमें
 से नीच जातिका समझकर निकाल
 बाहर किया गया। वे मन्दिरके पीछे
 बठकर ईश्वरकी भक्ति करने
 लगे। थोड़ी दरमें मंदिरका द्वार
 धूमकर नामदेवकी आर हा गया।
 हमत खेलत — हँसत खेलते हुए
 देहरा — मंदिर
 भगति करत नामा — भक्ति करते
 हुए नामदेवका
 हीनणी — नीची

छीपा — कपडेकी छपाईका काम
 करनेवाली एक जाति
 लँ — लेकर
 कमली — कम्बल
 चलियो पलटाई — पलट चला,
 मुड गया
 जेम जेम — जैसे जैसे, जिमि जिमि
 उचरे — बाल
 भक्त जनाको — भक्त लोगका
 फेरि दिय नामका — मंदिरकी
 देहरी नामदेवकी तरफ
 फेर दी
 पिछवारला — पीछेका हिस्सा

(३)

तालाबेली — बेचनी
 मीन — मछली
 तल्फ — बेचन रहती, है
 बल्प — व्याकुल हा रहा-है
 बाछा — बछडा
 छूटला — छूट गया हो
 थन चासता घूटला — और
 थनस मक्खनके घूट पी रहा हो
 गुरु भेटत — गुरुस मिलने पर
 अल्ख लखाया — जो न दिखलाई
 पडनेवाला (परमामा) था
 वह भी दिखलाई पडने लगा
 विषयहत — कामवासनाके लिए

रनारी — पर स्त्री
 मे ताप धामा — बिना
 गर्मीकी धूप
 पुरो — बेचारा

२० अखा

(१)

३ सो — भोगरेके फूलके जैसा
 पे — चमके
 न — कसकर, सगीतकी तान
 ग तुरी — घोडा घोडी
 ने धरा — पृथ्वी धूजती है
 ५ — थोडासा
 के — जिसके (परमात्माके)
 पे — क्रोध करने पर
 ७ — कुबेर, धनका देवता
 न — कण, दानियामें प्रमुख
 १ काम नयों — क्या काम
 चल पाया ?
 १ — तेरे बिना
 — इतने
 — हा गए
 पे — गुहस

(२)

१ — फिरकर, लोटकर
 राना — राजा और राणा
 — थोडा

कोई पतरी — किसीने भी
 वहाँसे पत्र लिखकर नहीं भेजा
 रहत पर — पडे रह जाते ह
 मानीनता बरी — वह मायता
 तो देखे साथ ही जुडी हुआ है

(३)

पेरु — पहलू
 आपा न मटू — अपने आपको कष्ट
 न दू
 धापा न थापू — सप्रदायाकी छाप
 न लगवाऊँ
 भिस्त — बहिस्त स्वग
 दोजक — दाजस, नक
 दोड न चाऊँ — दोनोको ही
 नहीं चाहूँ
 डेर — डेरा, स्थान
 है नहिं उसीका — जो 'है'
 और नहीं है के सशयमें
 नहीं पडा है वही उस
 (ग्रह) के स्थानका जान
 सकेगा।

(४)

नेक — थोडा
 ठानत है — करता है-
 कु — को, के लिए
 कद — गूदेदार जड मावा
 विष्ठा — मूले

अतर — मतमें
 मर — तालाब
 मदन करना — ममलना, लपेटना
 छार — मिट्टी
 मतिमदा — मूल

२१ मनोहरदास

मनहर पद

(१)

सकल — सब
 भावी — भविष्य
 करामत — करामात चमत्कार
 गानी — गान
 सकल जग माने साई — जिसे
 मारा ममार माने वही
 विविध — कितनी ही तरहमें
 मिय्या मति ठानी है — व्यथकी
 धारणाएँ बना ली हैं
 लहं अभेद — जीव और ब्रह्म एक
 ह इस सम्बन्धना जा जान जाय
 जग बाटे चारा वद — जैसा कि
 चारा बनाने का है

(२)

जड तन — जड पदार्थ
 भग्माया — भ्रममें पड गया
 बाबा — तल गाम्गादिक निरुवाक
 मनुत्र — मनुष्य, मानव
 दात्र — रागम शनध

गजबाजी — हाथी घोडे
 स्वस्वरूप — स्वयंका स्वरूप
 (परमात्मा)

बुतसाजी — मूर्तिपूजा
 पच कोश — वेदातमें माने गए
 आत्माके पांच आवरण
 शीलदु गगाजीमें — ज्ञानरूपी
 गगामें निमग्न हो जाओ
 पाजी — नीच

२२ दयाराम

बोहा

(१)

चाहूँ — चाहता हूँ
 प्रियगी — जा तान जगहमे मुठा
 हुआ हा। श्रीकृष्णका एक
 विशेष प्रसारका गडे हान
 का डग जिममें गरदन बटि
 और धरणामें सम रहता है।

तानें — दमलिये

मुटिल उर — बाँका हृत्तम
 होहि म्यान — बनि गडगन
 लिए बाँकी ही म्यान चाहिये

(२)

पूष — भूल
 निवात्रि — सनुष्ट कर
 नित्र बरि — अनाकर
 गंतान — दुग

(३)

आनप — धूप, गर्मी
सकुचें — मुरझाना
लखि — देखकर
सुनावर — चंद्रमा
प्रेमकी चोज — प्रेमका चमत्कार

(४)

तीर — (१) बाण (२) समीपता
जिन ढेह — मत दा
कमान — (१) धनुष (२) अपमान

(५)

अरविन्द — कमल
जिन तजे — जिसके बिना काम
न चले उसे कैसे छोड़े
एक अनुराग — एकागी प्रेम, एक
तरफा प्यार

(विशेष इन समयों एकागी
प्रेम है, जैसे चकोरको चंद्रसे प्रेम
है पर चंद्रको चकोरसे नहीं है।
पर प्रेमीस प्रेमपात्रके बिना रहा ही
नहीं जाता इसलिए लाचारी है।)

(६)

भूप — राजा
मूढ — मूख, अज्ञानी
ध्यातुर — चतुर

(७)

कछुक बीच बिय बीच — दानोके
बीच कुछ फक है
असु लेत सद — फौरन् प्राण हर
लते हैं
मीच — मृत्यु

(८)

दारिद — दरिद्रता गरीबी
कल्पद्रुम — कल्पवृक्ष
हनना — नाश करना
दाम अविनाम — अविनाशी
श्रीकृष्णके भक्त

(९)

दारा — स्त्री
निंदा — बुराई
सपदा — धन दौलत
परजन प्यार — दूसरोकी इन
चीजासे प्यार मत करो
भाट कटार — भाटकी प्यारी
तलवार जो उसका ही प्राण
हर लेती है

(११)

सुयाधन — दुर्योधन
(विशेष महाभारतकी
एक कथाके अनुसार युधिष्ठिर
और दुर्योधन दोना हस्तिनापुरका
निरीक्षण करने निकले। युधिष्ठिर

को कोई बुरा नहीं मिला और
दुर्योधनको कोई भला नहीं
दिखलाई पडा।)

(१२)

पुष्ट — भरा पूरा

सुभाय — स्वभाव

जाक — जब मरार, एक पीघा

जा गरमीमें हरा रहता है

जवास — जवासा, एक कंटीली

झाडी जा गरमीमें हरी रहनी

है

(१३)

सो बड — वही बडा है

मग — माग

कुटिल गति — टेढ़ी चाल

मतिमद — नीच, मूख

सूतर — शुशुर ऊँट

गयद — हाथी

(१४)

जनक — पिता

जननिगत — माताकी मृत्युके बाद

परित्सा — परीक्षा

सुनु — सुन पुत्र

अगव्य पितु मात — माता पिताके

शक्तिहीन हो जाने पर

वाटा बाँटत — सपत्तिका विभाजन

करत समय

(१५)

तुष्ट — मनुष्ट, प्रसन्न

रष्ट — नाराज, अप्रसन्न

गिघ — जटायु

गुनिका — गणिका, वेश्या

भतल — पथ्वी, मृत्युलोक

(१६)

वह पाय — वेदोना (अलग रह

कर और साथ रहकर) दोनों

ही तरह दुःख पाते ह क्यकि

प्रीति टट नहीं सकती और

स्वभाव बदल नहीं सकता।

गडेरी — गनेका छोटा टुकडा

चवी — चवा डी गई

राटी खाय — राटी और

गडेरी यन् एक साथ चवा

ली जाय तो बडी मुश्किल

हो जाती है क्यकि गडेरीकी

चूसकर सूकना पडता है और

रोटीका निगलना पडता है।

२३ कविता-कुज

(१)

बठा — क्या

सीकरी — फतहपुर सीकरी

पहैया — जूतिया

बिमरि गयो — मूल गया

करिये परी — करनी पडी
बेकाम — व्यय

(२)

दुरमति — कुबुद्धि, पागलपन

छाँडि — छोडकर

मोट — षोट

बिकार — कुविचार

सिरभार — माथेका बाल

बनजी — व्यापार

हथ्यार — हथियार शस्त्र

अध धुधमें — बिना सोचे समझे

करतार — ईश्वर

नरक जानि कै — नकमें जानेके

लघार — ध्ययकी बकवास करने

वाला, वाचाल

पामी — फासी

मायाजार — मायाजाल

सौं ह — सौगंध है कमम ह

बिनस करि जहै — बरवाद हो

जायगी

छिनकमे — क्षणभरमें

छार — मिट्टी, रास

(३)

दिलजानी — प्रिय

इस्म — नाम

ठानी — स्वीकार की

निमाज — उपासनाका एक ढग

कलमा — मुसलमान धमका मूल
मंत्र

गुनन गहूँगी — गुणाका अपनाऊँगी

स्यामला सलीना — साँवरे रंग

वाला सुंदर कृष्ण

मिरताज — मिरमौर

बुल्ले — बलगी

दाग — आग

निदाग — निदाघ, गरमी

दहूँगी — जलूगी

ताणी — तेरी

गग

(१)

जात — ज्याति, प्रकाश

सूर — सूय

बादर — बादल

रक्ष — रण

दाता — दानी —

मागन आये — भौंगताके आने पर

पीठ दिखाये — उपेक्षा करनेसे

बम — तक्दीर

भभूत लगामे — भस्म लगानेमे

(२)

कहेते — कहनेसे

असारसी — व्यय

भक्का — मुसलमानाका तीथस्थान

मीर — मुसलमानानि धमगुरु
 बनारसी — बनारस
 सवाद — आनन्द
 हिजडा — नपुंसक
 भंगार — आग
 मूठ — मूत
 आरसी — दण

(३)

प्रीतको पथ — प्रेमका माग
 वासो — मुकाम
 नारिको नेह — स्त्रीका प्रेम
 मूरपसा हागो — मूलसे हँसी
 सूमकी मेव — कजूसकी सेवा
 भगनी पर भाई — बहिनके सहारे
 जीनेवाला भाई

बुलच्छन नारि — कुलक्षणा स्त्री
 जमाई — जामाता जवाई
 पेट पपाल — पेटके ऊपर हाथ
 फेरना

बीरबल

(१)

पूत कपूत — खराब पुत्र
 कुलच्छनि नारि — खराब लक्षणो
 वाली स्त्री
 लराक परास — झगडालू पडोसी
 लजायन — लजानेवाला
 सारो — साला, पत्नीका भाई
 बघु कुबुद्धि — मूल भाई

पुराहित लपट — ध्यभिचारी पुनारी
 चाकर चार — चोर सेवक
 अनीय घुतारा — घून (छगी)
 अतिथि

माहन सूम — कजूम मालिक
 अराक तुरग — अरबका घोडा,
 अडनेवाला घोडा

विमान कठोर — अविनयी किसान
 दिवान नवारो — हरएक बातमें
 विरोध करनेवाला मंत्री
 'ब्रह्म' — वीरबलका उपनाम
 गाह — बालशाह
 समुद्रमें डारा — समुद्रमें डाल देना
 चाहिये, नष्ट कर देना चाहिये

(२)

पौडवे — शेटकर
 महीपर — पृथ्वापर
 बाल — बालक
 तरुनाई — जवानी
 छीर पौडनहार — भगवान्
 विष्णु जो क्षीरसागरमें पीडते हैं
 कवी — कभी भी
 चित्तमें नहि ध्याये — मनसे स्मरण
 नही किया

टोडरमल

(१)

जार — उपपति पराई स्त्रीसे प्रेम
 करनेवाला

विचार — समझ

गनिवा — वेश्या

निगुनी — मूख

अरडनकी डारसी — अरडकी

डालवे ममान, जिमवी छाया

ही नहीं होनी

मदपी — शराबी

मुचि — पवित्रता

लपट — व्यभिचारी

भाव कही फारसी — चाहे

बोलचालकी भाषामें सीधी

तरह समझाओ चाहे फारसी

में समझाओ

(२)

मर — तालाब

रमरीत — प्रेमकी रीति

तर — वृक्ष

जत्र — वाद्ययंत्र, बाजा

स्याना — मंत्रसे उपचार करनेवाला

बोहे

(१)

जडमति — मख

मुजान — पडित

मिल पर — पत्थर पर

(२)

अप्रब — अपूव, अनाखी

(३)

ओछा नर — निम्न कोटिका आदमी

पात्र — बरतन

(४)

पाथर — पत्थर

उछरि — उछलकर

(५)

हियकौ — हृदयका

हेत — प्रेम

अहेन — बैर

निमल — साफ

आरसी — दण

(६)

जौ लौ — जब तक

जानि परतु है — पहचाने जाने है

काक पिक — बीजा और कोयल

गिरघर

हँसाय — हँसी, बदनामी

चित्त — मन

खानपान — खानापीना

समान — आदर

गगरग — मनोरंजन

न भाव — अच्छे नहीं लगते हैं

टरत न टारे — हटाने पर भी

नहीं हटता है

खटवत है — चुभती है

मीर — मुसलमानवि धमगुरु
 धारमी — बनारस
 मवाद — आनन्द
 हिजडा — नपुंस
 अंगार — भाग
 मूढ — मूग
 आरमी — दपन

(३)

प्रीतकी पथ — प्रेमवा माग
 वागो — मुकाम
 नारिको नेह — स्त्रीका प्रेम
 मूरखसा हामो — भूखसे हँसी
 सूमकी सेव — कजूमकी सेवा
 भगनी पर भाई — बहिनके महारे
 जीनेवाला भाई

कुलच्छन नारि — कुलभणा स्त्री
 जमाई — जामाता, जवाई
 पेट पपाल — पेटके ऊपर हाथ
 फेरना

धीरबल

(१)

पूत वपूत — खराब पुत्र
 कुलच्छनि नारि — खराब लक्षणा
 वाली स्त्री
 लराक परोस — झगडालू पडोसी
 लजायन — लजानेवाला
 सारा — साला पत्नीका भाई
 बघु कुबुद्धि — मूख भाई

पुराहित लपट — ध्यभ्रिचारी पुजारा
 चारर चार — चार सबक
 अनीय घुतारा — पूत (छत्ती)
 अतिथि

माह्व मूम — कजूम मालि
 अरान तुरग — अरबका घाडा,
 अडनेवाला घोडा

विमान बठोर — अविनया विमान
 दिवान नकारा — हरएक बातमें
 विरोध करनेवाला मंत्री
 'ब्रह्म' — बीरबलका उपनाम
 शाह — बादशाह
 समुद्रमें डारा — समुद्रमें डाल देना
 चाहिये, नष्ट कर देना चाहिये

(२)

पौडके — लेटकर
 महीपर — पृथ्वीपर
 बाल — बालक
 तरुनाई — जवानी
 छोर पौडनहार — भगवान्
 विष्णु जो क्षीरसागरमें पौडने ह
 कर्वाँ — कभी भी
 चित्तें नहि ध्याये — मनसे स्मरण
 नही किया

टोडरमल

(१)

जार — उपपति पराई स्त्रीसे प्रेम
 करनेवाला

बिचार — समझ

गनिवा — बेश्या

निगुनी — मूख

अरडनकी डारसा — अरडकी

डालक ममान, जिमकी छामा

ही नही होनी

मदपी — शराबी

मुचि — पवित्रता

लपट — व्यभिचारी

भाई बही फारसी — चाहे

बोलचालकी भाषामें सीधी

तरह समझाओ, चाहे फारसी

में समझाओ

(२)

गर — तालाब

रसरीठ — प्रेमकी रीति

तर — वृक्ष

जत्र — वाद्ययंत्र, बाजा

म्याना — मंत्रसे उपचार करनेवाला

बोहे

(१)

जडमति — मख

मुजान — पंडित

मिल पर — पत्थर पर

(२)

अपूरब — अपूर्व अनाखी

(३)

ओछा नर — निम्न कोटिका आदमी

पात्र — बरतन

(४)

पायर — पत्थर

उछरि — उछलकर

(५)

हियवी — हृदयवा

हेत — प्रेम

अहेत — वैर

निमल — साफ

आरसी — दपण

(६)

जौ लौ — जब तक

जानि परतु है — पहचाने जाने है

काक पिक — कौआ और कोयल

गिरघर

हेमाय — हैसी बदनामी

चित्त — मन

खानपान — खानापीना

समान — आदर

गगरग — मनोरजन

न भाव — अच्छे नहीं लगते हैं

टरत न टारे — हटाने पर भी

नही हटता है

खटकत है — चुमती है

बताल

मसि — चंद्रमा
 हिरदै — हृदय
 पत्र बिन — पत्तोंके बिना
 तरुवर — वृक्ष
 गज दंत — एक दांतसे हाथी
 सूना लगता है
 उल्लित — कला
 सायर — चतुर व्यक्ति
 विप्र — ब्राह्मण
 बिहून — बिना रहित
 घटा — बादल
 दामिनी — बिजली
 कामिनी — सुन्दर स्त्री
 पद्माकर
 जभराज — मृगुका देवता
 भाख्यो — घोला
 चित्रगुप्त — मनुष्यके कर्मोंका लेखा-
 जोखा लेनेवाला

हुकुममें कान द — मेरी आज्ञा
 सुन
 मूद करि — बंद कर दे
 तजि यह ध्यान दै — इस म्यानक
 छोड़ दे
 देवनरी — गंगा
 कीन्है सब देव — सबका देवत
 बना दिया है
 दतन बुलाइकै — कमचारियोंक
 बलाकर
 बिदा के पान दै — नौकरीसे
 बिदा करनेका परवाना दे दे
 फरद — सूची
 रोजनामा — व्यक्तियोंक कर्मोंकी
 दिनचर्या
 गाता दै — खातेका नष्ट हा
 जाने दे
 बही दै — बहीको बह जाने दे

